सिद्ध शाबर

मंत्र माला

लेखक :
योगीराज अवतार सिंह अटवाल (तांत्रिक)

मूल्यः 60/-

प्रकाशक
0181-2212696

महामाया पब्लिकेशन्स
नजदीक चौंक अड्डा टांडा, जालन्धर - 8

सिद्ध शाबर मंत्र माला

चेतावनी – इस पुस्तक का उद्देश्य केवल प्रस्तुत विषय से संबधित जानकारी प्रदान करना है। पुस्तक को पढ़कर यदि कोई व्यक्ति किसी टोने-टोटके, गण्डे, तावीज अथवा नक्श आदि का प्रयोग करता है और उससे उसे कोई लाभ नहीं होता या फिर किसी वजह से नुकसान होता है, तो उसकी जिम्मेदारी प्रकाशक, लेखक या मुद्रक की कतई नहीं होगी क्योंकि हमारा उद्देश्य केवल विषय से परिचित कराना है। किसी गंभीर रोग अथवा उसके निदान की दशा में अपने योग्य विशेषज्ञ से अवश्य परामर्श लें।

लेखक :
योगीराज अवतार सिंह अटवाल (तांत्रिक)
(कार्यालय तन्त्रमणि)
मु.पो. - मननहाना, नज़दीक - कोट फतूही,
ज़िला होशियारपुर - 144519
फोन : 01884-250030, 251730,
09463014704, 09356297560

प्रिंटिंग : महामाया प्रिंटर्स
जालन्धर शहर।

समर्पण

परम शिष्य बैकुण्ठवासी श्री श्री योगीराज यशपाल जी

ज्योतिष बृहस्पति, ज्योतिषालंकार, ज्योतिष सम्राट, तंत्राचार्य,
गोलडमैडलिस्ट तथा रजत पदक आदि उपाधियों से अलंकृत

संस्थापक - तन्त्रमणि प्राच्य विद्या साधन एवं अनुसंधान केन्द्र

विषय सूची

शान्ति एवं रोग नाशक मंत्र

विद्वेषण हेतु मंत्र

वशीकरण हेतु मंत्र

उच्चाटन हेतु मंत्र

स्तम्भन हेतु मंत्र

मारण हेतु मंत्र

सिद्ध सामग्री मंत्र

कुछ पल योगीराज अटवाल के संग

देहाती इलाकों में वहाँ की आम बोली भाषा में पाये जाने वाले मंत्र **शाबर मंत्र** कहलाते हैं। जिन की उत्पत्ति हमारे सिद्ध साधकों, संत महापुरुषों ने जन कल्याण के लिए समय के हिसाब से की थी। सिद्ध शाबर मंत्रों का प्रयोग अत्यंत सफल होने के साथ सरल भाषा तथा शीघ्र प्रभावी होता हैं, यह मंत्र भारत की प्रत्येक भाषा में पाए जाते हैं, जो तंत्र की समस्त क्रियाओं को शीघ्र सफल करने में सक्षम हैं।

वर्तमान समय में संस्कृत भाषा का अलप ज्ञान एवं वैदिक मंत्रों के पूर्ण **विधि विधान** ना कर पाने के कारण संसारिक इच्छा की पूर्ति के लिए साधकों द्वारा अथाह शाबर मंत्रों का सहारा, लिया जा रहा हैं।

शाबर मंत्र विद्या अत्यंत गहन एवं गूढ़ रहस्यों से भरपूर विद्या है, जो आज भी भारत के अनेक प्रांतों में पीढ़ी दर पीढ़ी देखने को मिल सकती है। देहाती काव्य के रूप में दिखने वाले इन शाबर मंत्रों की शक्ति का अंदाजा साधक स्वयं साधना कर सहज लगा सकते हैं। प्राचीन समय से आज तक शाबर मंत्रों से सम्बन्धित दो-तीन दर्जन के करीब प्रकाशित ग्रंथ जिनमें **काली विलास तंत्र, काली शाबर तंत्र, योगिनी शाबर, सिद्ध शाबर, श्री नाथ शाबर, काल शाबर, भैरव शाबर, कालिका शाबर, सिद्ध शाबर चिंतामणि, सिद्ध शाबर ग्रंथ, वीर शाबर, शाबर मंत्र चिंतामणि, शाबर तंत्र, दिव्य शाबर, कुमारी शाबर, शाबर मंत्र सर्वस्व, दत्त शाबर, शाबर सकल साधन, शाबर कल्पवल्ली, तारिणी शाबर, उड्डीश शाबर, आकाश भैरव तंत्र** तथा अनेकों साधकों के पास पड़ी पाण्डुलिपियाँ एवं कई अप्रकाशित ग्रन्थ होने की जानकारी प्राप्त होती है।

आज तक ग्रामीण इलाकों में यह शाबर मंत्र ग्रामीणों को कण्ठस्थ होने की वजह से यह विद्या प्रकाशित होने की बजाय पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ी है। प्राचीन समय से अब तक, इन मंत्रों का प्रकाशन न होने का मुख्य कारण यही रहा है। इस विद्या को कुछ अनपढ़ साधक, जिन्होंने इस विद्या को आगे बढ़ाने की कोशिश की, पर उन्हें भाषा का ज्ञान ना होने की वजह से वह सिर्फ आधे-अधूरे विधान वाली पुस्तकें ही बाजार को दे पाये। परन्तु आज कम्प्यूटर युग में जहाँ पुस्तकें एक दिन में प्रकाशित हो जाती हैं। वहीं बाजार में अब भी शाबर मंत्रों की कुछ अधूरी पुस्तकें मिलना, यह बड़े दुख की बात हैं। मंत्र मर्मज्ञों को इस विषय पर काफी शोध करने की आवश्यकता है।

मैंने पिछले कुछ सालों से अध्ययन एवं खोज कर शाबर तंत्र विद्या के अलोप (लुप्त) हो रहे ग्रन्थों को पुर्न-प्रकाशन करने का जो बीड़ा उठाया है, इसी तहत मेरी **सिद्ध शाबर मंत्र** पुस्तक का मराठी संस्करण भी प्रकाशित हो चुका है, जिस को पाठको **साधकों** ने बेहद सराहा है। अब मैं इसी कड़ी के तहत अपनी तीसरी

पुस्तक **सिद्ध शाबर मंत्र माला** आप को भेंट कर रहा हूँ। इस के बाद मेरी शाबर मंत्रों पर वृहद तीन ग्रन्थाकार पुस्तकें जो लिखी जा चुकी हैं। जिनमें **महाकाली सिद्ध शाबर मंत्र, हनुमान सिद्ध शाबर मंत्र, भैरव सिद्ध शाबर मंत्र** नामक अगामी ग्रन्थ प्रकाशित होंगे। इस के अलावा **शाबर तंत्र, शाबर यंत्रों** पर अप्रकाशित दुर्लभ सामग्री आदिभवानी माँ जगदम्बा की कृपा से प्रकाशित करने की योजना बन रही है।

आज तनाव पूर्ण माहौल में इन्सान साधना करने में उतना सफल नहीं हो पा रहा है, क्योंकि विद्या अभाव के साथ ही गुरु की छत्र-छाया का न मिल पाना साधक के मनचाहे मुकाम तक न पहुँचने का मुख्य कारण है।

साधक तंत्र विद्या को गुरु की छत्र-छाया में रह कर सीखें तभी उन्हें मनचाही सफलता मिल पाएगी, जिस तरह मकान बनाने के पहले उसका नक्शा बनाकर योग्य मिस्त्री (इन्जीनियर) नींव की खुदाई करवा कर विशाल इमारत की संरचना करता है। ठीक उसी तरह योग्य **गुरु** साधक के मन में उपजी धारणाओं को साकार करने में उसकी पूर्ण सहायता करता है।

आप सभी पाठकों और तंत्र प्रेमियों के अनेकों पत्र आए दिन प्राप्त होते रहते हैं। मैं आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन करता हुआ यह निवेदन करता हूँ। प्राय साधक-पाठक हमारे पास बिना समय निश्चित किये मिलने चले आते हैं। जिससे उन्हें तथा मुझे भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है। आप सभी से निवेदन है, कि यदि आप अपने पत्र का जवाब शीघ्र चाहते हैं तो रजिस्टर्ड पत्र से अपना पता लिखा जवाबी लिफाफा समुचित डाक टिकट लगाकर भेजें। अपना पता साफ-साफ हिन्दी तथा अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में लिखें।

यदि आप को सिद्ध तांत्रिक सामग्री प्राप्त करने में कोई कठिनाई आ रही हो या आपकी कोई भी जटिल समस्या हो उसका समाधान चाहते हैं, तो प्रत्येक सायं 6 बजे से रात्रि 9 बजे तक फोन नं. 01884-250030, 09463014704, 09356297560 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

हमारा लक्ष्य आपकी संतुष्टि एवं सफलता हैं। आप मेरी इन पुस्तकों के बारे में अपने विचार लिखें आपके विचारों को ध्यान में रखकर आने वाली पुस्तकें प्रकाशित की जायेंगी। आप इस विद्या को गुरु के चरणों में रहकर सीखें और अपनी मंजिल प्राप्त करें। इसी आशा के साथ।

आपका अपना

यो. अवतार सिंह अटवाल (तांत्रिक)

कार्यालय तन्त्रमणि, मु.पो. मननहाना, नजदीक कोट फतूही

जिला होशियारपुर (पंजाब) 144519

सम्पर्क - 01884-250030, 251730, 09463014704, 09356297560

E-mail : asatwal@rediffmail.com, asatwal@sancharnet.in

पा लेना इतना सहज नहीं है ?

साधना पथ पर लक्ष्य की प्राप्ति हेतु साधक को कई कठिन परिक्षाओं से गुजरना पड़ता है। लक्ष्य की ओर अग्रसर साधक सर्वप्रथम श्रद्धा पूर्वक गुरु आदेशानुसार तन्त्र विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए सत्य मार्ग पर चले तभी सफलता सम्भव है।

गुरु अपने शिष्य (साधक) को साधना के लक्ष्य तक पहुँचाने में एक ऐसे सेतु का कार्य करता है, जो प्रत्यक्ष रूप से दिखाई तो नहीं पड़ता परन्तु उस के अप्रत्यक्ष प्रभाव से साधक अपने लक्ष्य तक पहुँच जाता है।

तंत्र शास्त्र में संस्कार, रीति-रिवाज एवं गुरु महत्व को समझनें के लिए चंद पंक्तियाँ दी जा रही हैं।

जैसे विवाह मंडप में कन्या का पिता भरे परिवारिक माहौल में अपनी युवा पुत्री का विवाह का संस्कार एक पराये युवक के साथ करता है, यानी एक संस्कार (अपनी पुत्री के दुशाला को पराये युवक के दुशाला के साथ गाठ बांध कर विवाह करने की इजाजत देता है) कर उसे सम्पूर्ण जीवन के लिए सौंप देता है, साथ ही मंगलमय जीवन की कामना सपरिवार, समाज सहित करते हुए उसे खुशी-खुशी विदा करता है। परन्तु इस के विपरीत संस्कार के बिना जब कोई युवक उस कन्या को हाथ लगाता है, तब वही पिता एवं समाज के लोग उस युवक की जान के पीछे पड़ जाते हैं।

क्यों ?

यहाँ अब आप इस संस्कार के महत्त्व को समझ गए होंगे। ठीक इसी तरह तन्त्र विद्या में भी इस तन्त्र रूपी शक्ति को प्राप्त करने के लिए संस्कार (गुरु दीक्षा) अत्यन्त आवश्यक है। जो व्यक्ति बिना संस्कारित हुए इस तन्त्र मार्ग पर चलने की कोशिश करते हैं। उनका हाल उक्त युवक की तरह होता है। जो समाज के विपरीत कार्य कर अपनी जान जोखिम में डालता है। आप इस विद्या को गुरु की छत्र-छाया में पूर्ण विधि-विधान से प्राप्त कर अपनी मंजिल की उचाई को प्राप्त करें।

गुरु आज्ञा की अवहेलना करने वाला व्यक्ति उस लालची शिष्य की तरह कष्ट झेलता है, जिस ने गुरु की छत्र-छाया में रहकर अपनी इच्छा की पूर्ति तो की, परन्तु गुरु का आदेश न मान कर अपना जीवन व्यर्थ गँवा दिया।

प्राचीन समय में एक गुरु ने शिष्य की सेवा से खुश होकर उसकी धन की अभिलाषा के अनुरूप उसे चार मोमबत्तियाँ दी तथा साथ में आदेश दिया कि इन में से तीन मोमबत्तियों का ही उपयोग करना। तीन अलग-अलग दिशाओं में एक-

एक मोमबत्ती जला कर जाना जहाँ पर मोमबत्ती बुझ जाये उसी स्थान पर गड्ढा खोदना, वहाँ जो प्राप्त हो उससे अपना सुखमय जीवन व्यतीत करना।

पर कभी भी चौथी मोमबत्ती का उपयोग ना करना। कुछ दिन बाद वह गुरु के आदेशानुसार एक रात को एक-एक मोमबत्ती जलाकर तीन दिशाओं में गया उसे क्रमश चाँदी, सोना, हीरे-जवाहरात आदि के भण्डार दिखे उस ने उन स्थानों पर निशान लगाकर अधिक प्राप्ति के लालच में, गुरु आज्ञा की अवहेलना करते हुए वह चौथी मोमबत्ती जला कर चौथी दिशा की ओर चल पड़ा। मोमबत्ती बुझने पर जब उसने गड्ढा खोदा तो उसे नीचे एक दरवाजा दिखाई दिया, वह उस दरवाजे को खोलकर अन्दर चला गया उसने देखा कि विशाल महल में स्वर्ग की तरह सारी सुख-सुविधा होने के बावजूद भी वहाँ कोई नहीं है। कुछ आगे बढ़ने पर उसने देखा कि महल के कोने में एक बूढ़ा व्यक्ति चक्की चला रहा है, उस बूढ़े व्यक्ति ने उसे देखते हुए प्रसन्नता से अपने पास बुलाया और कहा। बेटा, थोड़ी देर आप यह चक्की चलायें मैं पानी पीकर आता हूँ, जैसे ही उसने चक्की पकड़ा। वह बूढ़ा जोर-जोर से खिलखिलाते हुए उससे बोला - जब कभी इस महल में आप से बड़ा लालची व्यक्ति, गुरु-आज्ञा की अवहेलना करके आएगा तभी आप यहाँ से मुक्त हो पायेंगे। अगर आपने इस चक्की को चलाना बंद कर दिया तो यह छत आपके उपर गिर जाएगी! इतना कहकर बूढ़ा हंसते हुए बाहर निकल गया। वह व्यक्ति गुरु आज्ञा की अवहेलना का फल प्राप्त कर अपना सिर पीटने लगा।

-यो. अवतार सिंह अटवाल

कुछ विचार आपके साथ

आज लम्बे अर्से के बाद मैं पाठकों व साधकों के समक्ष अपने विचार व्यक्त कर रहा हूँ। मेरी सदा ही हार्दिक इच्छा रही है कि मैं तंत्र विद्या के गहन अध्ययन के पश्चात् अपनी अनुभूतियाँ एवं इस विद्या के गूढ़ रहस्यों को साधकों के समक्ष रखूँ।

आज के इस भौतिकवादी युग में मनुष्य की इच्छा संसार में दिखने वाली तमाम सुख-सुविधाओं को प्राप्त कर लेने की है। प्राचीन समय से लेकर आज तक मानव के मन में एक चाह रही है कि वह दूसरे मनुष्यों पर राज करे। इस धारणा को मुख्य रख कर आदि मानव ने तंत्र के रहस्यों की खोज में अपना जीवन लगा दिया।

संसारिक प्राणी तंत्र की ओर कब रुख करता है ?

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, इसी प्रकार मानव के जीवन में भी बदलाव आना स्वाभाविक है। जीवन में जब प्रकृति के बदलाव की तरह मनुष्य के पूर्व जन्म के मंदे कर्मों की वजह से उसका बना-बनाया, ताना-बाना (संसारिक सुख, भोग विलासिता पूर्ण जीवन) का विनाश होना शुरु हो जाता है।

जब धनवान धनहीन हो जाता है।

जब मनुष्य मुकदमें के जाल में फँस जाता है।

जब पत्नी चरित्रहीन हो जाय।

जब संतान कुसंगति में पड़ जाय।

जब शत्रु पक्ष हावी हो जाय।

जब शरीर को व्याधियाँ घेर लें।

जब इन्सान अर्श से फर्श पर आ जाय।

तब व्यक्ति, तंत्र के मार्ग का सहारा ढूढ़ने लगता है। दूसरी ओर मनुष्य के पूर्व जन्मों के मंदे कर्म, ग्रहों के कारण जब अथाह मेहनत करने पर योग्य फल नहीं मिलता तब इंसान तंत्र विद्या से सब कुछ पा लेने की चाह में इस विद्या का सहारा चाहता है। व्यापार-क्षति, विद्या-हानि, धन-हानि, जन-हानि, संतान-क्षति, कार्य में असफलता, प्रियजनों से विछोह, प्रेमिका की बेवफाई, शत्रु द्वारा क्षति आदि अनेक समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु इस विद्या का सहारा लेने के लिए तांत्रिकों के पीछे भागता है।

आज संसार में जितने भी सफल व्यक्ति हुए हैं वह अपने मुकाम पर पहुंचकर सफल एवं संतुष्ट हैं, तो उनकी सफलता में इस तंत्र विद्या का प्रभाव देखने को मिलता है।

दृष्टांत :- राजनीति में सफलता प्राप्ति हेतु नेता लोग अनगिनत अनुष्ठान, तांत्रिक प्रयोगों का सहारा लेकर अपना मुकाम हासिल करते हैं।

इसी तरह सफल प्रतिष्ठित व्यवसायी भी अपने व्यवसाय को शिखर पर बनाये रखने हेतु इस विद्या का सदुपयोग परदे के पीछे निरंतर करता रहता है।

तंत्र साधना में साधक, सफल क्यों नहीं होता ?

जब आम व्यक्ति पर मुसीबत का पहाड़ टूटता है, तो वह चन्द लम्हों में उससे छुटकारा पाने की आशा लिए, तंत्र मार्ग की अनजान डगर पर डगमगाता हुआ चल पड़ता है। पर इस मार्ग के नियम व रहस्यों से अनजान वह साधक, जब असफल हो जाता है, तब इस विद्या को झूठा कहता है, तो इस में दोष किसका ?

तंत्र साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए साधक को **गुरु ज्ञान** एवं तंत्र मार्ग के **नियम, विधि-विधान** का पूर्ण ज्ञान होना अति आवश्यक है।

जैसे कोई व्यक्ति रात्रि में अपनी गाड़ी से, अनजान राह पर सफर कर रहा हो और अचानक उसकी गाड़ी में खराबी आ जाये, और उसे तकनीकी जानकारी ना हो तो उसे रात्रि मार्ग पर ही काटनी पड़ेगी। सुबह किसी जानकार (मिस्त्री) से गाड़ी ठीक करवाकर अपनी मंजिल तक वह पहुँच पायेगा।

ठीक उसी तरह तंत्र के रहस्यमय अनुभूतियों को हासिल करने के लिए किसी जानकार गुरु की आवश्यकता पड़ती है।

क्या, पुस्तकें साधक को साधना में सफलता दिला सकती हैं ?

बाज़ार में उपलब्ध पुस्तकों के आधे से ज्यादा लेखक खुद प्रकाशक महोदय ही हैं। जो धन कमाने के लाचार में इधर-उधर की अधूरी पुस्तकों का ज्ञान प्रकाशित कर साधकों को भ्रमित कर रहे हैं। इतना ही नहीं कुछ तथा - कथित लेखक जिन्हें तंत्र विद्या का क, ख, ग, नहीं मालूम वह अपना नाम व दुकानदारी चमकाने के लिए आधे-अधूरे ज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित करवा कर कमाई कर रहे हैं।

ऐसे में आप स्वयं विचार करें कि क्या, ऐसे लेखकों की लिखी पुस्तकों से प्राप्त **तंत्र ज्ञान** से साधक सफल हो सकता है ?

अतः तंत्र साधना के लिए गुरु की शरण में जाना आवश्यक है।

तंत्र साधना में वर्णित उपाय, कैसे कार्य-सिद्ध करते हैं ?

तंत्र साधना सम्पूर्ण आत्मिक विद्या है। जब हम किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए साधना करते हैं, तो इस से हमारी आत्मिक शक्ति (विल पावर) की वृद्धि होती है। हम साधना पथ में जितनी गहराई तक जाते हैं, हमारी आत्मिक शक्ति (विल पावर) उतनी ही बढ़ती है। बढ़ती हुई इस शक्ति के प्रभाव से हमारे वांछित कार्य धीरे-धीरे सम्पन्न होने लगते हैं।

दृष्टांत :- जिस तरह दरिया को पार करने के लिए नाव की आवश्यकता पड़ती है, उसी प्रकार हमें अपनी आत्मिक शक्ति की बढ़ोत्तरी के लिए साधना करनी पड़ती है।

जैसे - अंधकार को दूर करने के लिए दीपक की जरूरत है, उसी तरह संसार के डगमगाते भव-सागर को पार करने के लिए तंत्र साधना की आवश्यकता होती है।

साधना स्थल कैसा हो ?

तंत्र जब अपने पूरे यौवन पर था उस समय धरती के ऊपर कुदरत का दिया हुआ स्वर्गमयी वातावरण था जिस में अनेकों फल, फूलदार वृक्ष, कल-कल करती नदियाँ, सुहावने पहाड़, घने जंगल एवं अनेकों रमणीक स्थल थे। उस समय के चन्द साधकों ने इस विद्या को जन कल्याण के लिए प्रफुल्लित कर अनेकों कठिन साधनाओं को उजागर कर इस विद्या का ओजस बढ़ाया। पर आज संसार में मानव ने अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए कुदरत की दी अनमोल नियामत को तहस-नहस कर दिया है।

जैसे - नदियों एवं समुन्द्र में कारखानों की गंदगी ने जल को दूषित कर दिया है। वातावरण जहरीले धूएँ से प्रदूषित हो गया, पहाड़ों एवं रमणीक स्थलों पर अनगिनत व्यापारिक गगनचुम्बी इमारतों ने अपना ऐसा जाल बना लिया है जहाँ इन स्थानों में बैठकर साधना में सफलता मिलना असम्भव हो गया है।

प्राचीन समय में साधक-साधना काल में, रात्रि के अंधकार को दूर करने के लिए मशालें एवं कुदरती वृक्षों से प्राप्त सामग्री द्वारा उजाला करता था, जो वातावरण को शुद्ध करने के साथ-साथ देवी-देवताओं को तृप्त करने में सहायक थी।

साधक को आज के समय कच्चे मकान के भीतर साधना करने का विधान करना चाहिये तभी वह अपने मुकाम को हासिल कर सकता है। तंत्र विद्या की सिद्धि प्राप्त हो जाने पर साधक के शरीर का विल पावर उदय हो जाता है, जिससे संसारिक कार्य अपने आप सिद्ध होने लगते हैं। शरीर की व्याधियाँ पीछा छोड़ देती हैं, साधक का जीवन आनन्दमयी हो जाता है और उसे किसी तरह का कोई अभाव नहीं रहता है।

आप किसी योग्य गुरु की शरण में इस विद्या का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर अपनी मंज़िल प्राप्त करें। बिना गुरु तंत्र ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है।

-यो. अवतार सिंह अटवाल

साधकों के लिए
यो. अटवाल जी का विशेष सुझाव

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व साधक निम्न नियमों का पालन अवश्य करें -

1. गुरु से ज्ञान प्राप्त करें।
2. गुरु से शक्ति दीक्षा अवश्य प्राप्त करें।
3. ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से पालन करें।
4. अपने गुरु एवं परमात्मा पर पूर्ण विश्वास और श्रद्धा रखें।
5. मन एवं शरीर को शुद्ध और पवित्र रखें।
6. प्राचीन तंत्र शास्त्रों पर विश्वास कर साधना करें।
7. मास–मदिरा का सेवन न करें।
8. गुरु के सिवा किसी भी अन्य व्यक्ति से साधना सम्बन्धी कोई बात न करें।
9. साधना के लिए एकांत और शुद्ध स्थान का उपयोग करें।
10. गुरु के छत्र–छाया में ही अनुष्ठान करें।
11. साफ–स्वच्छ, धुले हुए वस्त्रों का उपयोग करें।
12. तेल, सुगन्ध, साबुन, पाउडर आदि का उपयोग न करें।
13. अकेले एकांत में ही साधना करें।
14. अपने पास प्रत्येक साधना समय में असली धूप का ही उपयोग करें।
15. साधना काल में शुद्ध देसी घी का अखण्ड दीपक जलायें।
16. साधना के समय जल का लोटा अपने पास रखें।
17. साधना एक नियत समय पर ही करें।
18. पुस्तक में वर्णित मंत्रों का विधि–पूर्वक जप करें।
19. साधना में बताए गये अनुष्ठान के दिनों तक बिना नागा किये प्रतिदिन जप अवश्य करें।
20. साधना आरम्भ से पूर्व मंत्र को कण्ठस्थ करके जप करें।
21. जप के समय जल का जो पात्र समीप में रखें हों, उस पात्र का जल 24 घण्टे बाद किसी वृक्ष पर चढ़ा दें।
22. जप के समय क्रोध, लड़ाई, चिंता आदि से बचें।
23. जप काल में झूठ का त्याग अवश्य करें।
24. साधना काल में धूम्रपान या कोई अन्य नशा आदि न करें।

25. साधना शान्त, नियत स्थान पर एकांत में ही करें।
26. साधना वाले दिनों में मौन धारण करें।
27. साधना समय में जिस मंत्र का जप कर रहें हों, उस मंत्र का देवता की प्रतिमा या फोटो अवश्य सामने स्थापित करें।
28. जप शुरु करने से पहले अपनी रक्षा अवश्य करें।
29. जप साधना में असली शुद्ध सामग्री का ही उपयोग करें।
30. जप काल में भोग आदि सामग्री, फल-फूल, मिठाई आदि ताजा एवं शुद्ध होनी चाहिए।
31. साधना काल में साधक अपने वस्त्र, जूठे बर्तन आदि स्वयं साफ करें।
32. साधक साधना में उपयोग की सामग्री (नैवेद्य, भोग) तथा अपना भोजन स्वयं तैयार करें।
33. साधना रात्रि के शान्त वातावरण में करें।
34. साधक, अनुष्ठान, जप के बाद भी नियमित मंत्र जप करते रहें।

सिद्धि हेतु मंत्र

इस अध्याय में कई देवी, देवताओं, भूत-बेताल आदि के सिद्धि हेतु उनके विधि-विधान आदि सम्पूर्ण वर्णित है।

ॐ दुर्गाय नमः

सिद्धि के लिए श्री गणेश मंत्र

ॐ ग्लां ग्लीं ग्लूं गं गणपतये नमः सिद्धिं मे देहि बुद्धिं प्रकाशय ग्लूं ग्लीं ग्लां ॐ फट् स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र का जप करने वाला साधक सफेद वस्त्र धारण कर सफेद रंग के आसन पर बैठकर पूर्ववत् नियम का पालन करते हुए इस मंत्र का सात हजार जप करे। जप के समय दूब, चावल, सफेद चन्दन, सूजी का लड्डू आदि रखे तथा जप काल में कपूर की धूप जलाये तो यह मंत्र, सर्व मंत्रों को सिद्ध करने की ताकत (Power, शक्ति) प्रदान करता है।

हनुमान दर्शन हेतु मंत्र

**ॐ हनुमान पहलवान, वर्ष बारहा का जवान।
हाथ में लड्डू, मुख में पान। आओ आओ बाबा हनुमान।
न आओ तो दुहाई महादेव गौरा-पार्वती की। शब्द साँचा।
पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा॥**

विधि :- साधक इस मंत्र का अनुष्ठान मंगलवार या शनिवार से प्रारम्भ करें। श्री हनुमान विषयक नियम का पालन करते हुए सिन्दूर का चोला, जनेऊ, खड़ाऊँ, लंगोट, पाँच लड्डू एवं ध्वजा चढ़ावें और प्रत्येक मंगलवार को व्रत रखें। व्रत में एवं जप समय लाल वस्त्र धारण करें, लाल आसन पर बैठ लाल चन्दन की माला का उपयोग करें। प्रति शनिवार गुड़ और चने का वितरण करें तथा यह क्रिया तीन माह करते हुए प्रतिदिन दस मालायें जपें और पवित्रता का ध्यान रखें इससे पवन सुत प्रसन्न होकर दर्शन देंगे। उस समय हनुमान जी से जो चाहे माँग लें।

लक्ष्मी प्राप्ति एवं वाक्-सिद्धि हेतु श्री गणेश

॥ मंत्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को। नमो सिद्ध गणपति-प्रसादात् विघ्न-हर्तुं गणपत गणापत वसो मसाण। जो फल चोहुं, सो फल आण। पंच लाडुँ, सिर सिन्दूर। रिद्धि-सिद्धि आण। गौरी का पुत्र सिंहासन बैठा। राजा कँपे, प्रजा कँपे। द्रष्टे राजा सिम चाँपे। पंच कोस, पूर्व-पश्चिम से आण! उत्तर से आण, दक्षिण से आण। इतनी कर रिद्धि-सिद्धि मारे घेर द्वार आण। राजा-प्रजा सभी मेरे पड़े पाँव, न पड़े तो लाजे मैया गौरी। जो मैं देखूँ गणेश बाला कर मन्त्र का सत की फट्-फट् स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु काल-रात्रि, वीर-रात्रि, रवि-पुष्य, गुरु-पुष्य अथवा अमृत-सिद्धि-योग में सोलह सौ बार जपें। श्री गणेश विषयक नियमों का पालन करते हुए साधना करें तो यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र सिद्धि से साधक "लक्ष्मी की प्राप्ति" एवं "वाक्-सिद्धि" प्राप्त करता है।

अग्नि बैताल सिद्धि हेतु मंत्र

ॐ नमो अगिया वीर बैताल। पैठि सातवें पाताल, लांघ अग्नि की जलती झाल। बैठि ब्रह्मा के कपाल। मछली, चील, कागली, गूगल, हरिताल। इन वस्ताँ को लै चलि, न लै चलै तो माता कालिका की आन॥

विधि :- होली की रात को मंत्र में कही हुई सामग्री लेकर किसी एकांत स्थान में बैठकर इस मंत्र का जप करें। साधना के समय धूप तथा दीप प्रज्वलित करें। जप से प्रसन्न होकर जब अग्नि बैताल आए तो उसे उपरोक्त सामग्री दे दें। प्रयोग के समय किसी कंकड़ी को लेकर एक सौ आठ बार इस मंत्र को पढ़कर फूँक मारेंगे और जहाँ फेंक देंगे वहीं आग लग जाएगी।

कार्य-सिद्धि हेतु श्री गणेश मंत्र

ॐ गणपत वीर! बसे मसान, जो फल माँगूँ, सो फल आन। गणपत देखे गजपत डरे, गनपत के छत्र से बादशाह डरे। मुख देखे राजा-प्रजा डरे, हाथ चढ़े सिंदूर। औलिया गौरी का पूत-गणेश! गुग्गुल की धरूँ ढेरी, रिद्धि-सिद्धि लाये गणपत घनेरी। जय गिरनार-पति! ओम नमो स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि के लिए साधक अपने साथ धूप, दीपक, घी, सिन्दूर, बेसन के लड्डू लेकर बुधवार, गुरुवार या शनिवार या इन दिनों में जब यदि ग्रहण, पुष्य-नक्षत्र, सर्वार्थ-सिद्धि योग पड़े तो उत्तम, किसी एकान्त स्थान या देवालय में जहाँ लोगों का आवागमन कम हो जाकर श्री गणेश जी की षोडशोपचारों से पूजा करें। घी का दीप जलाकर, अपने सामने एक फुट की ऊँचाई पर रखें। सिंदूर अर्पित कर लड्डूयों का भोग लगायें और प्रतिदिन एक सौ आठ बार इस मंत्र का जाप करें। भोग लगाये हुए लड्डूयों के प्रसाद को बच्चों में

बाँट दिया करें उक्त कर्म चालीस दिन तक करें। चालीसवें दिन सवा किलो लड्डूयों का प्रसाद रखें और मंत्र जप समाप्ति पर तीन बालकों को भोजन कराकर उन्हें कुछ दक्षिणा दें। बचे हुए सिन्दूर को किसी डिब्बी में सम्भाल कर रख लें और एक सप्ताह बाद इसका उपयोग करें। आवश्यकता पर इस सिन्दूर को सात बार उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर अपने माथे पर टीका लगायें, सभी कार्य सिद्ध होंगे।

वाक् सिद्धि हेतु सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीं कामनी स्वाहा।।

विधि :- इसकी सिद्धि तेरह हजार मंत्र प्रतिदिन जपने से तीन मास में प्राप्त होती है। माँ सरस्वती की कृपा प्राप्ति हेतु साधक अनुष्ठान के दिनों में श्वेत वस्त्र धारण करें, सात्विक आहार एवं सत्य ही व्यवहार करें छल-कपट को निकट भी न आने दें। इससे वाक्-सिद्धि प्राप्त होती हैं। सिद्धि की स्थिरता के लिए प्रतिदिन तेरह हजार मंत्र जप करते रहें, अन्यथा शक्ति क्षीण होने की संभावना रहती है।

सर्वकार्य सिद्धिदायक हनुमान मंत्र

पर्वत व्यायी अंजनी पुत्र जने हनुमंत, रोट लंगोट दरिया ही भुजा। लौंग सुपारी जायफल पान का बीड़ा कोने लिया, या साहब जो लिया या किसको पूजा तेल। हनुमान को पूजा, सिन्दूर चढ़ाया किस अर्थ। मूठा बंध वार बंध घोर बन्ध, इष्ट बन्ध, तुष्ट बन्ध माठी बन्ध। मसाणी बन्ध काली भैरव कलेजा बन्ध, कालू बंध दरवाजा बंध। इतने को बंध, माता अंजनी। पिण्ड काँचा शब्द साँचा, फुरो मंत्र-ईश्वरो वाचा। वाचे से टले तो खारे समुद्र में गले, खारे समुद्र में टले। कुम्भी पाक नर्क में गले, लोना चमारी के कुण्ड में गले।।

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि इकतालिस दिनों में होती है। श्री हनुमान विषयक नियमों का पालन करते हुए साधक इकतालीस दिन तक साधक नित्य रात्रि को बारह बजे किसी चौराहे पर अपना सुरक्षा चक्र पानी से बनाकर उसमें चौमुखी आटे का दीपक बनाकर जलायें एवं जल का सिंचन कर शुद्ध स्थान पर एक तेल की शीशी सिंदूर, लौंग, सुपारी, पान, जयफल रखकर, इस मंत्र का एक सौ आठ बार जप करें एवं लाल रंग के वस्त्र धारण करें। सिद्धि के बाद पवन पुत्र की कृपा से साधक के सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

ऋद्धि-सिद्धि-दायक श्री गणेश मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। गणपति बीर, बसे मसाने। जो-जो माँगू, सो सो आण। पाँच लाड्डू, सिर सिन्दूर, हाटि का माँटी, मसाण की खेप। ऋद्धि सिद्धि मेरे पास भयावे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण-काल या पर्व-काल में जप कर सिद्ध कर लें। जब कभी किसी बड़े भोज आदि का प्रबन्ध करना हो तो इस का प्रयोग करें। भोज तैयार होने पर साधक पाँच लड्डू ले तथा उसके ऊपर सिंदूर का टीका लगायें। पुन: एक कलश एवं रस्सी तथा एक साफ कपड़ा (जिससे कलश का मुँह बांधा जा सके) लेकर कुएँ पर जाकर सर्व प्रथम कलश में एक लड्डू श्री गणपति के मंत्र का जाप करते हुए डालें और कपड़े से कलश का मुँह ढक कर बाँधे तथा रस्सी में बाँधकर कुएँ में, जल निकालने के लिए डालें। जब कलश में जल भर जाय तब दो लड्डू लेकर कुएँ में डाल दें और जल से भरा कलश ऊपर खींच लें। सावधानी पूर्वक कलश को घर ले आयें और भोजन सामग्री (भण्डारा) के बीच स्थापित कर दें साथ ही तमाम सामग्री को साफ चद्दर आदि से ढ़क दें। इसके पश्चात् शेष दो लड्डुओं को अपने गोत्र-देव-देवी या कुल-देवता को चढ़ा दें, धूप, दीप, नैवेद्य द्वारा पूजन कर, सर्व प्रथम ब्राह्मणों को बिठायें (साथ में अन्य भोज वालों को भी बिठा सकते हैं) और मेहमानों को भोजन करायें, श्रद्धा-विश्वास बनायें रखें श्री गणेश जी की कृपा से भोज कार्यक्रम सफल रहेगा। भोज समाप्ति पर ''कलश'' का विसर्जन करके ''कलश'' के लड्डू को गौ-माता को खिला दें।

नोट :- सम्पूर्ण क्रिया करते समय मंत्र जपते रहना चाहिए।

धन-वृद्धि कारक पद्मावती मंत्र

ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावती, ॐ ह्रीं ॐ, ॐ पूर्वाय दक्षिणाय पश्चिमाय उत्तराय आष पूरय, सर्वजन वश्य कुरु कुरु स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र का विधान पूर्वक दीपावली की रात्रि को सिद्ध कर लें। एक हज़ार आठ बार जप से यह मंत्र सिद्ध होता है। मंत्र सिद्धि के पश्चात् साधक प्रात: शैय्या त्यागने से पूर्व एक सौ आठ बार इस मंत्र को जप कर चारों दिशाओं के कोणों में दस-दस बार फूँके तो सभी दिशाओं से धन की प्राप्ति हो।

सर्व-कार्य सिद्धि हेतु भैरव मंत्र

भैरो उचके भैरो कूदे भैरो सोर मचावे॥
मेरा .... अमुक कार्य .... ना करे तो
कालिका का पूत न कहावे। शब्द साँचा,
पिण्ड काँचा। फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की साधना में श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए होली की रात्रि में, सफेद या लाल मिट्टी से चौका बनाकर एरण्ड की सूखी लकड़ी और तेल का हवन करें। जब लौ प्रज्जवलित हो तब प्रज्जवलित लौ को चमेली के फूलों की माला पहना दें तथा सिन्दूर, मद्य, मांस, दही बड़े, लड्डू, लौंग, पान-सुपारी आदि चढ़ाकर गुग्गल से हवन करें और ग्यारह माला इस मंत्र की जपें तो यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। फिर जब कोई कार्य सिद्ध करना हो तो जहाँ मेरा (अमुक) कार्य लिखा है वहाँ अपना कार्य बोलते जपें और श्री भैरव जी से अपना 'अमुक' कार्य सिद्ध होने की प्रार्थना करें।

सर्व-कार्य सिद्धि दायक दत्तात्रेय मंत्र

ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः। उत्पत्ति स्थिति प्रलय कराय, ब्रह्म हरिंराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुक दर्शय दर्शय दत्तात्रायाय: नमः। मंत्र तंत्र सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि एक लाख जप से होती है। साधक इसे प्रयोग से पहले इक्कीस दिनों की साधना होली या दीपावली से शुरु कर सिद्ध कर लें। जप की पूर्ति होने पर दशांश हवन करें। पश्चात् कभी भी एक सौ आठ मंत्र जप कर किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त की जा सकती है। मंत्र की स्थिरता के लिए प्रतिदिन एक माला का जाप आवश्यक हैं।

कण्ठ-वास हेतु माँ सरस्वती का मंत्र

ॐ सरस्वती-स्वरासाती, स्वरासाती मेरी माँ। सत् गुरु बन्धो पार, जसना देव राढ़ा। गौरी-गणेश, गौरा-पारवती, महादेव, ढुण्ढराज, विश्वनाथ, काल-भैरव, कोतवाल। भीम-नकुल-सहदेव, अर्जुन-धर्मराज। राजा राजचन्द्र-महावीर, ज्वालामुखी-हिंगलाज-दुर्गा-महाकाली। गुरु का वचन न जाय खाली।

श्री गंगा, राजा रामचन्द्रजी, पाँचों पण्डवा, छठे नारायण निरंकार। महादेव जी गौरा पारवती, महावीर हनुमान जी। कउने वरण का अक्षत, देखभाल। दांड दइवी, चउवा चारपाया का नुकसान। मनई दुःखी कि लड़िका-जनाना, कि घर लुटगा-कि चोरी होई गइ। जगदम्बामूल अक्षर दया बताई॥

विधि :- इस मंत्र को सिद्ध करने पर माँ सरस्वती कण्ठ में वास करती हैं।

हस्त-रेखा सिद्धि हेतु पंचांगुली देवी मंत्र

ॐ नमो पंचांगुली, पंचांगुली। पराशरी पराशरी, माता मंगल-वशीकरणी। लोह-मय-दण्ड-मणिनी, चौंसठ काम विहण्डनी। रणमध्ये, राउल-मध्ये, शत्रु मध्ये, दीवान-मध्ये, भूत-मध्ये, प्रेत-मध्ये, पिशाच-मध्ये, झोटिंग-मध्ये, डाकिनी-मध्ये, शाकिनी-मध्ये, याक्षिणी-मध्ये, दोषणी-मध्ये, शेकणी-मध्ये, गुणी-मध्ये, गारुड़ी मध्ये, विनारी-मध्ये, दोष-मध्ये, दोषाशरण-मध्ये, दुष्ट-मध्ये। घोर-कष्ट मुझ ऊपर बुरो जो कोई करावे, जड़-जड़ावे ततचिन्ते-चिन्तावे। तस माथे श्री माता पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े। ॐ ठः ठः ठः स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि से हस्त-रेखाओं द्वारा जन्म-कुण्डली बनाने में सहायता प्राप्त होती है। मंत्र जप से पहले साधक ध्यान मंत्र जप लें।

ध्यान मंत्र

ॐ पंचांगुली महादेवी, श्री सीमन्धर-शासने।
अधिष्ठात्री करस्यासौ, शक्तिः श्रीत्रिदशेशितुः॥

पंचांगुली देवी का षोडशोपचार-पूजन कर उक्त मंत्र का जप करें। इस साधना को कार्तिक मास में हस्त नक्षत्र में प्रारम्भ कर मार्ग शीर्ष मास के हस्त नक्षत्र में पूर्ण करें। साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर एक सौ आठ बार (एक माला) मंत्र जप एवं पंचमेवा की दस आहुतियाँ प्रतिदिन करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। तदनन्तर प्रति दिन सात बार हाथ को उक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर उसे समस्त अंगों पर फेर लिया करें। इससे देवी कृपा द्वारा साधक को हस्त रेखा द्वारा तथा जन्म कुण्डली बनाने में पर्याप्त सफलता-सहायता प्राप्त होती है।

सर्व-कार्य सिद्धिदायक मंत्र

ॐ नमो महा-शाबरी शक्ति। मम् अनिष्ट निवारय-निवारय। मम् कार्य-सिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र को किसी ग्रहण-पर्व आदि पर जप कर सिद्ध कर लें। पश्चात् कोई विशेष कार्य करवाना हो तो इच्छित व्यक्ति के पास जाते समय या कार्य से पूर्व इस मंत्र को जपते हुए जाये तथा कार्य सम्पन्नता तक मन ही मन जपे। ईश्वर कृपा से इच्छित कार्य अवश्य सम्पन्न होगा।

इच्छित वर प्राप्ति हेतु दो मंत्र

ॐ वलाई आरत की रुत करु स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र की साधना 49 दिनों की है। इस मंत्र की सिद्धि चाहने वाले साधक ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करते हुए सिर्फ एक समय अपने हाथों से भोजन पका कर खायें। भोजन में सिर्फ जौ के आटे की रोटी एवं चोलाई साग (एक प्रकार की हरी साग) ही ग्रहण करें। इन दिनों साधक मौन व्रत रखें अगर बोलना पड़े तब या भोजन-कर, मल-मूत्र त्यागने, निंद्रा आदि के पूर्व एवं बाद में हर बार 60 बार इस मंत्र का जप कर प्रायश्चित करें।

किसी एकांत स्थान पर श्वेत वस्त्र पहन एवं श्वेत आसन पर बैठकर इसे जपें। इक्कीस दिन के बाद सत्ताइसवें दिन तक इस मंत्र का देवता दिखायी देता है या उसकी आवाज सुनाई पड़ती है। डरें नहीं पैतीसवें दिन के पश्चात् इक्तालिसवें या उन्चासवें दिन किसी जोगी या फकीर के रूप में दर्शन होने पर यह जोगी-फकीर प्रयोग कर्ता से लोबान-धूप, (ईत्र) सुगंधित वस्तु की मांग करेगा, जिसे देना नहीं चाहिये।

नोट :- सुगंधित वस्तु देने से 'साधना' की शक्ति नष्ट हो जाती है और दोबारा ''प्रयोग'' (साधना) करना पड़ता है।

विशेष :- प्रयोग के उपरांत कोई अनुचित कार्य कदापि न करें, धर्म-पुष्प के कार्य ही सम्पादित करें। मंत्र का देवता आप के कहेनुसार जो वस्तु मंगाओगे वह लाएगा, जहाँ भेजोगे जाएगा (अगर किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो मूल्य देकर ही मंगानी चाहिये तो प्रायश्चित नहीं होगा। अनुचित कार्य करने से सिद्धि चली जाएगी) यह मंत्र अत्यंत चमत्कारी है इसका उपयोग जन सेवा हेतु करें। इसी विधि से सिद्ध होने वाला एक और मंत्र - ॐ बिआलिया आसुत का सुत कास्तु स्वाहा॥

सर्व-सुरक्षा के लिए मंत्र

ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट्॥

विधि :- मंत्र सिद्धि हेतु, किसी ग्रहण, होली दीपावली आदि पर इसे पाँच सौ बार जप कर सिद्ध कर लें। साधक की सभी प्रकार की सुरक्षा होती है। सिद्धि के बाद धन-धान्य, पुत्र-पुत्रादि भी वृद्धि होती है। साधकों को इस मंत्र की एक माला प्रतिदिन जप करना चाहिए इस से चहुँ ओर से लाभ होता है। यह सुरक्षा एवं प्रगति हेतु एक श्रेष्ठ मंत्र है।

क्लेश नाशक श्री गणेश मंत्र

ॐ ग्लौं गौरी-पुत्र, वक्रतुण्ड गणपति गुरु गणेश। ग्लौं गणपति, ऋद्धि-पति, सिद्धि-पति। मेरे कर दूर क्लेश॥

विधि :- क्लेश निवारण हेतु साधक अपने साथ एक सौ आठ दूर्वांकुर व एक लड्डू लेकर श्री गणेश जी के मन्दिर में जाए। गणपति जी की पूजा कर सिंदूर का तिलक लगायें और लड्डू चढ़ाकर उक्त मंत्र पढ़ते (जपते) हुए एक दुर्वांकुर गणपति जी के विग्रह (मूर्ति) पर चढ़ाता जाए। यह क्रिया लगातार आठ दिन प्रात: काल के समय (बगैर भोजन किये) पर करे, सफेद वस्त्र धारण करें। सच्चे मन से किया गया यह कर्म शीघ्र फलदायी होता है।

साधक स-परिवार क्लेश मुक्त हो जाता है।

सुख-सम्पत्ति वृद्धिकारक श्री गोरख-गायत्री मंत्र

ॐ गुरुजी, सत् नमः आदेश, गुरु जी को आदेश ॐ कारे शिव-रूपी, मध्याहने हंस-रूपी, सन्ध्याया साधु-रूपी। हंस, परम हंस दो अक्षर। गुरु तो गोरक्ष, काया तो गायत्री। ओम ब्रह्म, सोऽहं शक्ति, शून्यमाता, अवगत पिता, विहंगम जात, अभय-पन्थ, सूक्ष्म-वेद, असंख्य शाखा, अनन्तप्रवर, निरंजन गोत्र, त्रिकुटी क्षेत्र, जुगति जोग, जल स्वरुप, रुद्र-वर्ण। सर्व-देवः ध्यायते। आए श्री शम्भु-जति गुरु गोरखनाथ। ओम सोऽहं तत्पुरुषाय विद्महे शिव गोरक्षाय धीमहि तन्नो गोरक्षः प्रचोदयात्। ॐ इतना गोरख-गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया।

गंगा गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र कोलांचल अनुधान-शिला पर सिद्धासन बैठ। नव-नाथ चौरासी-सिद्ध, अनन्त-कोटि-सिद्ध-मध्ये श्री शम्भु-जति गुरु गोरखनाथ जी कथ पढ़ जप के सुनाया। सिद्धो गुरुवए, आदेश-आदेश॥

विधि :- प्रतिदिन गोरखनाथ जी की प्रतिमा का पंचोपचार से पूजन कर 21, 26, 51 या 108 बार इस मंत्र को जपें। नित्य जप से श्री गोरख नाथ की कृपा मिलती है, जिससे साधक और उसका परिवार सदा सुखी रहता है। बाधाएँ स्वत: दूर हो जाती हैं। सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक है। यह मंत्र नाथ योगियों का सिद्ध मंत्र है।

मार्ग दर्शन हेतु मंत्र

तोते तयियाना॥

विधि :- इस मंत्र के प्रयोग हेतु साधक कब्रिस्थान में जाकर, एक नई एवं एक पुरानी कब्र की थोड़ी-थोड़ी मिट्टी दोनों हाथों की मुट्ठियों में अलग-अलग लेकर बंद कर लें। जप स्थान पर आकर दोनों मुट्ठियों की मिट्टी अलग-अलग थैलियों में रखें। 333, 333, उड़द के दाने मंत्र जप करके दोनों थैलियों में अलग-अलग डालें (जप क्रिया करते समय हर बार उड़द एवं थैली की मिट्टी पर फूंक मारें, मंत्र संख्या गिनने में त्रुटि सम्भव है अत: उड़द के 333, 333 दानें अलग-अलग पहले ही रख लें)

यह प्रयोग तब किया जाता है, जब व्यक्ति समस्या-ग्रस्त होकर स्वयं कोई निर्णय न ले सके। तब रात्रि के समय प्रयोग कर्ता सोते समय उन दोनों थैलियों को सिरहाने रखे तो स्वप्न में सही मार्ग दर्शन चमत्कारिक ढंग से होगा। मार्ग-दर्शन मिल जाने पर कब्र की मिट्टी को अगले दिन कब्रिस्थान में डाल देना चाहिए। अगर यह प्रयोग एक बार में सफल न होवे तो तीन बार करें अवश्य सफल होगा।

सद्-बुद्धि एवं विद्या प्राप्ति हेतु श्री गणेश स्तुति

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश पाहि माम्। जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश रक्ष माम्॥ जय सरस्वती, जय सरस्वती, जय सरस्वती पाहि माम्। जय अम्बे, जय अम्बे, जय अम्बे, जग जननी, जय जगदीश्वरी, माता सरस्वती मोह-विनाशिनी॥

जय अम्बे, जय अम्बे, जय-जय जग जननी, जय-जय अम्बे।
जय जगदीश्वरी माता सरस्वती मोह-विनाशिनी जय अम्बे॥
जय दुर्गे, जय दुर्गे, जय-जय दुर्गति नाशिनी, जय दुर्गे।
आदिशक्ति पर-ब्रह्म-स्वरुपिणी भव-भय-नाशिनी जय दुर्गे॥
अम्बा की जय-जय, दुर्गा की जय-जय। सावित्री की जय-जय, गीता की जय-जय। माता की जय-जय जपु माता की जय-जय॥ जपु जगद्-अम्बा ग्रहि कर माला, बसो हृदय में बहु-चर बाला। काली-काली महाकाली, भद्रकाली नमोऽतुते। देवि, देवि, महा-देवि, विष्णुर्देवि! नमो नमः॥

विधि :- इस स्तुति को करने से श्री गणेश जी की कृपा बनी रहती है और साधक (स्तुतिकर्ता) को सद्-बुद्धि व विद्या का लाभ प्राप्त होता है।

वाक्-सिद्धि हेतु सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्-वादिनि, भगवति! अर्हन-मुख-निवासिनी-सरस्वति! ममांशे प्रकाशं कुरु-कुरु स्वाहा, ऐं नमः॥

विधि :- दीपावली की रात्रि में शुद्ध होकर श्वेत-वस्त्र, श्वेत माला धारण करे और श्वेत आसन पर उत्तरादिकमुख बैठकर भगवती सरस्वती की मूर्ति या चित्र को अपने सामने किसी आधार पर स्थापित करें। धूप-दीपादि, पंचोपचार से माँ की पूजा कर उक्त मंत्र का बारह हजार जप करें। इससे भगवती सरस्वती प्रसन्न होकर वाक्-सिद्धि प्रदान करती है।

सर्व-कार्य सिद्धिदायक मंत्र

ॐ जागु जागु, जेहि काजे लगावौं, तेहि काजे लागु।
धूप करावौं, धनिद्रा धावै, सेंधा नोन चढ़ा पट लावै।
अंगद वीर वौवसे कुँवारी वेदना करै, उपकारो।
जागु-जागु-जागु, जेहि काजै लगावौं, तेहि काजे लागु।
एकइस स्त्री मेरे पास आवैं। अनखि आएँ,
मेरे ओस्ताद को न मानैं, तो धोबी के कुण्ड में परैं।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा।

विधि :- उक्त मंत्र का जप मंगलवार से प्रारम्भ करें। साधकों को पन्द्रह दिन में इस मंत्र का एक लाख जप करना चाहिए इससे मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंगलवार को ही बदरी काष्ठ (बेर की लकड़ी) जलाकर एक राई, दो धनिया एवं तीन सेंधा नमक से होम (हवन) करें। पश्चात् इस मंत्र का प्रयोग कर अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करें।

मनोकामना दायक श्री बगलामुखी मंत्र

ॐ ह्लीं बगला-मुखि! जगद्-वशंकरि!
माँ पीताम्बरे, प्रसीद प्रसीद,
मम् सर्व-मनोरथान् पूरय-पूरय ह्लीं ॐ।

विधि :- श्री बगलामुखी के उपरोक्त मंत्र का दस सहस्त्र जप करने से सिद्धि मिलती है। साधक इस मंत्र की सिद्धि हेतु हल्दी, हरिताल, मालकांगनी (ज्योतिष्मती) को कूट कर कड़वा तेल मिला लें तथा नीम या बेर की लकड़ी अन्यथा खैर की लकड़ी की समिधा द्वारा नित्य अष्टोत्तर-शत हवन करें तो साधक को अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है।

नोट :- हवन करते समय उक्त मंत्र के अन्त में "स्वाहा" शब्द जोड़ कर अग्नि में आहुतियाँ छोड़ें तथा पूर्णाहुति देकर निम्न स्तुति का पाठ करें।

स्तुति

नमो देवि बगले! चिदानन्द-रूपे! नमस्ते रिपु-ध्वंस-कारी-त्रिमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते।। १।।
सदापीत-वस्त्राढ्य-पीत-स्वरूपे! रिपु मारणार्थे गदा-युक्त-रूपे!
सदेषत् स-हासे सदाऽऽनन्द-मूर्ते! नमस्ते-नमस्ते-नमस्ते-नमस्ते।। २।।
त्वमेवासि मातेश्वरी त्वं सखे त्वं। त्वभेवासि सर्वेश्वरी तारिणी त्यं।
त्वमेवसि शक्तिर्बलं साधकानाम्। नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते।। ३।।
रणे तस्करे घोर-दावाग्नि-युष्टे। विपत्-सागरे दुष्ट-रोगाग्नि-प्लुष्टे।
त्वमेका मतिर्यस्य भक्तेषु चिताः। स-षट्-कर्मणानां भवेत्याशु दक्षः।। ४।।

स्वप्न सिद्धि हेतु मंत्र

सपन सलोनी सुन्दर लोनी, गगन मगन पे चांद बरोनी।
राजा परजा सबहि पुकारें, दोऊ कर जोरे वन्दें सारे।
रात-रात में हाल दिखावे, सपने में लीला सब आए।
आगल-पाछल सकल बतावे, लूणा जोगन दरश करावे।

न बतलाए हमार मनोरथ, गिरे, शूकर मैला में जावे।
दुहाई शिव शंकर की मन्सा पूरन की॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि नव-रात्रि में दस हजार जप करने से हो जाती है। सिद्धि के बाद जब आवश्यकता होवे तब साधक एक समय भोजन करके सोने से पहले एक स्वच्छ पवित्र जल से भरा कलश (मिट्टी से बना) लेवें। उस में आम के पत्ते डाल कर अपने सामने रख कर उक्त मंत्र की एक माला जप करें फिर कलश को सिरहाने की ओर रखकर दायीं करवट से मन ही मन जप करते हुए सो जाएँ। सोने से पूर्व कागज एवं कलम अपने समीप रखकर जमीन पर शयन करें। रात्रि समय में साधक जिस समस्या का हल खोजना चाहता है उसका हल उसे स्वप्न में मिल जाता है। नींद खुलते ही स्वप्न को तुरंत लिख लेना चाहिए।

कल्याण दायक श्री गणेश मंत्र

ॐ गं गणपतये नमः॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि इक्कीस दिन में सवा लाख जप करने से होती है। साधक इसकी शुरुआत किसी भी बुधवार से कर सकता हैं। साधना में जल पात्र, लाल फूल, धूप-दीप एवं लड्डू रखें। लाल रंग के ऊनी या सूती आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ कर लाल चन्दन या मूंगे की माला से जप करें। सिद्धि पश्चात् घर में विवाह-कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हो जाये, घर में सुख-शान्ति बनी रहे या किसी कार्य में विघ्न न आवे, इसके लिए यह प्रयोग किया जाता है।

स्मरण शक्ति हेतु सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ नमः सरस्वत्यः॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि दस हजार जप करने से होती है। तथा इसके साथ इस दवा का प्रयोग करने से स्मृति शक्ति का विकास होता है। एक किलो घी को बकरी के चार किलो दूध में मिला दें इसमें 5 केवड़े के फूल, सहजने की जड़ का चूर्ण एक चम्मच, थोड़ा सा सेंधा नमक डाल दें और इसे हल्की आग पर रख दें। जब दूध जल जाय तो उतार लें। इस घृत में पुनः दूध और दवायें डालकर धीमी आंच पर पकाये। यह क्रिया तीन बार करें और इसका सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

उन्नति के लिए लक्ष्मी मंत्र

**ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीं मम्
गृहे धन पुरे, चिन्ता दूरे दूरे स्वाहा॥**

विधि :- व्यापार, नौकरी या किसी भी क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने के लिए इस मंत्र की एक माला कलमगट्टे की माला से जप प्रतिदिन करने से माँ लक्ष्मी की दया दृष्टि बनी रहती है।

कवित्व शक्ति हेतु मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं दोष स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि एक लाख मंत्र जप से होती है। साधक प्रतिदिन दस हजार जप करें। साधना का प्रारम्भ कृतिका नक्षत्र में मंगलवार के दिन से करना चाहिए अनुष्ठान के बाद हवन आदि करें। इस से कवित्व शक्ति का जागरण होता है।

गुप्त गणेश-गायत्री मंत्र

ॐ गुरुजी गणेशाय नमः। साँचा मंत्र सर्व-वशे महेश, मूल-चक्र में वशे गणेश। गुदा-चक्र, पद्म-चक्रकरिल्यो पाक, प्रेम-ज्योत हृदयो प्रकाश। गणपत स्वामी सनमुख रहो, हृदय-वशे ज्ञान। अगम से कहो ओऽहं-सोऽहं शब्द साँचा। विरला नर जोगेश्वर मिल्यो, चतुर्वेद मुख से कहे। सर्व-कमल फेर, घर ल्याब। इंगला-पींगला-सुषुम्ना तीनु एक घर ल्याव। बंक नाड वेग कर ल्याव। झग-मग ज्योत जगाव। आत्मा से परमात्मा के दर्शन घट में पाव। कहे श्री आद्यानाथजी सुनो अनघड़ देव। त्रिकुटी समाज शिव-शून्य में लगाव। एकवीश अवनी फिर नहिं आवे। सत साहरे में मिल जावे। झण-झण-झणकार वाजे। तत्काले-पत्काल से भया मेला। गुरुजी की रहम से अपनी फेम से भया नाद बुन्द का मेला। मूल द्वारे चतुर्दल पांखड़ी का वासा, जहाँ गणपति देव का वासा। गण-पति देव, सरस्वति शक्ति। चूहा वाहन, गोदावरी

क्षेत्र करील्यो स्नान। केशर-कस्तूरी-धूप-दीप-नैवेद्य पूजा। आस-पास लघु-श्वास जान चढ़ावे, अमरापुर जावे। अजान चढ़ावे, नरक मां जावे। तीन सहस्त्र जाप की पूजा, अलख निरंजन अश्व-ज्ञान की पूजा। छः सहस्त्र जाप की पूजा, अलख निरंजन और नहिं दूजा। वक्र-दन्ताय विद्महे उच्छिष्टाय धीमहि तन्नो गणेश प्रचोदयात्। आटले गणेश-गायत्री सम्पूर्ण भया। अनन्त कोटि सिद्धो, कैलाश पर्वत, त्र्यम्बक देवता, गोदावरी क्षेत्र, अनुपान शिला पर बैठकर गुरु गोरखनाथ जी ए किया॥

विधि :- यह "गुप्त गणेश-गायत्री" है। इसमें योग-भक्ति के साथ ही स्वर-विज्ञान भी है। यह ईश्वरीय शक्ति तक पहुँचने की सीढ़ी है। यू तो यह नाथ योगियों के लिए विशेष है यह विद्या चूँकि गुरु मुखी है इसमें थोड़े में बहुत समाया है। निम्न स्तर के साधकों के लिए तो यह अत्यन्त उपयोगी है। आत्म ज्ञान की प्राप्ति हेतु साधनारत साधकों हेतु श्रेष्ठ आधार है।

उन्नतिदायक लक्ष्मी मंत्र

राम-राम क्या करे, चीनी मेरा नाम। सर्व-नगरी बस में करूँ, मोहूँ सारा गाँव। राजा की बकरी करूँ, नगरी करूँ बिलाई, नीचा में ऊँचा करूँ, सिद्ध गोरखनाथ की दुहाई॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि चालीस दिन में होती है। गुरु-पुष्प नक्षत्र में प्रारम्भ कर कमल गट्टे की माला से नित्य एक माला मंत्र जप करें। पुनः आजीवन नित्य ग्यारह बार जपना चाहिये इससे माँ लक्ष्मी की कृपा से चारों तरफ से उन्नति-लाभ प्राप्त होती है।

मनोवांछित फल हेतु मंत्र

ॐ कामरु देश, कामाक्षा देवी, जहाँ बसे लक्ष्मी महारानी। आवे, घर में जमकर बैठे। सिद्ध होय, मेरा काज सुधारे। जो चाहूँ, सो होय। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट्॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि ग्यारह दिनों में होती है। इसका शुभारम्भ नव-रात्रि या दीपावली से कर जप के पश्चात् ग्यारह नारियलों का हवन करें। इच्छित कार्य में सफलता मिलती है।

धन-दायक लक्ष्मी मंत्र

ॐ आवो लक्ष्मी बैठो आंगन, रोली-तिलक चढ़ाऊँ। गले में हार पहनाऊँ। बचनो की बाँधी, आवो हमारे पास। पहला वचन श्रीराम का, दूजा वचन ब्रह्मा का, तीजा वचन महादेव का। वचन चूके, तो नर्क पड़े। सकल पंच में पाठ करूँ। वरदान नहीं देवे, तो महादेव की शक्ति की आन॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि के लिए साधक दीपावली की रात्रि को सर्व प्रथम माँ लक्ष्मी की षोडशोपचार से पूजन करें। इसके बाद इस मंत्र की पाँच, ग्यारह, इक्कीस, माला जितना हो सके मंत्र जप करें। पश्चात् प्रतिदिन ग्यारह बार जप कर अपने कार्य को जावे। इससे धन की कमी नहीं होती और सुख तथा खुशी प्राप्त होती है।

रोजगार प्रदायक मंत्र

ॐ नमो नगन, चीटि महावीर।
हूं पूरो तोरी आश, तूं पूरो मोरी आश॥

विधि :- रोजगार प्राप्ति के इच्छुक साधक सर्व प्रथम भुने हुए चावल एक सेर, एक पाव शक्कर, आधा पाव घी, तीनों को मिलाकर प्रात: काल स्नान करके जहाँ चीटियों का निवास हो वहाँ इस मंत्र को पढ़ते हुए बिल के पास सामग्री डालते जाएं। साधक चावल भूनते समय एवं उपरोक्त क्रिया करते समय मन ही मन मंत्र जपता रहे। नियम से करने पर चालीस दिन के बाद रोजगार अवश्य मिल जाता है। यह इच्छा पूर्ति करने वाला सफल मंत्र है।

सिद्धि के लिए गुहिया वैताल मंत्र

ॐ गुहिया वैतालाय नमः॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि पन्द्रह दिन में नियम-पूर्वक जप से होती है। इस साधना हेतु साधक सर्वप्रथम रविवार की प्रभात को कपिला-गौ का गोबर भूमि पर गिरने से पूर्व हाथ में रोक लेवें फिर जंगल या एकान्त में जाकर उस गोबर के चार कण्डे बनावें। ब्रह्मचर्य-धर्म का पालन करते हुए कपिला-गौ के दूध के साथ नमक रहित भोजन करें, जब शौच लगे तब उसी एकांत में जहाँ कण्डे पड़े हैं वहाँ जाकर एक कण्डे पर दायां पैर एक कण्डे पर बायां पैर रख कर एक कण्डे पर

शौच तथा एक कण्डे पर पेशाब त्यागते हुए उक्त मंत्र का एक हजार जप करें। यह शौच क्रिया (जप) तीसरे रविवार तक नियमत करें। जब तीसरा रविवार आये उस दिन श्मशान की अग्नि लाकर मल (विष्ठा) वाला कण्डा एवं पेशाब वाला कण्डा दोनों को अलग-अलग जलावें और अलग-अलग रख लें। पश्चात् जब शत्रु के घर-आंगन में विष्ठा के कण्डे की भस्म डालेंगे तो शत्रु के घर आँगन में खाने-पीने की वस्तुओं में सर्वत्र विष्ठा ही विष्ठा नजर आवेगा यानी चारों ओर मल ही मल हो जाएगा। जब शान्त करना हो तो पेशाब वाला भस्म फेंक देने से विष्ठा होना बन्द हो जाएगा।

सिद्धि हेतु अन्नपूर्ण माता का मंत्र

ॐ नमः अन्नपूर्णा अन्न पूरे। घृत पूरे गणेश जी।
पाती पूरे ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों देवतन।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। श्री गुरु गोरखनाथ
की दुहाई। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण-काल या पर्व काल में एक लाख जप कर सिद्ध कर लें। पश्चात् भण्डार-गृह में से अछूती भोज्य-सामग्रियों में से माँ अन्नपूर्णा के मंत्र का जप करते हुए भोग लगायें। फिर भोग का एक भाग कुएँ में डाल दें एवं किसी साफ कलश में कुएं से एक हाथ द्वारा पानी भर कर कलश के जल को भण्डार-गृह में स्थापित करे कलश के ऊपर आम्र पल्लव रख दीपक प्रज्ज्वलित कर माता अन्नपूर्णा और वरुण भगवान की पूजा करें और एक माला इस मंत्र का जप करने के बाद भोज शुरु करवायें ध्यान रखें अगर हो सके तो इस भोज में अगर किसी विप्र ने हिस्सा लिया हो तो पंगत में पहले उसे ही परोसें इससे माता अन्नपूर्णा की कृपा बनी रहती है और ''भण्डार'' में कमी नहीं होती।

विवाह हेतु अघोर मंत्र

मखनो हाथी जर्द अम्बारी, उस पर बैठी कमाल खाँ की सवारी।
कमाल खाँ, कमाल खाँ, मुगल पठान। बैठे चबूतरे, पढ़े कुरान।
हजार काम दुनिया का करे, एक काम मेरा कर। ना करे,
तो, तीन लाख तैंतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई॥

विधि :- इस मंत्र की साधना इक्कीस दिनों की है। यह प्रयोग विशेष कर कन्याओं (युवतियों) के लिए है जिनकी उम्र अधिक हो गई हो, दहेज या किसी अन्य कारणों से युवती के परिवार वाले विवाह सम्पन्न न कर पा रहे हो तब

विवाह हेतु साधिका (कन्या) स्वयं यह प्रयोग करे व उसके अभिभावक साथ ही साथ रिश्ता (वर) ढूढ़ने का प्रयत्न करते रहें तो शीघ्र विवाह सम्पन्न हो जाएगा।

सर्वप्रथम साधिका स्वच्छ होकर किसी एकांत कमरे में गुलाब की अगरबत्ती जलाकर सफेद वस्त्र पहन, सूती कपड़े के आसन पर बैठकर कमल गट्टे की माला लेकर प्रतिनिद पश्चिमाभिमुख हो इस मंत्र की दस माला जप, इक्कीस दिन तक रात्रि या दिन में कभी भी निश्चित कर साधना करे तो इस मंत्र के प्रभाव से अतिशीघ्र साधिका का विवाह सम्पन्न होगा।

विशेष :- कन्या का पिता, मंत्र जप प्रारम्भ के बाद वर ढूंढ़ने का प्रयत्न करता रहे।

व्यापार-वर्धक भँवरवीर मंत्र

भँवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा।
उठै जो डण्डी बिकै जो माल, भँवरवीर, सोखे नहिं जाय॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि के लिए साधक किसी भी शुभ मुहूर्त, ग्रहण काल, पर्व काल आदि पर घी, गुग्गुल की धूप देते हुए एक माला जप कर करें। इससे यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। पश्चात् किसी रविवार को दुकान खोल कर सफाई करने के बाद, काली उड़द के एक सौ आठ दाने लेकर एक-एक उड़द पर मंत्र जपते हुए दुकान में फैला दें। कुछ दाने अपने गद्दी के नीचे अवश्य डालें। ऐसी क्रिया सात रविवार तक प्रतिदिन करें और समापन भी रविवार को ही करें। इससे व्यापार में आशातीत वृद्धि होगी एवं यदि किसी ने दुकान बाँध दिया होगा तो वह भी खुल जायेगी इस मंत्र के प्रभाव से।

अक्षय भण्डार हेतु अन्नपूर्णा मंत्र

ॐ अन्नपूर्णा अन्नपूरैं, इन्द्र पूरैं पानी ऋद्धि-सिद्धि तो गणेश पूरवैं- त्रिपुरा भवानी। ईश्वरी भण्डार भरैं, महेश्वरी शील-सन्तोष की डिब्बी। तीन लोक लोई लाओ, सिद्धो! जीमो सब कोई। सीता माता की रसोई, जन्म न खाली होई। चला मंत्र-महा-यंत्र, ॐ सुमरै फटकन्त स्वाहा। ॐ अजीयाजीता आए स्वाहा। ॐ श्री सरस्वत्यै स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि के लिए साधक किसी मंगलवार से साधना प्रारम्भ करें। मंगलवार के सात दिनों में, सात जगह की भिक्षा एक-एक परिवार से लें। प्रत्येक भिक्षा को, उल्टी चक्की से पीसें और उससे हनुमान जी की मूर्ति

बनाकर उसकी पूजा करें। मूर्ति के सामने आसन पर बैठकर उक्त मंत्र का यथासम्भव जप करें। सातवें मंगल को सवा दस अंगुल परिमाप की, आटे की मूर्ति बनायें और उसे अपने भण्डार-गृह में स्थापित करें। इस प्रयोग से भण्डार अक्षय होता है अर्थात् वह कभी रिक्त नहीं होता।

स्मरण-शक्ति-वृद्धिकारक

ॐ नमो देवी कामक्षा। त्रिशूल, खड्ग-हस्त, पाद्या-पाती। गरुड़ सर्व-लखी तू प्रीतयो समांगम तत्व-चिन्तामणि, नर सिंह। चल-चल, क्षीन कोटि कात्यानी, तालव प्रसाद के। ॐ हों ह्रीं क्रूं त्रिभुवन चालिया-चालिया स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधक, शुक्ल पक्ष के ''रोहिणी'' नक्षत्र से प्रारम्भ कर आने वाले ''रोहिणी'' नक्षत्र तक उक्त मंत्र की एक माला का जप, चौदह पत्तियों तुलसी की लेकर अभिमंत्रित कर सेवन कर लिया करें। इससे यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। पश्चात् प्रतिदिन तुलसी की सात पत्तियाँ लेकर एक-एक बार मंत्र बोलकर एक एक पत्ती का सेवन कर लिया करें। इस प्रक्रिया से स्मरण-शक्ति में वृद्धि होती है।

श्री गणेश-गायत्री मंत्र

ॐ गुरुजी, मूल चक्र को कर लो पाक। परसो परम-ज्योति-प्रकाश। गणपत स्वामी सन्मुख रहे, सुद्धि-बुद्धि निर्मली गहे। गम को छोड़, अगम की कहे। सतगुरु शब्द-भेद पर रहे। ज्ञान-गोष्ठी की काया धर्मी, सद्-गुरु दियो लखाय। मूल महल में पिण्डक जड़िया, गनन गरजियो जाय। ॐ गणेशाय विद्महे-महा-गणपतये धीमहि तन्न एक दन्तः प्रचोदयात्। इति गणेश-गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोटि सिद्धों में श्री नाथ जी गुरु जी ने कहा। नौ नाथ, चौरासी सिद्धों के आदेश-आदेश॥

विधि :- श्री गणेश-गायत्री जप करने से मनुष्य के सभी संताप मिटते हैं और श्री गणेश जी की कृपा दृष्टि बनी रहती है।

दर्शन हेतु लक्ष्मी मंत्र

ॐ लच्छमीमाई, विसनु की लुगाई। आओ माई आंगन में विराजो, घर में भंडार भरो। चाँदनी सी बरसो, तारेन सी चमको। जो न पधारो तो पति की सेज भूलो। चण्डू चाण्डाल की भोग बनो। आदेश गोरखनाथ मछन्दर को दुहाई सात समन्दर की। मेरी भगति, गुरु की शक्ति। मंत्र साँचा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधक दीपावली से पहले पूर्णिमा को पीपल वृक्ष की मूल को सविधि आमंत्रित कर लें आवें। उसे प्रतिदिन स्नान, धूप, अगरबत्ती, प्रसाद चढ़ायें और श्रद्धा से प्रणाम करें। फिर दीपावली की अमावस्या की दीप प्रज्जवलित करके उस पीपल की जड़ को आसन के नीचे रख कर साधना शुरु करें, पूरी रात यानी प्रात: (भोर) तक जितना जप हो सके करें। पश्चात् नित्य प्रति स्नान कर एक सौ मंत्रों का जप मूल को आसन के नीचे रख कर करते रहें। निरंतर जप के प्रभाव से माता लक्ष्मी का राजसी वैभव प्रकट होने लगेगा। इस मंत्र की साधना से निश्चित ही घर के आँगन में स्वर्णालंकारों से अलंकृत एक अत्यन्त सुन्दर युवती स्वप्न में दिखायी देगी। लक्ष्मी स्वरूपा युवती घर में प्रवेश करती है। जैसे-जैसे साधक के मंत्र जप का बल बढ़ता जाएगा। माँ के दर्शन एवं वैभव में बढ़ोत्तरी होती जाएगी। साधक जीवन भर स्त्रियों, ब्राह्मणों, वृद्धों का सम्मान करें एवं ईश्वर के प्रति श्रद्धाभाव रख समय-समय पर दान-पुण्य करते रहें।

सिद्धि के लिए वीर का मंत्र

कागद कोरो कोरे पे हाथ वीर बताये, तन की बात, कौन-कौन की बताये, भूत की पलीत की, अखने की मखने की रोग की भोग की, मूढ़ की दीढ़ की चौकी की-मौकी की, मसान की-मन्तर की, एक-एक की मन की बात, कोरे-कागज़ पर लिखकर न बताये तो वीर न कहाये बजरंग का घोटा खाय आखिर में चमार की नांद में जाय। माता हिंगलाज राखे मेरी लाज॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधक नवरात्र में किसी एकान्त स्थान में जाकर एक चौकी बनाकर उसमें आटे की चौकोर लाईन डालकर चौक पूर लें।

चौक के बीच स्वास्तिक की आकृति बनाकर उस चौक पर कपूर की बत्ती जलायें, पान की बीड़ा-चढ़ाकर वीर की पूजा करें। मंगलवार के दिन टेडे पर सिन्दूर लगा, चार सौ चालीस बार इस मंत्र का जप कर लें। जप के बाद किसी विप्र को भोजन पर आमंत्रित करें और सिन्दूर लगे टेडे को वीर के रूप में मान कर ले आएं तथा पाँच माला नित्य क्रम से जपते रहें यह जप एक मास तक करें ऐसा करने से वीर प्रसन्न हो जाता है। वीर सिद्ध हो जाने की पहचान है कि माँ दुर्गा के नाम से उक्त मंत्र सात बार जपें और धूप जलाकर उस पर सात बार कोरे कागज को घुमा कर अभीष्ट व्यक्ति का नाम, काम एवं अन्य प्रश्न कहकर कहें कि इसका उत्तर तत्काल दें। जब इसका उत्तर कोरे कागज़ पर लिखा हुआ आ जाय तो समझे साधना (प्रयोग) सफल समझें। उत्तर न आने पर दोबारा प्रयोग करें।

विशेष :- वीर एवं वैताल दो सूक्ष्म अस्तित्व होते हैं, किन्तु ये बल और क्षमता में बहुत अधिक होते हैं साथ ही यह न्याय प्रिय होते हैं। अन्यायपूर्व कर्म नहीं करते।

सिद्धि के लिए मुट्ठी पीर का मंत्र

बिस्मिल्लाह अर्रहमान निर्रहीम। साह चक्र की बावड़ी,
गले मोतियन का हार। लंका सौ कोट समुन्द्र सी खाई,
जहाँ फिरे मोहम्मदा वीर की दुहाई। कौन वीर आगे चले।
सुलेमान वीर चले, दुर्शनी वीर चले, नादिरशाह वीर चले।
मुट्ठी पीर चले, नहीं चले तो हजरत सुलेमान की दुहाई।
शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। चलो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि के लिए साधक, गुरुवार के दिन से रात्रि के समय बबूल के वृक्ष के नीचे पश्चिमाभिमुख बैठकर, इस मंत्र को 30 दिन में एक लाख बार जप कर पूर्ण कर लें, और इच्छित कार्य सम्पन्न करवायें।

सिद्धि में सहायक काली का मंत्र

ॐ काली घाटे काली माँ, पतित पावनी काली माँ।
जवा फूले, स्थुरी जले। सेई जवा फूल में सीआ बेड़ाए।
देवीर अनुर्बले, एहि होत करिवजा होइवे। ताही काली
धर्मेर, वले का हार आज्ञे राठे। काली का चंडीर आसे॥

विधि :- यह भगवती कालिका का बंगला भाषा का शाबरी मंत्र है। इस मंत्र का ग्रहण वाली रात्रि को विधिवत माँ काली की पूजा कर जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। फिर इस सिद्ध मंत्र का कहीं भी सात बार जप कर दायें हाथ पर फूँक मारे और जो चाहे सो कार्य करें तो पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

धन-प्राप्ति हेतु लक्ष्मी मंत्र

ॐ नमो भगवती, समन्दर की बेटी, विष्णु की रानी आओ लक्ष्मी महारानी। हम मानुष-तुम भगवती, हमें भी बनाओ कुबेर पति जो न बनाओ धनपति तो गिरो, नरक कुण्ड में, लाख-लाख विच्छुन की पीड़ा सहो। दुहाई, दुहाई श्री नाथ भगवान की।

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु, पूर्व में दिए "दर्शन हेतु लक्ष्मी मंत्र" की विधि अनुसार जप कर इस मंत्र की साधना करें। पश्चात् आजीवन एक माला प्रतिदिन मंत्र का जप करें। इससे माँ लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है।

दर्शन हेतु श्री हनुमान मंत्र

ॐ हनुमान पहलवान, वर्ष बारह का जवान। हाथ में लड्डू मुख में पान, आओ-आओ बाबा हनुमान। न आओ तो, दुहाई महादेव-गौरा-पार्वती की। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र का अनुष्ठान मंगल या शनिवार से प्रारम्भ कर एक सौ बीस दिन करें। प्रतिदिन ग्यारह माला इस मंत्र का जप विधान पूर्वक करें, साधक ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर हनुमान जी के मंदिर या किसी निर्जन स्थान में हनुमान जी की मूर्ति स्थापित कर सर्व-प्रथम उस मूर्ति पर सिन्दूर में चमेली का खुशबूदार तेल मिलाकर चोला चढ़ायें, फिर उस प्रतिमा के आगे जनेऊ, खड़ाऊँ, लाल लंगोट, लाल चन्दन, सात लड्डू, नारियल, पेड़ा, लाल ध्वजा, मौसमी फल आदि चढ़ावें। जप के समय साधक लाल रंग का आसन एवं वस्त्र धारण कर लाल चन्दन की माला से जप करें तथा प्रत्येक मंगलवार को श्री हनुमान जी का व्रत रखें साथ ही साथ प्रति शनिवार एवं मंगलवार को छोटे बच्चों को चने-गुड़ तथा लड्डूओं का वितरण करें। एकाग्र मन से की गई साधना से श्री हनुमान जी साधक के दर्शन देते हैं और मनोवांछित वर प्रदान करते हैं।

विजय हेतु श्री गणेश मंत्र

ॐ वर-वरदाय विजय गणपतये नमः।।

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि पाँच दिनों में सवा लाख मंत्र जप से होती है। साधक किसी भी बुधवार से साधना प्रारम्भ कर सकते हैं। सर्व प्रथम साधक धातु से निर्मित मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठित "विजय-गणपति" की मूर्ति के साथ ही जलपात्र, चन्दन, कनेर पुष्प, अगरबत्ती, शुद्ध घी, दीपक, जप हेतु रक्त चंदन या मूंगे की माला, लाल आसन की व्यवस्था कर लें। पुनः साधना समय "विजय-गणपति" के विग्रह को प्रातःकाल स्नान कराकर उस पर केशर लगावें, रक्त चंदन का तिलक कर गुड़ का भोग लगाकर इक्कीस पुष्पों से उसका पूजन करें। लाल कनेर के पुष्पों के अभाव में अन्य रक्त वर्णिय पुष्प लें। प्रत्येक पुष्प चढ़ाते समय जिस कार्य में विजय प्राप्त करनी है, उसे बोलकर चढ़ावे (यथा सम्भव कनेर के लाल फूल ही हो) इसके बाद मंत्र जप प्रारम्भ कर दें। पाँच दिन में सवा लाख जप पूर्ण होने पर छठे दिन कुंवारी कन्याओं को भोजन करवायें और भेट दें। इससे साधक की विजय होती है।

धन-प्रदायक लक्ष्मी मंत्र

ॐ सरस्वती ईश्वरी भगवती माता क्रां क्लीं,
श्रीं श्रीं मम् धन देहि फट् स्वाहा।।

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि चालीस दिन में होती है। माता लक्ष्मी विषयक नियमों का पालन करते हुए साधक प्रतिदिन एक माला इस मंत्र का जप करें। इस से लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर धन देगी। धन की प्राप्ति में आ रही रुकावटें दूर होगी। यह अत्यंत प्रभावशाली मंत्र है यदि किसी व्यक्ति के पास आपकी उधारी बाकी होवे और व्यक्ति की नीयत रुपया वापस न देने की हो, तो इस मंत्र के जप से व्यक्ति की बुद्धि निर्मल व शुद्ध हो जाती है तथा आप का रुका हुआ धन वापस मिलने लगता है।

कार्य-सिद्धि-हेतु दरिया देव का मंत्र

ॐ पहले नाम भगवान का, दूजे नाम औतार का। तीजे नाम सत्-गुरु, जिनका नाम स्वामी जी। उनकी कृपा और उनकी दया इस ख्वाजा-खिदर पूजने के लिए परसाद लेकर आया। लोना चमारी की दुहाई। वैष्णों शाकुम्भरा और औतार, पीर और पैगम्बर इन सबकी दया के साथ, दरिया के किनारे जिससे की हमारी आत्मा ठण्डी। लोना चमारी की दुहाई। वस्तग फेरूल युसूफ की तरह, भूरे देव की तरह, सत्य नारायण की तरह मैंने भी पैर बढ़ाया। लोना चमारी की दुहाई। हरी-हरी, शिव-शिव, जयन्ती माता॥

विधि :- इस मंत्र के अनुष्ठान हेतु साधक किसी भी दिन, सायं ठीक साढ़े छः बजे। एक पान, दो लौंग, सात बताशे लेकर दरिया (नदी) के तट पर जाकर इस मंत्र का एक सौ आठ बार जप करें। जप के बाद उपरोक्त चीजों को जल में प्रवाहित कर दें। यह प्रयोग इक्कीस दिन तक लगातार करें तो रुके कार्य पूरे होंगे एवं दरिया देव की कृप्या साधक पर बनी रहेगी।

शान्ति एवं रोग नाशक मंत्र

इस अध्याय में समस्त देवी-देवताओं के शान्ति कर्म एवं रोग नाशक कर्म से सम्बन्धित मंत्र एवं विधि विधान वर्णित हैं।

समस्त पीड़ानाशक मंत्र

ॐ नमो केतकी-ज्वालामुखी! दो वर, रोग पीड़ा दूर कर। सात समन्दुर पार कर, आदेश कामरू देश कामख्या माई, हाड़िदासी, चण्डी की दुहाई॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु ग्रहणकाल में दस हजार मंत्र का जप करें और फिर प्रयोग के समय मयूर शिखा से इक्कीस बार झाड़े एवं एक माला का जप कर अभिमंत्रित जल पिलायें। तो समस्त प्रकार की पीड़ा, टी.वी. कैंसर आदि रोग अच्छे हो जाते हैं।

विशेष :- टी.वी. (क्षय रोग) की गाँठों पर उक्त मंत्र से अभिमंत्रित भस्म लगाने से एक सप्ताह में स्वस्थ्य लाभ मिलने लगता है।

बिच्छू का विष नाशक मंत्र

धाय विसा देर॥

विधि :- साधक सर्वप्रथम ग्रहण-काल या पर्व-काल में सवा लाख मंत्र जप कर सिद्ध कर लें। पश्चात् रोगी के सामने उक्त मंत्र को जोर से बोलें और रोगी से जमीन पर हाथ या पैर पटकने को कहें। ऐसा ग्यारह बार कहने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

कुत्ता का विष दूर करने हेतु मंत्र

ॐ हसन हँसनी, कूकुर पलानी। खाट में लोटे। बाट में भूँकै, आउ-आउ सिद्ध यती। शब्द साँचा, फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा।

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु, दीपावली की रात्रि या ग्रहण-काल में दस माला इस मंत्र की जपें तो यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। फिर प्रयोग हेतु रविवार या मंगलवार के दिन कोरी सींक के झारें तो विष दूर हो जाता है।

सर्प-विष झाड़न हेतु मंत्र

आठ रकम के नाम, सोलह रकम का झाड़। बारह किसम का विद्या, तेरह किसम का हाक कुवारी काम। चण्डी-नरसिंह नाथ के नाग-नागिन, सिरी नारायण के सती-सबरिन। आज मेरो फूँका, माँ आबिस हो जाय।

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधक नाग-पंचमी के दिन इक्कीस दीप प्रज्जवलित कर उक्त मंत्र की दस माला जप करें और सात नारियल माँ दुर्गा को चढ़ाकर प्रसाद वितरित करें। पश्चात् इस मंत्र से झाड़ा करें तो सर्प विष दूर होगा।

कारावास-मुक्ति हेतु मंत्र

सम्पूर्ण ''हनुमान चालीसा'' का पाठ करे या निम्न लिखित मंत्र का जप करें।

ॐ हं हनुमते नमः ॥

विधि :- साधक श्री बजरंग बली नियमक सभी बातें ध्यान में रख कर हनुमान-चालीसा का पाठ करें। एक हनुमान चालीसा पाठ का विकल्प कर इस मंत्र का ग्यारह बार जप करना होता है। आपत्ति काल में लगातार चालीसा पाठ या मंत्र जप मन ही मन करते रहने से संकट यानि कारावास से मुक्ति या कारावास जाने से बचाव हो जाता है। बाद बच्चों में सवा किलो गुड़ और चने बाँटे इससे हनुमान जी प्रसन्न होते हैं।

अर्श नाशक मंत्र

ॐ छाई छुई छलक छलाई, आहुम् आहुम्, क्लं क्लां क्लीं हूँ॥

विधि :- साधक इस मंत्र को पहले ग्रहण-काल या पर्व काल में जप कर सिद्ध कर लें। पुनः जल को एक माला मंत्र से अभिमंत्रित कर रविवार और मंगलवार को शौच-स्वच्छ (आब-दस्त) करे यह क्रिया कम से कम सात रविवार करें बवासीर (खूनी-बादी) जड़ से नष्ट हो जाएगी।

सर्वांग-पीड़ा-निवारक मंत्र

उस पार आती बुढ़िया छुतारी, तिसके काँधे पे सरके पेटारी। वह पेटारी कौन सर बाण, सुशर कुषोरा शर-समान। ''अमुक'' अंग की व्यथा तन पीर। लवटि गिरे, उसके कलेजे तीर। आज्ञा पिता ईश्वर महादेव की दुहाई। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को सर्वप्रथम ग्रहण-काल में विधिपूर्वक सिद्ध करें। फिर प्रयोग के समय "अमुक" के स्थान पर रोगी का नाम लें। साथ ही, रोगी के रोग का स्मरण कर अपने बाँयें हाथ की अनामिका ऊंगुली से जितना नमक उठा सकें, उठायें और उस नमक को इक्कीस बार मंत्र जप कर अभिमंत्रित करें तथा यह नमक रोगी को अपने सामने खिलावें। इस क्रिया से ग्यारह दिनों में रोगी को स्वस्थ्य लाभ मिलने लगता है। इससे सभी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा दूर होती है।

ज्वर-नाशक मंत्र

सुरजना सरप बना, नज़र बना, तक बना, पाताल बना, सरदी पेड कीलां, दवाली-वताय कीलां, हज़रत खिजर ख्वाजा जुनेद पीर की चौकी॥

विधि :- इस मंत्र को पहले ग्रहण काल या पर्व-काल में दस माला जप कर सिद्ध कर लें। पुनः आवश्यकता पर रोगी के मस्तक पर हाथ रखकर उक्त मंत्र को इक्कीस बार जपें। ज्वर उतर जाएगा।

पेट-दर्द-नाशक मंत्र

हुदा खुदादा हुदा खुदा दे। रसुल दो हुदा चार पारदा। आयत कुरआन मजीद दी हुदा पीरा ने पीर दस्तगीर मीरा मोहीय्यूदीन दा बख्स फकीर दा॥

विधि :- साधक सर्व प्रथम इस मंत्र को चन्द्रग्रहण में सात सौ छियासी बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर उपरोक्त सिद्ध मंत्र को नीम की टहनी पर इक्कीस बार पढ़कर रोगी को चाटने के लिए दे दें। पेट दर्द दूर होगा।

पीलिया नाशक मंत्र

कौखा का पूत कौखा, धौखा मार कर वहाँ दूँ। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण-काल या होली-दीपावली में इक्कीस माला जप कर सिद्ध करें। पुनः प्रयोग के समय पीलिया के रोगी को सामने बैठा कर, चाकू से झाड़ें। पीलिया का नाश होगा।

टोना-टोटका नाशक मंत्र

लोहे का कोठा, वज्र किवाड़। तिस पर नावों बारम्बार। तेते नहीं पहिनहि एकहु बार। एक पष्ठा अनण्डा बाँधो। डोढ़ा मुठि बाँधो, तीर बाँधो। स्वर्ग- इन्द्र बाँधो, पाताले वासुकी नाग बाँधो। सैय्यद के पांव शरण, पाद की शक्ति। नरसिंह बदिकार, खेलु-खेलु शंकिनी डंकिनी। सात सेतर के संकरी, बारह मन के पहाड़। तेहि ऊपर बैठ, अब देवी चौताराकय। आन जंभाई जंभाई, गोरख की दुहाई। लोना की दुहाई। तैंतीस कोटि देवताओं की दुहाई। हनुमान की दुहाई, काशी कोतवाल भैरों की दुहाई। अपने नहीं कटारी, मार देवता खेल आप लेई काशी आदि। काशी पर पाप, तेरे देवता के कंध चढ़ाई, काट जो मनमहं क्षोभ राख॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल या पर्व काल में जप कर सिद्ध कर लें। फिर इस मंत्र से झाड़ा करने पर टोना-टोटका प्रत्यक्ष होकर परिचय देता है और फिर समाप्त हो जाता है।

सिर दर्द नाशक मंत्र

ॐ नमः आज्ञा गुरु की। केश में कपाल, कपाल में भेजा बसै। भेजा में कीड़ा, करे न पीड़ा। कंचन की छेनी, रूपे का हथौड़ा। पिता ईश्वर गाड़े इनको, थापे श्री महादेव तोड़े। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा॥

विधि :- साधक सर्व प्रथम इस मंत्र को ग्रहण, पर्व या रविवार को दस माला जप कर सिद्ध कर लें। फिर इक्कीस बार मंत्र को पढ़ते हुए भस्म से झाड़ें तो सिर दर्द दूर होगा।

डाकिनी दोष नाशक मंत्र

ॐ नमो नारसिंह पार्ईहार भस्मना।
योगिनी बन्ध, डाकिनी बन्ध, चौरासी
दोष बन्ध। अष्टोत्तर शत व्याधि बन्ध।
खेदी-खेदी, भेदी भेदी, मारे-मारे,
सोखे-सोखे, ज्वल-ज्वल, प्रज्वल-प्रज्वल।
नारसिंह वीर की शक्ति फुरो॥

विधि :- इस मंत्र को पहले शुभ मुहुर्त में सिद्ध कर लें तथा प्रयोग के समय साधक इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगिणी को सिर से पाँव तक एक सौ आठ बार झाड़ा करें।

चेचक हेतु शीतला माता का मंत्र

ॐ घट घट बैठी शीतला, फेरत आवे हाथ
ॐ श्रीं श्रीं श्रीं शब्द साँचा, फुरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधक किसी ग्रहण-काल, पर्व काल में इस मंत्र को जप कर सिद्ध कर लें एवं माता शीतला विषयक नियमों का पालन करते हुए नीम के पेड़ के नीचे माँ की पूजा कर इस मंत्र की एक माला जप कर नीम की डाली से झाड़ा (उतारा) करें तो माँ शीतला का प्रकोप शान्त होता है।

मासिक धर्म निवृत्ति हेतु मंत्र

ॐ नमो आदेश देवी मनसा माई, बड़ी-बड़ी
अदरक पतली-पतली रेशे। बड़े विष के जल
फाँसी दें, शेष गुरु का वचन न जाय खाली।
पिया पंच मुण्ड के बाम पद ठेली।
विषहरी राई की दुहाई फिरै॥

विधि :- इस मंत्र को सर्वप्रथम साधक होली या दीपावली पर्व में सिद्ध कर लें। पश्चात् एक अदरक के टुकड़े को एक सौ आठ बार अभिमंत्रित कर के रोगिणी स्त्री को खिलाना चाहिए। इसके प्रभाव से मासिक धर्म के कष्ट की निवृत्ति होती है।

पागल कुत्ते के काटे का विष नाशक मंत्र

**ॐ नमो कामरु देश, कामक्षा देवी, जहाँ बसे
इस्माइल योगी। इस्माइल योगी ने पाली कुत्ती।
दस काली, दस काबरी, दस पीली, दस लाल,
रंग बिरंगी दस खड़ी, दस टीको दे भाल।
इनका विष हनुमन्त हरे रक्षा करे गुरु गोरख
नाथ। सत्य नाम आदेश गुरु का॥**

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण की रात्रि में सिद्ध करें। आवश्यकता पर गोबर के उपले की भस्म को कुत्ते के काटे स्थान के चारों ओर एक सौ आठ बार जपते हुए लगा दें। कुछ दिनों तक यह प्रयोग करने से रोगी का विष दूर हो जाता है।

वंध्या (बांझ) निवारण मंत्र

**ॐ गुरु तात, गुरुमात, आगे पराता।
सुख से अलगा बान सोरा चौधरी मसान जगावे।
दोहाई नैना योगिनी के, सिद्ध गुरु के बन्दौ पाँव
जाहि कामिनी के लागे, ताहि कामिनी, लागी।
कामरू के विद्या (अमुकी) के कोइख लगा दे॥**

विधि :- इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद साधक इसे रात्रि के समय दोनों कानों में एक सौ आठ बार - ''अमुकी'' के स्थान पर बांझ स्त्री का नाम लेकर पढ़ें। इसके साथ ही नागकेशर का फूल और गाय का शुद्ध घी मिलाकर ''मासिक धर्म'' के चौथे दिन से प्रारम्भ कर सात दिन तक एक-एक माला मंत्र जप अभिमंत्रित कर औषधि सेवन करवायें। औषधि प्रातः सायं सेवन करवाने से वंध्या दोष दूर होता है और संतान की प्राप्ति होती है।

दाँत दर्द दूर करने हेतु मंत्र

**काहे रिसियाए, हम तो अकेला। तुम हो बत्तीस वीर हम जोला।
हम लावें, तुम बैठे खाव, अंत काल में संगहिं जाव।**

विधि :- मुख धोने के समय इक्कीस बार उक्त मंत्र को पढ़कर कुल्ला करने से दाँत की पीड़ा दूर होती है और दाँत नहीं हिलते। साधक सर्व प्रथम इस मंत्र को ग्रहण काल में जप कर सिद्ध कर लें, तत्पश्चात् प्रयोग करें।

हूक-पीड़ा-नाशक मंत्र

ॐ नमः सुमेरु गिरि पर लोना चमारी, कंचन कीरांपी-सोने की सुतारी। हूक, चाक, बाँह बिलारी, धरनी नाली कार-कूट खारी। सागर पार बहावो। लोना चमारी की दुहाई। फुरो मंत्र, कामाख्योवाच॥

विधि :- इस मंत्र को सर्व प्रथम साधक ग्रहण काल या पर्व काल में दस हजार मंत्र जप कर सिद्ध कर लें। पुनः दर्द वाले स्थान पर अंगूठे और ऊंगुलियों की सहायता से खींचते एक सौ आठ बार मंत्र पढ़ते हुए झाड़ा करें तो हूक पीड़ा दूर हो जाती है।

रक्षा हेतु मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। अपर कोठा, बिगड़ कोठा। पाताल राख, प्रहलाद राख। पाँव दे बीज। जंघा देवे कालिका। मस्तक राखे महादेव। जो कोई इस पिण्ड-प्राण को छेदे-छेदे, देव-देवता, भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी, कण्ठमाला तिजारी, सांझ को सवेरे को, सब किए कराए को स्वाहा पड़े। इसकी रक्षा नर सिंह जी करे।

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु नव-रात्रि में एक माला इस मंत्र की जप नित्य करें और फिर सिर से पाँव तक लाल धागा नाप कर, धागे को सात गांठ लगाकर एक सौ आठ बार अभिमंत्रित कर गले में पहनाने से सभी प्रकार से रक्षा होती है।

पेट दर्द नाशक मंत्र

पेट व्यथा, पेट व्यथा, तुम हो बलवीर। तेरे दर्द से पशु-मनुष्य नहीं स्थिर। पेट पीर लेवों पल में निकार, दो फेंक सात समुद्र पार। आज्ञा कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई॥

विधि :- इस मंत्र को विधि पूर्वक ग्रहण काल में सिद्ध कर ले। पुनः बाँयें हाथ से दर्द वाले भाग को स्पर्श करके इक्कीस बार उक्त मंत्र पढ़कर झटक दें, तो पेट-दर्द दूर हो जाता है।

किए कराये की शान्ति एवं वापसी हेतु मंत्र

ॐ वज्र मुष्ठि, वज्र किवाड़। वज्र बाँधौ दश द्वार, वज्र पाणि पिबेच्चाँगे। डाकिनी डापिनी रक्षोव सर्वांगे। मंत्र जयो शत्रु भयो। डाकिनी वायो, जानु वायो। कालि-कालि शामनते, ब्रह्मा की धीशु-साशु। डाकिनी मिलि-करि। मोरे जीड घात करेती। पत्ने पानी करे, गुआ कर। याने करे, सूते करे। परिहासे करे, नयन कटाक्षि करे। आपो न हाते, परहाते। जियति संचारे, किलनी पोतनी, अनिन्तुषवरी करे। एते विज्ञान अहिन न नगयो। मोहि करेत्साराकुठितिल्स्केम सरूपद्रे। ॐ मोसिद्धि गुरुपराय स्वीलिंग। महादेव की आज्ञा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि के बाद, मंत्र शक्तित्त जल पीने से सभी प्रकार के किए कराए (अभिचार) का नाश होता है एवं जो अभिचार किए रहता है उसी के ऊपर जा पड़ता है।

नेत्र-पीड़ा-नाशक मंत्र

सातों रीदा, सातों भाई। सातों मिल के आँख बराई। दुहाई सातों देव की। इन आखिन पीड़ा करै, तो धोबी को नाँद चमार के चूल्हे में पड़ै। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की साधना इक्कीस दिनों की है साधक इस मंत्र को होली या दीपावली से प्रारम्भ कर प्रतिदिन एक माला मंत्र का जप करें। इससे यह सिद्ध हो जाएगा। सिद्ध हो जाने के बाद इक्कीस बार मंत्र पढ़ते हुए आँख पर फूँक मारने से आँख दर्द दूर होता है।

रक्षा हेतु मंत्र

राम कुण्डली, ब्रह्मचाक। तेंतीस कोटि देवा देवा अमुक की बेड़ियाँ। अमुकेर अंकेर बाण काटम्। शर काटम्, संधान काटम्। कुज्ञान काटम्, कारवणे काटे। राजा राम चन्द्रेर बाणे काटे। कार आज्ञा, राजा रामचन्द्रेर आज्ञा। ऐई चण्डी अमुकेर अंगे शीघ्र लागूगे॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल या पर्व काल में जप कर सिद्ध कर लें। दस हजार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। फिर इस मंत्र का उच्चारण करके अपने चारों ओर रेखा खींचने से सदैव सुरक्षा होती है।

शरीर बंधन मंत्र

अकवन बीरा, चकवन पात। गात बाँधौ, छः दिन नौ रात। लोहे कोठरी बजर केवाड़, उसमें राखो आपन पाँचो पिण्ड और प्राण। कोई खोले ना खुले। कोई खोले, छाती फाट मरे। जान जी से जाय। ततवा खार नहाय, आ गए परदेश, जीया जान से। दुहाई बजरंग बली की।

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधक ग्रहण काल-पर्व काल, रवि-गुरु-पुष्य मकर संक्रांति महाशिवरात्रि में स्नान कर लाल वस्त्र पहनकर, ऊनी आसन पर पूर्व-मुख होकर बैठे और हवन विधान हेतु वेदिका बनाकर आम की समिधा में दस माला जप कर दशांश हवन करे तो यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। फिर आवश्यकता पर इक्कीस बार मंत्र पढ़कर बदन पर फूंके या शिखा में गांठ लगाायें।

डायन तथा दृष्टि-दोष नाशक

जल बाँका-थल बाँका, अमुकेर काया बाँका।
डाइनेर दृष्टि पढ़न पानी-सुनो गोमाया अधर
कहानी। समन काटि के माता दिहली, बर उज्जान
छोड़े भाठी। धर धूला बान, धूसर बान।
शब्द भेदी महाबान, एहि मंत्र पढ़े से।
ॐ हानिः श्री राम हुँकारे॥

विधि :- इस मंत्र को शुभ मुहुर्त में सिद्ध कर लें। पश्चात् इस मंत्र का उच्चारण करते हुए थोड़ी-सी धूल, राख, सरसों, पीड़ित व्यक्ति को मारने से रोगी ठीक हो जाता है।

कृत्या निवारण मंत्र

आई की, माई की, आकाश की, परेवा-पाताल की।
परेवा तेरे पग कुन-कुन। सेवा समसेर जादूगीर समसेर
की भेजी। ताके पद को बन्द कर, कुरु कुरु स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण या पर्व काल में सिद्ध कर लें। पुनः प्रयोग के समय एक नींबू को चार टुकड़ों से चीर कर। चारों टुकड़ों पर इक्कीस-इक्कीस मंत्र पढ़कर चारों कोनों में फेंक दें तो सारा किया कराया का दोष निवारण हो जाता है।

कुत्ते और गीदड़ का विष नाशक मंत्र

1. अमुकेर (   ) अंगेर, अमुकेर (काटने वाले पशु का नाम) विष से दो एई कांसार तेंतर सेंदो॥

अथवा

2. दोहाई मनसा-देवीर दोहाई। चिर माता विष हरि कतनिदयाओ। वोसे धरे मनसार॥

विधि :- इस मंत्र को सर्व-प्रथम साधक ग्रहण या पर्व काल में सिद्ध कर लें। पश्चात् रविवार को सूर्योदय के समय रोगी को अपने घर बुलायें। घर में दोनों एक साथ स्नान करें। पूर्व की ओर मुख कर के रोगी की पीठ पर स्वच्छ कांसे की थाली लगाकर उक्त मंत्र को ग्यारह बार पढ़कर फूँक मारें। हर मंत्र के बाद फूक मारते

रहने पर अगर रोगी को विष लगा है तो थाली चिपक जाएगी। जैसे ही विष निकल जाएगा। तो थाली अपने आप छूट जाएगी।

गाय-भैस की दूध वृद्धि हेतु मंत्र

वग्गी विल्ली, लोहा पाखर। गुरां सिखाए, ढ़ाई आखर। ढ़ाई अखरां दा एह स्वभाओ। ना घटे दुध, ना जाए धियो। सोने दी चाँटी, रूपे दी मदानी। दुध रिड़के, गौर जाँ रानी। गौरजाँ रानी, पाया फेरा। इस गाय-मझी दा दुध घियो मेरा। चले मंत्र, फुरे वाचा। देखूं-गौरजां, तेरे इल्म का तमाशा॥

विधि :- साधक इसे ग्रहण काल में इक्कीस हजार बार जप लें या बहती हुई नदी किनारे बैठकर इक्कीस दिनों तक एक-एक माला मंत्र जप करें और आटे की गोलियाँ बनाकर मछलियों को खिलायें। पश्चात् भस्म को अभिमंत्रित कर पशु को लगाएं या पानी इत्यादि में पशु को खिलाएँ।

हजरत पैगम्बर अली की चौकी का मंत्र

याही सार सार सार, जिन्न देव परी नवस्कंफार। एक खाय दूसरे को फार। चहुँ ओर अमिया पसार, मुलायक अस चार। दुहाई दस्तखे जिब्राइल। बाईं वे खैभि काइल, दाईं दस्न-दस्न। हुसैन पीठ खदे खेईं। आमिल कलेजे राखे इज्राइल। दुहाई मुहम्मद अली लाहइलाह की। कंगूर लिल्लाह की खाई, हज़रत पैगम्बर अली की चौकी। नख्त मुहम्मद रसुल्लिाह की दुहाई॥

विधि :- इस मंत्र को विधि विधान से सिद्ध कर लें। पश्चात् अपने रक्षार्थ इस मंत्र का प्रयोग करें। यह इस्लामी सर्वश्रेष्ठ रक्षा मंत्र है। इसे सात बार जप कर ताली बजायें, जब कहीं कोई करतब आदि दिखाना होवे। श्मशान साधना या अन्य प्रयोग में रेखा बनायें तथा रोगी को झाड़ने हेतु सात बार पढ़ें।

कान-सिर एवं आधा शीशी दर्द नाशक मंत्र

एक ब्राह्मण का सात बेटा, सातों ब्रह्मचारी।
कान झारे कपार झारे, झारे अधकपारी।
दोहाई ईश्वर-महा-देव, गौरा-पार्वती की।
दोहाई कवरू-कमइक्षा, नैना योगिनी की॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल-पर्व काल में सिद्ध कर लें। फिर सिद्ध मंत्र को इक्कीस बार पढ़ते हुए रोगी का सिर पकड़कर झाड़े, तो कान दर्द, सिर दर्द व अधकपारी की पीड़ा दूर होगी।

किया-कराया-वापसी मंत्र

ॐ वज्र में कोठा, वज्र में ताला। वज्र में बन्धया दश द्वारा, तहाँ वज्र का लग्या किवाड़ा। वज्र में चौखट, वज्र में कील। जहाँ से आया, तहाँ ही जाये। जान भेजा, जाकूं खाये। हमकूँ फेर न सूरत दिखाये। हाथ कूँ, नाक कूँ, कान कूँ, सिर कूँ, पीठ कूँ, कमर कूँ, छाती कूँ, जो जोखो पहुचावे। तो गुरुगोरखनाथ की आज्ञा फुरे। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि ग्रहण काल, पर्व-काल, रवि-पुष्प, गुरु-पूण्य योग में विधान पूर्वक जपने से होती है। प्रयोग के समय साधक सात कुओं या किसी नदी से सात बार जल लेकर इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगी को निर्वस्त्र करवा कर एकान्त में स्नान करवायें, तो रोगी के ऊपर का सभी प्रकार का अभिचार वापस चला जाता है।

चौकी बाँधने एवं खोलने हेतु दो मंत्र

आसन बाँधूं, बासन बाँधू, बाँधू अपनि काया।
चारि खूंट धरती के बाँधूं, हनुमत। तोर दोहाई॥

विधि :- इस मंत्र को साधक ग्रहण काल-पर्व कालादि में प्रारम्भ कर एक्तीस दिनों तक जप कर सिद्ध कर लें। प्रतिदिन एकमाला मंत्र जप से यह सिद्ध हो जाता है। पुनः प्रयोग के समय इससे चौकी बाँध कर सुरक्षा की जाती है तथा चौकी खोलने हेतु भी इसी विधि से निम्न मंत्र को सिद्ध कर बँधी हुई चौकी खोलें-

॥ मंत्र ॥

आसन खोलूँ, बासन खोलूँ, खोलूँ आपनि काया।
तेरे गुरु का दाना खोलूँ, चारि योग से पाया।
हनुमत! तोर दोहाई॥

टोना-टोटका नाशक मंत्र

सोम शनिश्चर भौम अगारी, कहाँ चललि देई अंधारी। चारि जटा वज्र-केवार, दीनहि बाँधो सोम दुवार। उत्तर बाँधो कोइला दानव, दक्षिण बाँधो क्षेत्रपाल। चारि विद्या बाँधि के, देउ विशेष भवर-भवर। दिधिल भवर गए, चलु उत्तरापथ योगिनी। चलु पाताल से वासुकी, चलु रामचन्द्र के पायक। अन्जनी के चीर लागे। ईश्वर महादेव गौरा-पार्वती की दुहाई। जो टोना रहे एदी पिण्ड, मंत्र पढ़ि फूंकै, टोना कइल न रहे॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु, ग्रहण काल, पर्वकाल या रवि पुष्प-गुरु पूण्य योग में जप कर मंत्र को सिद्ध कर लें। पुनः प्रयोग के समय इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगी को इक्कीस बार फूँक मार दे तो टोना-टोटका आदि के सभी दोष दूर हो जाते हैं।

विपत्ति नाशक ज्वाला माई का मंत्र

चार पहर, चार दीपक जलते। आठ पहर ज्वाला माई। दुःख-दरिद्र दूर कर दे, शिव भोले नाथ॥

विधि :- ज्वालामुखी माई (सिंगरौली) का यह आध्यात्मिक मंत्र है। इसका जप प्रतिदिन एक माला करने से ज्वाला मुखी माई की कृपा से साधक की सभी विपत्तियों का नाश होता है एवं सुख-समृद्धि की बरसात होनी है।

आसन हेतु मंत्र

ॐ आसन ईश्वर, आसन इन्द्र, आसन बैठे गुरु गोविन्द। अज्र आसन वज्र कपाट, अज्र जुड़ा पिण्ड सोहं द्वार। जो घाले अज्र पर घाव, उलट वीर वाही को खाव। आसन बैठे गुरु रामानन्द, दोऊ कर जोड़ आसन की रक्षा करें। देव तैंतीस कोटि देवता रक्षा करें। काया आसन बैठे लक्ष्मण यति। सोहं गोविन्द पढ़ि आसन पर। ॐ रँ सोहं मन की भर्मना दूरि खोये। रात्रि राखे चन्द्रमा, दिन को राखे भानु। धरती माता सदा राखै, कालि कंटक दूरी भागे। करेगा सो भरेगा, भक्तजनों की रक्षा वीर हनुमान करेगा।।

विधि :- इस मंत्र को सर्व प्रथम साधक शुभ-मुहूर्त में विधि पूर्वक जप कर सिद्ध करें। फिर कोई भी कार्य करते समय आसन पर बैठने से पहले अपने आसन पर इस मंत्र का जाप करते हुए फूँके मारकर बैठने पर कोई भी बाधा कार्य को तथा साधक को तंग नहीं करती।

टूटा हुआ अंग जोड़ने हेतु मंत्र

हाड़ जोड़ों, मांस काढो। रकत करो पानि,
सोने की चिड़िया। रूपे के पंख, पच जाय सूज।
दोहाई ईश्वर महादेव, गौरा-पार्वती की।।

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधक ग्रहण काल-पर्व-काल में साधना प्रारम्भ कर इक्कीस दिन तक नित्य पाँच माला जप करें तो यह मंत्र **सिद्ध होता है**। पुनः कड़वे तेल में सेंधा नमक मिलाकर उस पर एक माला मंत्र **जप कर इस तेल** की मालिश (लगाने) से टूटा हुआ सूजा हुआ अंग अच्छा **हो जाता है**।

किया कराया परिचय हेतु मंत्र

ॐ ओंकार सतगुरु प्रसादि, दुहाई खुदा दी, दुहाई रसूल दी, दुहाई पीर पैगम्बर की। दुहाई हजरत अली की, दुहाई अम्बर की, दुहाई मुहम्मद हनी फकीर की। दुहाई इक लख अस्सी हजार पैगम्बर दी, दुहाई बावन वीर की। दुहाई चौंसठ योगिनी, चौरासी सिद्ध नव नाथ की। साहापरी, बुबपरी, तखत परी,

हूरपरी, नूरपरी, लालपरी, सफेदपरी, साहापरी की दुहाई। कौन-कौन पकड़ चले, आगे कलुवा वीर चले, पीछे मुहम्मद वीर चले, हनुमन्त वीर चले, लंकु ढीपा वीर चले, अंगद चले। बावण वीर, चौंसठ योगिनी, सीध नौ नाथ हजरत साह भी। मके बान नदी नाव का पूरा देव-भूत, जिन-खवीसा। देवणी, भूतणी-जिननी-खवीसणी। चुड़ैल के लागे तीर, अट्ठाइस ठाम नौ सुता जाऊँ। मढ़ी मसानी रक्खेविरख वेग से, पकडिली आऊ। सिद्ध भैरों श्री बाला जती, भैरों श्री बाला जती, भैरों जती, लक्ष्मण जती, कुमार जती, डोडा जती, शुक्र जती, हणवंत जती, अंगद जती, भैरों भवाल क्षेत्रफाल, कालका माई का पूत। चढ़ी भट्ठी का जैतवार रौसा चले, जैसे नदी नाव का तीर। जिन, भूत को देव को, पलीत को खवीस को, डाकिणी को, सिहारी को। चार खूँट सैहं कारिलि आऊँ। बंद करे, सिर चढ़ खेले, मुख चढ़ बोले। गुरु की शक्ति हमारी भक्ति। फुरो मंत्र ईश्वर महादेव तेरी वाचा फुरै॥

विधि :- साधक सर्व प्रथम होली-दीपावली पर्व पर या ग्रहण काल में मंत्र जपकर सिद्ध कर लें। पुन: इस सिद्ध मंत्र को उच्चारित करते हुए फूँक मारने पर रोगी पर सभी किया-कराया अपना सही-सही परिचय देता है।

गर्भ-स्थान हेतु मंत्र

जल के लहू, रंक के हाड़ा। ऐसे कृपालु साहेब सिरजन-हारा। पदुम-पदारथ नाम हैं। ऐसे कृपा करिहा साहेब, तो "अमुक" के वंश उतारा। सत्य गुरु, सत्य गुरु, सत्य कबीर॥

विधि :- साधक इस मंत्र को शाबर मंत्र विधि से पहले सिद्ध करे। पश्चात् जिस स्त्री को संतान न होती होवे, तो स्त्री के नाम से एक नारियल, अगरबत्ती, लौंग, इलायची, पान, सुपारी लें। घी का दीपक जलाकर उक्त मंत्र की एक माला जप करें "अमुक" के स्थान पर स्त्री का नाम लें। यह क्रिया स्त्री के रजस्वला से निवृति होने के बाद करें, इससे स्त्री गर्भवती होगी।

रक्षा हेतु मंत्र

झाड़ि-झाड़ि कापड़ापिन्दि, वीर मुष्टे बांधिबाल, बुले एलाम मशान भूम होते भैरव, काटार हाते, लोहार बाड़ी, बाम हाते चामदड़ि। आज्ञा दिल राजा चुंड़ हाते। लोहार किला, मुद्गर धिनि, विगलि घुँडिकार आज्ञे। राजा चुडंगर आज्ञे, विग्लि घुँडि॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल-पर्व-काल में विधि-पूर्वक सिद्ध कर लें। मंत्र के प्रभाव से शरीर की समस्त प्रकार की व्याधियों से रक्षा होती है। ओझाओं के द्वारा वापसी करतब का मारण-करतब, हांडी, मूठ आदि से पूरी तरह सुरक्षा प्राप्त करने हेतु इस मंत्र का सात बार उच्चारण कर के अपने चारों तरफ रेखा खींच लें। इस क्रिया से लाभ मिलेगा।

चारपाई बाँधने हेतु मंत्र

मन छुबे आरी, झन छुबे बारी। झन छुबे पालंग हमारी, दास कबीर हे रखवारी। महा-देव के त्रिशूल भारी। पार्वती की महिमा न्यारी। खाट बाँधु-बाट बाँधु, बांधू पलंग-चौकी। काकर बाँधे ? मोर गुरु के बाँधे, महादेव-पार्वती के बाँधे। सत् नाम कबीरदास के, बाँधे जारे खाट बांधा जा॥

विधि :- साधक सर्व-प्रथम इस मंत्र को किसी पर्व-काल आदि में एक सौ आठ बार गुग्गल की धूप देकर सिद्ध करें। पुनः प्रयोग के समय, रात को सोते समय चार बार मंत्र को पढ़कर पलंग या खाट के चारों कोने में फूँक मारें। इससे अच्छी नींद आएगी, डर-भय, बुरे स्वप्न, चोर, सर्प, बिच्छु इत्यादि से रक्षा होगी।

चुड़ैल-दोष दूर करने के लिए मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। कवलाछरी बावन वीर, कलू बैठनो जल के तीर। तीन पान का बीड़ा खवाऊँ, जेठे बैठा जतलाऊँ। माली-मर तोर गत बहाऊँ। वाचा चूके तो कंकाली की दुहाई। मेरी भक्ति-गुरु की शक्ति। फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को शुभ मुहुर्त में जप कर सिद्ध कर लें। पुनः सिद्ध मंत्र का जाप करते हुए झाड़ा करने से चुड़ैल सम्बंधी समस्त दोषों से रोगी मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

रक्षा हेतु मंत्र

आय तुल कुरसी, विच फुरआन। आगे पीछे तू रहमान, लाइल्लाह का कोट, इल्ललाह की खाई। मोहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई। नज़र को बाँधू, डाकन को बाँधू। भूत को बांधू, योगिनी डेरा सब बला को बाँधू। ब हक्क या बुद्दूह, मदद मेरे पीर की। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण-काल, पर्व-काल में विधि पूर्वक जप कर सिद्ध करें। पश्चात् एक धागा लेकर उसके ऊपर सात गाँठें लगायें। प्रत्येक गाँठ पर इस मंत्र का जाप करके फूँक मारें और शक्तिकृत धागे को रोगी को धारण करवायें तो प्रत्येक बाधा का शमन होगा। इसे पहने रहने से सर्वत्र रक्षा होती।

वशीकरण के लिए मंत्र

शाखा होली-बन में फूली, ईश्वर देख-गौरजाँ भूली।
जो कोई शाखा होली आओ, भाओ राजा प्रजा लागे पाव।
सूते को जगा ले, जाते को मोड़ लें। नहीं मोड़े,
तो शंकर-महादेव की जटा, टूट धरती पड़े।
शब्द साँचो-पिण्ड काँचो। फुरो मंत्र, ईश्वर वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की साधना साधक, किसी शुभ मुहूर्त में आरम्भ कर, नियमित रूप से इक्कीस दिनों एकान्त में किसी शंखपुष्पी के पौधे के पास आसन लगाकर उक्त मंत्र का जप एक माला नित्य करें। प्रतिदिन पौधे की पूजा-अर्चना करें। पहले अपनी सुरक्षा हेतु रक्षा मंत्र पढ़ें तब जल ''शंख-पुष्पी'' पर चढ़ायें फिर सोलह श्रृंगार चढ़ाकर नित्य मंत्र जाप करें। बाईसवें दिन ''शंख-पुष्पी'' के पौधे को आदर सहित उखाड़ लायें। जड़ को काटकर अलग रख लें तथा पौधे की लताओं पर कपास की रूई लपेटकर चमेली के तेल से काजल बना लें। पुनः जब भी किसी कोर्ट-कचहरी, अधिकारी के समक्ष जाए तो कार्य बनें, सम्मान मिले एवं अर्थ लाभ होता है। कार्य में विघ्न आती हो, तो जड़ को तोड़कर दांत के नीचे रखकर जायें तो कार्य सम्पन्न होगा। यह अनुभूत मंत्र है।

चुड़ैल का झाड़ा हेतु मंत्र

ॐ पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, चारि का स्वर्ग पाताल। आँगन द्वार घर मंझार, खाट बिछौना गड़ई सोवनार, सागलन औ जेवनार। विरासों धावै फुलैल, लवंग सोपारीजे मुँह तेल। अबटन-उबटन औ अवनहान। पहिरण-लंहगा सारी जान। डोरा चोलिया चादर झीन, मोट रुई ओढ़न झीन। शंकर गौरा क्षेत्रपाला। पहिले झारो बारम्बार, काजल तिलक लिलार। आँखि नाक-कान कपार। मुँह चोटी कण्ठ अवकंश, काँध बाँह हाथ गोड़। अंगुरी नख धुकधुकी अस्थल। नाभी पेटी के नीचे जोनि चरणि। कत भेटी पीठ करि दाव। जांघ पेडुरी छूठी पावतर ऊसर अंगुरा चाम। रक्त माँस डाँड गुदी धातु। जो नहीं छडु अन्तरी कोठरी, कंरेज पित्त ही पित्त। जिय प्राण सब वित्त। बात अंकमने जागु बड़े, नरसिंह की आनु कबहुं न लाग फाँस। पित्तर राँग काँच, लोहरूप सोन साच पाट पट वशन। रोग जोग कारण, दीशन डीठि मूठि टोना। थापक, नवनाथ चौरासी सिद्ध के सराप। डाइन-योगिन चुरइल भूत व्याधि, परि अरि जेतुत मनै गोरख नैन। साथ प्रगटरे विलाऊ, काली औ भैरव की हाँक। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को शुभ मुहूर्त में सिद्ध करने के पश्चात् किसी एकान्त में रोगिणी को निर्वस्त्र करके नमक तथा पानी के साथ उपरोक्त मंत्र से झाड़ा करें।

पेट-पीड़ानाशक मंत्र

कंकर की सीला ऊठी, पत्थर का चीरा।
सीता माता काठन बैठी, कठे पेठ का पीड़ा।
सीता तेरा सत हेरे अरजुन तेरा बाण।
लाल विकट गोला गील, फिर राम की आण।
चाँदी का कठोरा, सोना का थाल।
सीता माता पुरसण लागी, महादेव खा जाय पेठ

की पीड़ भस्म हो जाय। शबद साँचा,
पिण्ड काँचा। चलो मंत्र, ईश्वरो वाचा।
राजा राम चन्दर का वचन, जुगो-जुग साँचा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधक शुक्लपक्ष के मंगलवार से प्रारम्भ करें। इक्कीस दिन तक एक माला मंत्र नित्य जपें। बाइसवें दिन श्री हनुमान जी को नारियल, भोग, लगोटा, मौसमी फल चढ़ाकर प्रसाद बच्चों में बाटें। पुनः इस मंत्र को पढ़कर झाड़ा करने से पेट दर्द में आराम मिलता है।

रोगादि दोष नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। गिरह बाज नटनी का जाया।
चलती बेर कबूतर खाया। पीवै दारू, खायजु माँस,
रोग दोष को लावै फाँस। कहाँ-कहाँ से लावेगा, गुदा
में सूं लावेगा, नौ नाड़ी बहत्तर कोडा सुं लावेगा। मार-
मार, बन्दी कर-कर लावेगा। न लावेगा तो अपनी माता
की शैय्या पर पाँव धरेगा। मेरा भाई, मेरा देखा-दिखलाया
तो मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरे मंत्र-ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को सर्व प्रथम साधक शाबर विधि से सिद्ध कर लें पुनः इस मंत्र का जाप करते हुए रोगी का झाड़ा करें तो रोगी के सभी रोग समाप्त हो जाते हैं।

सौत से पति-मुक्ति हेतु मंत्र

ॐ अंजनी पुत्र पवनसुत हनुमान वीर वैताल
साथ लावे मेरी सौत (अमुक) से पति को छुड़ावे,
उच्चाटन करे करावे, मुझे वेग पति मिले।
मेरा कारज सिद्ध न करो तो राजा राम की दुहाई॥

विधि :- इस मंत्र को सिद्ध करने हेतु साधक/साधिका सर्व प्रथम एक सियार सिंगी, दो हकीक पत्थर लें तेल का दीपक जलाकर पश्चिमाभिमुख आसन पर बैठ कर हकीक की माला से रात्रि के समय पाँच हजार मंत्र जप करें। प्रयोग के समय सियार सिंगी को अपने सामने रख दें, उसके सामने ही दोनों हकीक पत्थरों को भी रखें। एक पर पति का नाम लिखें दूसरे पत्थर पर सौतन का। फिर उक्त मंत्र का

जप पाँच हजार करें। जप समाप्ति के बाद जिस हकीक पत्थर पर स्त्री का नाम लिखा है, वह पत्थर सुनसान स्थान पर जमीन में गाड़ दें और जिस पत्थर पर पति नाम लिखा हो उसे व सियार सिंगी को सुरक्षित किसी संदूक आदि में रख दें। इस क्रिया से पति एवं सौतन की आपस में भयंकर लड़ाई होगी एवं भविष्य में उनमें किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

यह प्रयोग करने से जिसका पति किसी अन्य स्त्री के जाल में फंस गया हो, तो मुक्त हो जाता है।

नोट :- अगर कोई स्त्री कुलटा हो उस के पर पुरुष से संबंध हो तो उक्त मंत्र को सिद्ध कर लें, फिर उक्त सामग्री लेकर विधि पूर्वक पाँच हजार जप इस मंत्र का करें। सर्वप्रथम सियार सिंगी, दो हकीक पत्थर रख कर दें। एक पर स्त्री का नाम लिखे दूसरे पर कुछ न लिखे अपितु यह लिखें कि अमुक स्त्री से जिस पुरुष के भी सम्बन्ध हों, वह विच्छेद हो जाए। जप प्रारम्भ करें, जप पश्चात् सियार सिंगी व स्त्री का नाम लिखा पत्थर संदूक में रख दें, एवं दूसरे पत्थर को जमीन में गाड़ने से इनके सम्बन्धों में दरार आ जाएगी फिर वे कभी सम्बन्ध नहीं रखेंगे।

औपरे का कष्ट निवारक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का, मंत्र साँचा, कण्ठ साँचा। दुहाई हनुमान वीर की। जो जावे लंका जारी, लंका मझारी। आन लक्ष्मण वीर की, आन माने जाके तीर की। दुहाई मेमना पीर की। बादशाहजादा, काम में रहे आमादा। दुहाई कालिका माई की। धौलागिरि वारी, चढ़े सिंह की सवारी। जाके लंगूर है अगारी। प्याला पिये रक्त का चंडिका भवानी, वेदवाणी में बखानी। भूतनाचे-वैताल नाचे, राखे अपने भक्त की लाली। मेहर वाली-काली-कलकत्ते वाली। हाथ कंचन की थाली, लिए ठाड़ी। भक्त बालिका दुष्टन प्रहारी, सदा संतन हितकारी। उतर भूतराज जल्दी कर, नहीं तो खाय-तोको कालिका माई। उन्हीं की दुहाई, भक्त की सहाई-सारे संसार में माई। तेरी ज्योति रही जग-पकड़ के पछाड़ के मात, मत अबार कर। तेरे हाथ में कृपाण, भक्षण कर लें जल्दी आइके। जाय नाही भूत, पकड़ मात, जाय भूत उतर-उतर-उतर। न उतरे तो राम की दुहाई। गुरु गोरखनाथ का फन्दा करेगा तोय अन्धा। फुरो मंत्र हुं फट् स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र को शुभ मुहूर्त में पहले सिद्ध कर लें। फिर इस मंत्र को पढ़ते हुए यदि ओपरे से ग्रसित रोगी को नीम की पत्तों वाली टहनी से सात बार झाड़ा करें तो रोगी स्वस्थ्य हो जाता है।

तांत्रिक-बंधन-नाशक मंत्र

अब पारीस संभ्रम कायवेध, छेद का ज्ञान विज्ञान, फूटे। अमुकार गाय हंका चण्डी तो, हमारे माशिल पाथर परे। अमुकार गासे मारैस समारै सुमारै, रोड़ाँब उल्टा वेधे। विरूपाक्ष विराली, उल्टा वेधे-पिण्डोमानायै। मोरे पिण्डे करे, घा उल्टा वेधे। डॉक्तुलखाः फोड़-फोड़, दण्डी विरूपाक्षरे आज्ञा॥

विधि :- साधक इस मंत्र की सिद्धि उपरांत प्रयोग समय जब किसी को तांत्रिक बंधन से मुक्त करवाना हो तो, रोगी को प्रातःकाल इस मंत्र से शक्तिकृत कर तीन घूट जल पिलायें तो तांत्रिक बन्धन से मुक्ति मिलती है यह प्रयोग इक्कीस दिन करें।

स्त्री-पुरुष-विद्वेषण मंत्र

आक ढाक दोनों बगराई। "अमुका" "अमुकी" ऐसे लरे जस कुकुर-बिलाई। आदेश गुरु सत्य नाम को॥

विधि :- साधक इस मंत्र को रविवार या मंगलवार से प्रारम्भ कर इक्तालीस दिन तक नित्य इस मंत्र को जप कर सिद्ध करें। पश्चात् सूखी हुई ढ़ाक की टहनियाँ ले आयें और आक का ताजा पत्ता ले आकर पत्ते पर काली स्याही से यह मंत्र लिखें (अमुका-अमुकी की जगह स्त्री-पुरुष का नाम लिखें) फिर आधी रात के समय एकान्त में ढ़ाक की टहनियाँ जला करके यह मंत्र पढ़ते हुए आक का पत्ता उसमें डाल दें। पत्ते लिखते समय 108 पत्तों पर लिखकर रख लें और जलाते समय मंत्र जपते हुए एक मंत्र जप कर एक पत्ता डालें। इस क्रिया से स्त्री-पुरुष में परस्पर मन मुटाव हो जाता है।

जल-शान्ति मंत्र

पानी तीनि पानी ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जानी। शिव शक्ति आदि कुमारी अब छार मार सब तोही। की ताइ कहहुँ कतहुँ का हाउ धैले आउ। बालक के तोके मोके पुण्य जब होय। महादेव के जटा परे पार्वती के आँचर। जो यह बालक दुःख पावै।

विधि :- इस मंत्र को शाबर विधिनुसार सिद्ध कर लें। पुनः एक काँसे की कटोरी में शुद्ध जल लेकर इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर के रोगी बालक को पिलाने से बालक स्वस्थय हो जाता है।

रोग-नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। काली कमली वाला श्याम। उसको कहते हैं घनश्याम। रोग नाशे-शोक नाशे। नहीं तो कृष्ण की आन। राधा-मीरा मनावे- ''अमुक'' का रोग जावे॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल में सिद्ध करने के पश्चात् प्रयोग करें। यह मंत्र तब प्रयोग करें जब यह समझ न आए की वास्तव में रोग कौन सा है। तब ऐसे रोगी का इक्कीस बार झाड़ा करे इस मंत्र का उच्चारण करते हुए।

मृतवत्सा-दोष-नाशक मंत्र

छोटी-मोटी खप्पर, तूं धरती कितना गुण। जियके बल काट कूजान-विज्ञान दाहिनी ओर हनुमान रहे, बांयी ओर चील। चहुँ ओर रक्षा-करे वीर वानर नील। नील वानर की भक्ति लखि न जाय। जेहि कृपा मृतवत्सा दोष न आय। आदेश कामरु कामख्या माई का। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई॥

विधि :- मंत्र को शुभ मुहूर्त में साधक सिद्ध करने के पश्चात् मृतवत्सा-दोष से ग्रसित स्त्री का झाड़ा करने के लिए मछली पकड़ने वाला कांटा लाएं और इस मंत्र से सात बार फूँके। इसी मंत्र को जपते हुए स्त्री का इक्कीस बार झाड़ा करें और इस काँटे को ताबीज में भरकर कमर में पहनवा दें। इस क्रिया से निश्चित रूप से जीवित संतान उत्पन्न होगी।

घाव का विष नाशक मंत्र

गोरा वलद, कज्जलियाँ आखीं। सत सुक्के, सत द्वार। खड़ा हो जा विषा निराधार। धारा चले, धुकारा चले। महादेव दीया कारा चलै, जमालां देया नाग-देवता जहर वसैहर, तेरे सते ते निर्विष। गूगे छत्रिया, तेरे सो ते निर्विष॥

विधि :- इस मंत्र को साधक पहले किसी शुभ-मुहूर्त पर एक हजार बार जप कर सिद्ध कर लें। पश्चात् किसी घाव या फोड़े में शोथ या सूजन आ जाए, इस समय काली भेड़ की उन का डोरा लेकर उक्त मंत्र पढ़ते हुए एक गाँठ लगाए। इस तरह सात गाँठ लगाकर ऊन के डोरे को रोगी को पहना दें। इससे रोगी को तुरंत पीड़ा से राहत मिलती है और घाव भी सूखने लगता है।

नेत्र-दर्द नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का, समुद्र-समुद्र में खाई। इस मरद (....) की आँख आई, पाकै, फूटे न पीड़ा करें। गुरु गोरख की आज्ञा करें। मेरी-भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को सिद्धि के पश्चात् नमक की सात डली लेकर मंत्रोच्चारण करते हुए सात बार झाड़ा करें तो नेत्र-पीड़ा दूर हो जाती है।

पशु का कीड़ा नाशक मंत्र

ॐ नमो कीड़ा रे, तू कुण्ड कुण्डाला। लाल पूँछ तेरा मुँह काला। मैं तोय बूझा, कहाँ ते आया। तूँ ही तूने सबका खाया। अब तूँ जाय। भस्म होई जाय। गुरु गोरखनाथ करैं सहाय॥

विधि :- सर्व-प्रथम इस मंत्र को ग्रहण-काल, पर्व काल में सिद्ध कर लें। फिर प्रयोग के समय मंत्रोच्चारण करते हुए नीम की पत्ती युक्त टहनी लेकर पशु को झाड़ा सात बार करें तो पशु, रोगमुक्त हो जाता है।

तोहिया-ज्वर-नाशक मंत्र

कारी कुकरी-सात पिल्ला ब्याई। सातों दूध पिआई।
जिआई बाघ थन इलोकाँश्च लाये के, मंत्रे तीनों जाई॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु ग्रहण काल, पर्व-काल आदि में या किसी शुभ मुहुर्त में प्रारम्भ कर इक्कीस दिन एक माला मंत्र जप करें तो यह सिद्ध हो जाएगा। फिर रोगी को देखते हुए इस मंत्र का जप करते हुए इक्कीस फूँक मारें तो तीसरे दिन आने वाला ज्वर ठीक हो जाता है।

आधा-शीशी नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का, काली चिड़ी चिग-चिग करें। धौली आवै वासे हरै। जती हनुमंत हांक मारे, मथवाई और आधा-शीशी नाशै। गुरु की शक्ति-मेरी भक्ति। फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि करके साधक प्रयोग करें। मंत्रोच्चारण करते हुए रोगी का इक्कीस बार झाड़ा करने से आधा शीशी, मथवाय नामक रोगों का नाश हो जाता है।

वायु-गोला-नाशक मंत्र

कौन पुरवाई कहाँ चले, वन ही चले। वागहे के कोयला, कोयला का कर वेह। सारी पत्र खण्ड कर वेहु, अष्टोत्तर दाँत व्याधि काटे। सिर रावण का दश, भुजा रावण की बीस। ककुही वर वटी, वायु गोला बाँधूं-बाँधूं मैं गुल्म। दुहाई महादेव-गौरा-पार्वती-नील-कण्ठ की। लोना-चमारिन की दुहाई। फुरे मंत्र खुदाई॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि के बाद वायु गोला से पीड़ित व्यक्ति को उक्त मंत्र के जाप से झाड़ा करने पर वायु गोला ठीक हो जाता है।

दाँत-दाढ़-दर्द-नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का, बन में ब्याई अंजनी।
जिन जाया हनुमन्त, कीड़ा मकुड़ा माकड़ा। ये तीनों भस्मन्त।
गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- साधक सर्वप्रथम इस मंत्र को ग्रहण काल, पर्व-काल में सिद्ध कर लें। पुनः एक नीम की टहनी लेकर दर्द के स्थान पर छुआते हुए सात बार मंत्रोच्चारण करें। इस क्रिया से दाँत-दाढ़ का दर्द समाप्त हो जाएगा।

नाभि-बैठाने हेतु मंत्र

ॐ नमो नाड़ी नाड़ी, नौ से नाड़ी, बहत्तर कोठा। चलै अगाड़ी-डिगै न कोठा। चले नाड़ी रक्षा करें यती हनुमन्त की आन। शब्द साँचा-पिण्ड काँचा। फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को साधक पहले होली-दीपावली या किसी शुभ मुहूर्त पर सिद्ध करें। फिर एक पोला बाँस लें। जिसमें नौ गाँठे हों। रोगी को लिटाकर के उसकी नाभि के ऊपर यह बाँस खड़ा करके मंत्रोच्चारण करते हुए बाँस के छेद में जोर-जोर से फूँके मारते रहे तो उखड़ी हुई नाभि ठीक हो जाएगी।

नेत्र-फूला-नाशक मंत्र

उत्तर काल काछ, सुत्त योग का बाछ। इस्माइल योगी की दो बेटी। एक माथे चूल्हा, एक काटे फूला। दुहाई लोना चमारी की। शब्द साँचा-पिण्ड काँचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- सर्व प्रथम साधक इस मंत्र को विधि से सिद्धि करें। पुनः एक लोहे की कील लेकर इस मंत्र का मन ही मन उच्चारण करते हुए धरती पर कील ठोकें। यह क्रिया इक्कीस बार करने से नेत्र फूला ग्रसित व्यक्ति को स्वस्थ्य लाभ मिलने लगती है।

दाढ़-पीड़ा-नाशक मंत्र

ॐ नमो कामरु देश कामाख्या देवी। जहाँ बसे इस्मायल योगी। इस्मायल योगी ने पाली गाय। नित उठ चरवा वन में जाय। वन में चरे सूखा घास खाय। पिय के गोबर किया जामें निपज्या कीड़ा। सात सूत सुताला-पूँछ पुछाला। धड़ पीला-मुँह काला, डाढ़ दाँत गालै-मसूढ़ा गालै। मसूढ़े करै तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई। शब्द साँचा पिण्ड काँचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद लोहे की तीन कीलें लेकर इस मंत्र का सात बार जप करते हुए कीड़ा लगी एवं दर्द करती दाढ़ पर कीलें छुआते हुए फिर तीनों कीलों को किसी लकड़ी या पेड़ के तने में ठोंक दें तो दाढ़ की पीड़ा ठीक हो जाती है।

नकसीर नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का, सार-सार महा-सागरे बाँधू। सात बार फिर बाँधू। तीन बार लोहे की तार बाँधू। सार बाँधें हनुमन्त वीर। पाके न फूटे-तुरन्त सेखे। आदेश-आदेश-आदेश॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि ग्रहण काल-पर्व काल में जप कर करें। फिर जब किसी को नकसीर आती हो तो मंत्र जप करते हुए नाक का झाड़ा करें तो नाक का रक्त गिरना बंद हो जाएगा।

बगली दर्द नाशक मंत्र

वात्-वात् अकाल वात्। अन्ध वात्-कुनकुने वात्। कुट कुटरे वात्। आभार प्रति चक्रे शीघ्र फाट् तौमार डांके। पवन पुत्र हनुमान कार आज्ञाय। राजा श्री रामेर आज्ञाय।

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि करने के पश्चात् देह में वात प्रकोप के कारण बगल में दर्द होने पर रोगी को मंत्रोच्चारण करते हुए सात बार फूँके तथा सरसों का तेल से दर्द वाले स्थान पर मालिस करे तो दर्द जाता रहेगा।

बवासीर-नाशक मंत्र

**खुरासन की टेनीशाह, खूनी बादी ।
दोनों जाह। उमती उमती-चल चल स्वाहा॥**

विधि :- इस मंत्र को विधि से सिद्ध करने के बाद खूनी एवं बादी बवासीर हेतु शौच करने के बाद गुदा प्रक्षालन हेतु लिए जाने वाले जल को मंत्र द्वारा तीन बार फूँक कर गुदा प्रक्षालन करवाये तथा स्नान करके लाल रंग का कच्चा सूत लेकर उसके पाँच तार एकत्र करके मंत्र जपते हुए तीन गाँठे लगाएं। पुनः 21 बार मंत्र जप करके यह धागा रोगी के पाँव के अंगूठों में बाँध दें तो दोनों प्रकार की बवासीर नष्ट हो जाते हैं।

अनियमित-मासिक धर्म हेतु मंत्र

ॐ नमो आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु का। तोड़ूं गाँठ औंगा ठाली। तोड़ दूँ लाय, तोड़ दूँ सरित परिंत देकर पाय। यह देख हनुमन्त दौड़कर आये। ''अमुक'' की देह शान्ति पाए। रोग कूँ वीर भगाए, रोग न नसै तो नरसिंह की दुहाई। फुरे हुकुम खुदाई॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण, पर्व या शुभ मुहूर्त में सिद्ध कर लें। फिर एक सादा पान बनवा कर इस मंत्र से पान को सात बार फूँके और रोगिणी को खिला दें तो उसका मासिक नियमित हो जाएगा।

पीलिया नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। श्रीराम सर साधा, लक्ष्मण साधा बाण। काला पीला रीता। नीला थोथा पीला पीला झड़े तो रामचन्द्रजी रहै नाम। मेरी भक्ति-गुरु की शक्ति। फुरे मंत्र ईश्वरी वाचा॥

विधि :- साधक इसे होली-दीपावली पर सिद्ध करके प्रयोग के समय एक कांसे के पात्र में जल भर के नीम के पत्तों को सरसों के तेल में भिगोकर रोगी का इस मंत्र को उच्चारित करते हुए सात बार झाड़ा करें, शीघ्र लाभ होगा।

तिल्ली-नाशक मंत्र

ॐ नमो हुताश परवत, जहाँ पर सुरह गाय। सुरह गाय के पेट मा तिल्ली। दबा-दबा तिल्ली कटे, सरकण्डा बड़े फिया कटे। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- मंत्र सिद्धि के उपरान्त साधक चाकू लेकर इस मंत्र को जपते हुए रोगी के समक्ष धरती पर आठ रेखायें खींचें और फिर उन्हें काट दें। इस उपाय से तिल्ली से पीड़ित व्यक्ति रोग मुक्त हो जाएगा। उसे धीरे-धीरे स्वास्थ्य लाभ मिलने लगता है।

कान-दर्द-नाशक मंत्र

ॐ कनक प्रहार, धन्धर छार। प्रवेश कर डार-डार, पात-पात, झार-झार, मार-मार, हुँकार-हुँकार। शब्द साँचा-पिण्ड-काँचा ॐ क्रीं क्रीं॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल में जप कर सिद्ध कर लें। पुनः कान दर्द से पीड़ित रोगी को स्वस्थ करने के लिए साँप के बिल की मिट्टी लाकर, उसे इक्कीस बार अभिमंत्रित करें और फिर इस मंत्र का सात बार जप करके मिट्टी कान से लगायें तो रोग ठीक हो जाएगा।

ज्वर-नाशक मंत्र

ॐ नमो अजयपाल की दुहाई। जो ज्वर रहे "अमुक" पिण्डे। तो महादेव की दुहाई। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- साधक सर्वप्रथम इसे नवरात्रि में इक्कीस माला जप सिद्ध करें। फिर मंत्रोच्चारण करते हुए सात बार झाड़ा करें तो रोगी का ज्वर समाप्त होगा।

ज्वर नाशक मंत्र

मनसा मेदाम, नवमे कपटी बसे कपाल। हाव के भले हनुमन्त की आन। सीसी जंग पाढ़ान बिचान, मंत्र शान्ति गायत्री ताम सेन देवता मोहज्ञा राजा। तिजाट, एक ज्वरा, तिन ज्वरा, चारि ज्वरा, पाँच ज्वरा, सात ज्वरा। जोर है तो राजा अजयपाल का चक्र बहे। तैंतीस कोटि देवता मेरे मंत्र की शक्ति से चलें। चोंचन खण्ड में जायें, चीर न मारे वादा न खाये। क्षणे बाम, क्षणे दक्षिण क्षणे आसे होर। अचन सोरो स्मरिरे काया विख्यात होर॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल, पर्व-काल, गुरु पुण्य, रवि पूण्य योग आदि में इक्कीस माला मंत्र जप कर सिद्ध करें। पश्चात् कैसा भी ज्वर हो इस के मंत्रोच्चारण द्वारा झाड़ा करने से रोगी स्वस्थ्य हो जाएगा।

प्रसव हेतु मंत्र

ॐ कौंरा देव्यै नमः। ॐ नमो आदेश गुरु का। कौंरा वीर का बैठी हात। सब दिराह मज्ञाक के साथ। फिर बसे नाति विराति। मेरी भक्ति-गुरु की शक्ति कौंरा देवी की आज्ञा॥

विधि :- इस मंत्र को साधक पहले सिद्धि कर लें। पुनः प्रसव के समय कष्ट उठा रही स्त्री को इस मंत्र से शक्तिकृत जल पिलाने से स्त्री बिना पीड़ा के बच्चे को जन्म देगी।

पीड़ा नाशक मंत्र

कहाँ से आया गुरु, कहाँ से आया चेला ? कहाँ से आया मुहम्मद पीर? स्वर्ग से आया गुरु, पाताल से आया चेला, मक्का-मदीना से आया पीर मुहम्मद। साथ आये शंकर भोले, क्षण में जाए पीड़ा। चले मंत्र, ईश्वर महादेव का वाचा फुरे॥

विधि :- साधक शुभ मुहूर्त में इक्कीस माला जपें या इस मंत्र का नित्य जप एक माला कर इसे सिद्ध कर लें पुनः किसी भी प्रकार की पीड़ा होने पर भस्म से झाड़ा करें तो पीड़ा दूर हो जाएगी।

माथा-दर्द नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का, बाल में कपाल। कपाल में भेजा, भेजे में कीड़ा। कीड़ा करे पीड़ा, सोने की शलाका। रूपा का हथौड़ा, ईश्वर गढ़े गौरिया तोड़े। इनका शाप श्री महादेव तोड़े। शब्द साँचा-पिण्ड काँचा। फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल, पर्व काल या शुभ योग में सिद्ध कर लें। फिर थोड़ी सी भस्म लेकर इस मंत्र से सात बार फूँक कर माथे पर लगाने से माथे की पीड़ा शांत हो जाती है।

गण्डा देने हेतु मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। जागे गणेश देवता, मुहम्मदा वीर जागे। काले घोड़े को बाँधों, काली घोड़ी को बाँधो। बिजली को बाँधो, लगे-लगाए को बाँधो। भेजे-भेजाए को बाँधो, हाकिन-डाकिन को बाँधो। सुलेमान पीर पैगम्बर की होय दुहाई। फुरो मंत्र, ईश्वर महादेव का वाचा फुरो॥

विधि :- साधक इस मंत्र को शुभ मुहूर्त में सिद्ध कर लें। दस हजार जप से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर तांत्रिक बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को उक्त मंत्र से अभिमंत्रित गण्डा-धागा देने से लाभ होगा।

आंव (पेचिस) नाशक मंत्र

झमकरि झमकरि झमकरि, भूरिखण्डा विखंडा तो धूमकरि। घूस घूमाइया ताहे, स्फटिकेर मुन्डि मूल करि गरल भाव हं। ह्यानुकिक आति बड़ भिड़ि, ऐ ऐ वीर सो भट सम्भवे, भरमहा धर्मेर आज्ञा। पेट समान-बाप खान, भूमि गमने न छाड़ि दे दान। विमातृ खानि सहोदर साक्षी माथेर हाथ बाड़ाइलि। कानाजूम करि रत्नाकर समुद्रे। दिले भाषाइया, बात-बात चात धूप खाओ। अवतार कहे मोरे महि मण्डल भर कर। एकांधे था किया, पर काँधे पड़ मोर। बोले आसिवि मोर बोले जावि। क्रीं कारे छाड़ियां जावि महाकालीर आज्ञा॥

विधि :- इस मंत्र को नवरात्रि में इक्कीस माला जप कर सिद्ध कर लें। यह चुटकी मंत्र है इस मंत्र को उच्चारित करते हुए रोगी के सिर से पाँव तक चुटकी बजाते हुए झाड़े तो आंव रोग ठीक हो जाता है।

थनैली रोग नाशक मंत्र

तू काली, तू कामणी, कलुआ छप्पर छाए। दुध्दी अपनी ठाकां, पीड़ ''फलानी'' की जाए। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को साधक ग्रहण अथवा होली, दीवाली में एक हजार जप कर मंत्र सिद्ध करें। जब किसी स्त्री के स्तन में रोग हो, तो ''फलानी'' की जगह स्त्री का नाम लें। स्त्री के दाये स्तन में अगर रोग है तो साधक अपने बांयें स्तन पर भस्म हाथों में लेकर मंत्र जप करें। बायें स्तन पर होने से मंत्रज्ञ (साधक) अपने दायें स्तन को झाड़े तो रोगी स्त्री का रोग नष्ट हो जाता है।

अण्डकोष-वृद्धि रोग नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। जैसे कै लेहु रामचन्द्र कबूत, औसई करहु राध बिन कबूत। पवनपूत धाऊ हर हर रावण, कूट मिरावन। श्रवई अण्ड खेतहि श्रवई अण्ड, अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवई। बाजं गर्भहि श्रवई-स्त्री खीलहि श्रवई शाप। हर-हर जंबीर हर जंबीर हर हर हर॥

विधि :- साधक इसे ग्रहण, पर्व या शुभ योग में सिद्ध करे। पश्चात् मंत्रोच्चारण करते हुए अंडकोष को मसलते रहें और फूँकते रहें तो बढ़े हुए अण्डकोष ठीक हो जाते हैं।

बवासीर-नाशक मंत्र

ॐ काका कता क्रोरी कर्ता, ॐ करता से होय। यरसना दश हूँस प्रकटे। खूनी बादी बावासीर न होय। मंत्र जान के न बताए। द्वादश ब्रह्म-हत्या का पाप होय। लाख जप करे तो उसके वंश न होय। शब्द साँचा पिण्ड काचा। हनुमान का मंत्र साँचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- साधक इसे ग्रहण, काल, पर्व-काल आदि में दस माला जप कर सिद्ध करें। फिर प्रयोग समय रात्रि का धरा हुआ पानी लेकर, इस मंत्र से इक्कीस बार शक्ति कृत करके गुदा प्रक्षालन करवायें तो खूनी एवं बादी दोनों बवासीर ठीक हो जाती है।

कमर-दर्द-नाशक मंत्र

चलता जाये, उछलता जाये, भस्म करन्ता।
डह-डह जाये सिद्ध गुरु की आन। महादेव की शान
शब्द साँचा पिण्ड काँचा। फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि ग्रहण, पर्व आदि में दस हजार मंत्र जप से होती है। साधक सिद्धि के पश्चात् इस मंत्र को जपते हुए झाड़ा करें। इसके बाद काला धागा लेकर रोगी के सिर से पाँव तक नाप कर अलग कर लें और धागे को इक्कीस बार मंत्र से शक्तिकृत करके धारण करवा दें तो शीघ्र ही कमर दर्द से मुक्ति मिल जाती है।

विद्वेषण हेतु मंत्र

इस अध्याय में विद्वेषण कर्म से सम्बंधित मंत्र एवं विधि-विधान वर्णित किए गए हैं।

मित्र विद्वेषण मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु सत्य नाम का। बारहा सरसों तेरहा राई, बाट की मिठी-मसान की छाई। पटक मारुकर जलवार ''अमुक'' फुटे देखन ''अमुक'' द्वार। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र 'ईश्वरो' वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण कालादि में सिद्ध करने के बाद थोड़ी पीली सरसों, थोड़ी राई, थोड़ी मेथी, आम और ढाक वृक्ष की सूखी लकड़ी लें आयें और फिर श्मशान में जाकर किसी चिता की राख लें आयें। अब हवन हेतु वेदी बनाकर सभी सामग्री को मिलाकर मंत्रोच्चारण करते हुए हवन करें, तो दोनों मित्रों में परस्पर विद्वेषण हो जाएगा।

स्त्री-पुरुष विद्वेषण मंत्र

आक-ढाक दोनों बगराई। ''अमुका'' ''अमुकी'' ऐसे लरे जस कुकुर बिलाई। आदेश गुरु सत्य नाम का॥

विधि :- इस मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात् साधक सूखी हुई ढाक की टहनियाँ लें आयें और आक का ताजा पत्ता लाकर इस पत्ते के ऊपर काली स्याही से उक्त मंत्र लिखें और आधी रात के समय एकांत में जाकर ढ़ाक की टहनियों को जलाकर यह मंत्र पढ़ते हुए आक का पत्ता उसमें डाल दें। यदि 108 पत्ते डाल सकें तो प्रयोग अतिशीघ्र प्रभावी होगा और इच्छित व्यक्तियों में परस्पर मन-मुटाव हो जाएगा।

वशीकरण हेतु मंत्र

इस अध्याय में वशीकरण कर्म के मंत्र एवं विधि-विधान का वर्णन किया गया है।

इत्र-वशीकरण भैरव मंत्र

**ॐ काला भैरूँ, बावन वीर, पर त्रिया को करदे सीर।
पर-त्रिया-छः अगन कँवारी, पर जोबन में लागे प्यारी।
चम्पा के फूल जू आवे बास, घर का धनी की छोड़ दे आस।
कपड़ा से बाद भरावे, अंग से अंग मिलावे।
तीजी घड़ी-तीजी शाद, अंग से अंग न मिलावे, तो माता
कंपाली की सेज पर काला भैरूँ पग धरे।
शब्द साँचा-पिण्ड काँचा। फुरो मंत्र-ईश्वरो वाचा॥**

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधक श्री भैरव विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए श्मशान में स्थित भैरव मंदिर में या श्मशान में चिता के पास बैठकर, अपनी सुरक्षा करके चमेली की माला, पंचमेवा, बाती, सात लौंग, जोड़ा, पताशे, शराब, धूप, बकरे की कलेजी, नित्य भैरव की भेंट रखकर उक्त मंत्र की एक माला जप करें। यह क्रिया ग्यारह दिन करना है। ग्यारहवें दिन हवन करें तो मंत्र सिद्ध होगा। जप के समय एक शीशी इत्र की रखें, इस इत्र को शक्तिकृत करते रहें। यही शक्तिकृत इत्र जब किसी को वश में करना हो तो थोड़ा सा रुई के फाये में लेकर (साध्य) स्त्री को सावधानी से लगा दें। तो वह बस में हो जाएगी।

आकर्षण हेतु श्री भैरव मंत्र

**ॐ काला भैरव कपिला केश, कानों कुण्डल
भगवा वेश। जो मन धरो तो लंका जाय रावण
को मारो, तिसने काज ईश्वर का समारौ।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥**

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि ग्रहण काल में ग्यारह माला मंत्र जप, दशांश हवन, भोगादि देकर करने से होता है। फिर प्रयोग हेतु जब कोई व्यक्ति घर से रूठ कर चला गया हो तो "साध्य" व्यक्ति के पहने हुए कपड़े के ऊपर "यथास्थान" इस मंत्र को भी लिखें फिर इक्कीस दिन तक मंत्र पढ़े इस कपड़े को चक्की या चरखे में बाँध कर उल्टा घुमायें। यह क्रिया करते समय मंत्र जप करते रहें। चक्की को एक सौ आठ बार घुमाना हैं। इससे भागा हुआ व्यक्ति अवश्य लौट आता है।

प्रेम-भाव बढ़ाने हेतु कालिका मंत्र

ॐ आदि काली-युगादि काली, इन्द्र की बेटी-ब्रह्मा की साली। साहस की काली-माथे ही जटा, बावरी वाली। चलाई चले न बोलाई- आवे त्या कारण गुरु गोरख आवै। मोहन मुद्रा वशी करूँ, मोहूँ सगरो गाँउ, मोहूँ सगरी जाति। बाँये हाथ खड्ग-दाहिने हाथ खपारिया। नगर में पैठत बोरो सब मंत्री, मांस की डली-गुग्गुल की वास। जब सुमिरौ तब कालिका खड़ी मेरे पास। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र के नित्य एक माला जप से साधक को हर व्यक्ति प्रेम करने लग जाता है और माँ की कृपा बनी रहती है।

टीका (वशीकरण हेतु) हनुमान मंत्र

माता अंजनी का हनुमान मैं मनाऊँ, तूं कहना मान पूजा दूँ। सिन्दूर चढ़ाऊ "अमुक" रिझाऊँ, "अमुक" को पाऊँ। यह टीका तेरी शान का वह आवे, जब मैं लगाऊँ। नहीं आवे, तो राजा राम की दुहाई। मेरा काम कर नहीं आवे, तो अंजनी की सेज पड़॥

विधि :- इस मंत्र का अनुष्ठान सात दिन का है। साधक श्री हनुमान विषयक नियम का पालन करते हुए नित्य एक माला मंत्र जप कर इसे सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकता पर श्री हनुमान जी को पूजा देकर इस मंत्र को जपते हुए सिन्दूर का टीका लगाकर अभिलाषित व्यक्ति के पास जाय तो वह वश में होगा।

कामदार वशीकरण मंत्र

बिसमिल्लाह दाना कुल्हू अल्लाह या दाना दिल है। सख्त तुम हो दाना, हमारे बीच ''फलाँ'' को करो दिवाना॥

विधि :- इस मंत्र की इस्लामी विधि से सिद्धि के पश्चात् इकतालिस बिनोले लें और इन्हें अलग-अलग शक्तिकृत करें फिर अर्धरात्रि के समय मंत्रोच्चार करते हुए एक एक बिनोले अग्नि में डाले तो तीन दिन में मनोरथ सिद्ध होगा। सिद्धि की दूसरी विधि ऐसे है। प्रथम इक्कीस दिन तक इक्कीस बिनौलों पर इक्कीस-इक्कीस बार मंत्र जप कर आग में डालने से मंत्र सिद्ध हो जाएगा।

''कामदार'' कामदार वर्तमान समय में किसी उच्चाधिकारी, व्यवसायी या अन्य सत्तारूढ़ व्यक्ति के नीचे कार्य करने वाला, सलाहकार, सचिव या व्यक्ति गत सहायक (पी.ए.) आदि को समझना चाहिए। कभी आवश्यकता में इस प्रयोग को करने पर तीन दिन में कार्य सिद्ध हो जाता है।

उच्चाटन हेतु मंत्र

इस अध्याय में उच्चाटन कर्म से सम्बंधित मंत्र एवं विधि विधान का वर्णन है।

उच्चाटन के लिए मंत्र

सफेद कबूतर काले कबूतर, काट काट के मैं चढ़ाता। काली के बेटे तुझे बुलाता। लौंग सुपारी ध्वजा नारियल मदिरा की मैं भेंट चढ़ाता। काली विद्या मैं चलाता। बावन भैरों चौंसठ योगिनी बने इस काज सहयोगिनी। ॐ नमो आदेश, आदेश, आदेश॥

विधि :- इसे कालरात्रि के समय सूर्योदय तक लगातार जपें। फिर होली वाले दिन श्मशान में जाकर काला कबूतर काटकर डाल दें। दीपावली की रात को फिर इसे लगातार पढ़े, तत्पश्चात् सफेद कबूतर काटकर उसका पंजा अपने पास रखकर शेष श्मशान में छोड़ दें। अब किसी भी शनिवार को जब चतुर्दशी तथा कृष्णपक्ष हो, श्मशान में जाकर जलती हुई चिता के समक्ष बैठकर इसे लगातार जपें भोर होते ही उसकी राख लेकर प्रस्थान करें। यह राख इसी मंत्र से शक्तिकृत करके जिसे छुवा देंगे उसका तत्काल उच्चाटन होता है।

मसानी उच्चाटन मंत्र

कालीननागिन। शिर जटा, ब्रह्मा खोपड़ी हाथ। मरी मसानी न फिरे, गुरु हमारे साथ। दुहाई ईश्वर महादेव- गौरा पार्वती की। दुहाई नैना योगिनी की॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल में लगातार जपते हुए सिद्ध करके फिर प्रयोग करें। जो व्यक्ति इस रोग का शिकार होता है वह प्राय: गुमसुम रहता है तथा दिन प्रतिदिन वह सूखता चला जाता है। वह भयानक प्रयोग प्राय: स्त्रियों के प्रति किया करते हैं। आपके पास जब इस रोग से पीड़ित व्यक्ति आए तब आप गाय के उपले की राख को कपड़े से छानकर रख लें तथा इस मंत्र से इक्कीस बार अभिमंत्रित करके मसानी के रोगी को खिला दें, तथा पेट पर लगा दें, ऐसा तीन बार करने से मसानी का उच्चाटन हो जाता है।

स्तंम्भन हेतु मंत्र

इस अध्याय में स्तम्भन कर्म हेतु मंत्र एवं विधि-विधान का वर्णन किया गया है।

मोच-स्तम्भन हेतु मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। श्रीराम को मचक उड़ाई। इसके तन से तुरन्त पीर भागि जाय। न रहे रोग-पीड़ा, फूँक से हुई सब पानी। ''अमुक'' की व्यथा छोड़ भाग तूं मचकानी। न भागे पीड़ा तो महादेव की दुहाई। आदेश सिया राम लखन गुसांई॥

विधि :- साधक सर्व प्रथम इस मंत्र को ग्रहण-काल, पर्व-काल या रवि-पूण्य-गुरु-पूण्य योग में प्रारम्भ कर इक्कीस दिन तक नित्य एक माला इस मंत्र की जपें। सिद्ध होने के बाद जब किसी को मोच आ जाय तो सरसों का तेल लेकर इस मंत्र से अभिमंत्रित करके मोच के ऊपर मालिस करें तो, पीड़ा दूर हो जाती है।

मसान-दोष नाशक मंत्र

सपेदा मसान, गुरु गोरख की आन। मयदण्ड मसान, काल भैरों की आन। सुकिया मसान, नोना चमारी की आन। फुलिया मसान, गौरे भैरों की आन। हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन। पीलिया मसान, दिल्ली की योगिनी की आन। कमेदिया मसान, कालिका की आन। कीकड़िया मसान, रामचन्द्र की आन। सिलसिलाया मसान, वीर मोहम्मदा पीर की आन॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि ग्रहण-काल, पर्व-काल में दस हजार मंत्र जप करने से सिद्धि होती है। फिर सिद्ध मंत्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा करने से बालक को मसान-दोष से मुक्ति मिल जाती है।

मृगी निवृत्ति मंत्र

ॐ हलाहल सरगत मंडिया पुरिया श्री राम जी फूँके मृगी बाई सूखे सुख होई ओं ठः ठः स्वाहा॥

विधि :- इस मंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर गले में बाँधने से मृगी रोग नष्ट हो जाता है। साधक सर्वप्रथम इस मंत्र को होली-दीपावली या ग्रहण काल में दस हजार मंत्र जप कर सिद्ध कर लें।

बहती हुई नाक हेतु मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। चार आटी-चार घाटी, नीख-नीख है चौरासी। घाटी बहै नीर-भीजै चीर, नाथ नाक थमि हो। श्री नारसिंह वीर नाथ न थमे तो माता अंजनी का पिया दूध हराम करे। मेरी भक्ति-गुरु की शक्ति। फुरे मंत्र ईश्वरोवचा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि ग्रहण-काल या पर्वकाल में दस हजार मंत्र जप करने से होती है। साधक सिद्धि के पश्चात् थोड़ी सी साफ रूई लें और उक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए सात बार फूँके तथा ठंड से पीड़ित रोगी की नाक में लगावें तो उसकी बहती हुई नाक रुक जाएगी।

तांत्रिक-मायाजाल भंग हेतु मंत्र

ॐ श्री अस्थापन, तामें करहु जामें राम भलाई। गुणियाँ के जो गुण काटो, तो इसमें नहीं मनाही। दुहाई कामरू कामाक्षा नैना योगिनी की। शब्द-साँचा पिण्ड काँचा। फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को सर्व प्रथम ग्रहण काल में जप कर सिद्ध कर लें। पुनः प्रयोग में किसी के द्वारा फैलाए गए मायाजाल से दुःख पहुँच रहा हो तो इस मंत्र का जप करते हुए रोगी का झाड़ा करने से रोगी रोग-मुक्त हो जाता है।

शुक्र (वीर्य) स्तम्भन हेतु मंत्र

काँचा पिण्ड-पिण्ड में कोठा, कोठा में दस द्वार। बहत्तर हजार नाड़ी-नाड़ी में रस, रस में बिन्द-बिन्द को थामे। गुरु गोरख भाखे, लूणा जोगनी चाखे। हनुमान की पूँछ बढ़ी, वैसे ही बिन्द बड़ों सुख भयो। ओम नमो इति महारानी तेरी लाखों-लाख आन॥

विधि :- इस मंत्र को शुभ-मुहूर्त में दस माला मंत्र जप से सिद्ध करें। पश्चात् साधक शनिवार की प्रातः आक वृक्ष को आमंत्रित कर रविवार को उसका पाँच फल लें आवें। फिर फल की रूई निकाल कर बत्ती बना लें उसमें अरण्डी का तेल

डाल दीपक जलाकर एक माला मंत्र जप करें। फिर रतिकाल के समय लूणा जोगनी का स्मरण कर नायिका को शैय्या पर बैठा कर शुद्ध जल से उसके स्मरभवन (योनि) का प्रक्षालन कर प्रथम उसके दक्षिण योनि ओष्ठ पर तीन मंत्र, मध्य में ग्यारह मंत्र का उच्चारण कर फूँक मारते हुए अरण्डी तेल और आक वाले दीपक को जला दें। ध्यान रखें दीपक में ज्यादा तेल न रखें, एक घंटे तक जलने भर रखें फिर नायिका को सुगंधित पान खिलाकर प्रसन्न मन से सम्भोग प्रारम्भ करें जब तक दीपक जलता रहेगा। तब तक वीर्य स्खलन नहीं होगा। जब दीपक बुझ जाएगा तब स्तम्भन समाप्त हो जाएगा।

दूसरी विधि :- सोमवार की प्रातः लाल अपामार्ग की जड़ को आमंत्रित कर मंगलवार को प्रातःकाल उखाड़ लायें। फिर जड़ की पूजा अर्चना कर एक माला मंत्र जप करें। सम्भोग से पूर्व जड़ को कमर में साधक बाँधें और सम्भोग करें तो शुक्र स्तम्भन होगा।

बिच्छू विष स्तम्भन मंत्र

ॐ नमो समुद्र समुद्र में कमल। कमल में विषहर। बिच्छू कहूँ तेरी जात। गरुड़ कहे मेरी अठारह जात, छः काला, छः कावरा, छः कूँ कूँ बान। उतर रे उतर, नहीं तो गरुड़ पंख हंकारे आन। सर्वत्र बिसन मिलई, उतर रे बिच्छू उतर। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल में जप कर सिद्ध कर लें फिर मंत्रोच्चारण करते हुए बिच्छू काटे हुए स्थान पर सात बार झाड़ा करें। तो वृश्चिक दंश स्तम्भन हो।

गर्भ-स्तम्भन मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का, जय जय जय जय जयकार। गोरख बैठा घोरूवार जब लग गोरख जाप जपै, जब लग राज विभिषण करै। गौरा कात्या कातना, ईश्वर बाँध्या गंडा। राखु-राखु श्री हनुमन्त बजरंग जो छिटका परता। अण्डा दूध पूत ईश्वर की माया, पड़ता गर्भ श्री गोरखनाथ जी रखाया। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को होली, दीपावली पर इक्कीस माला जप कर सिद्ध कर लें। पश्चात् एक काले रंग का धागा लेकर इक्कीस बार अभिमंत्रित कर गर्भवती की कमर में धारण करवा दें, तो गिरता हुआ गर्भ रुक जाएगा।

सर्प कीलन हेतु मंत्र

बजरी बजरी बजर किवाड़। बजरा कीलूँ आस पास। मरै सांप होय खाक। मेरा कीला पत्थर कीलै, पत्थर फूटे न मेरा कीला छूटै। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद थोड़ी सी मिट्टी या कुछ कंकड़ लेकर इस मंत्र द्वारा सात बार शक्तिकृत करें और सर्प पर हलके से मार दें, तो सर्प हरकत करना बंद कर देगा।

नोट :- स्तम्भित सर्प को उठा कर दूर फेंक दें, इस सर्प को मारना नहीं चाहिए।

सर्प-उत्कीलन मंत्र

कीलन भाई कुचीलनी, वाचा भया कुवाचा
जाहु सर्प घर आपने, चुग फिर चारों मास॥

विधि :- सिद्धि के पश्चात् थोड़ी सी मिट्टी लेकर और उसे इस मंत्र से सात बार फूँक कर कीले हुए सर्प पर मारने से सर्प पुनः चलने लगता है।

कसाई का छुरा स्तम्भन मंत्र

काले तिल कवेला तिल, गुजरी बैठी वीर। पसारे सुई न देधे माधाई। पीर न आवै, काली करूइमती भारी। दुष्य तिबुकिलार अवनी बाँधो सुई। अवषाँडे की धार, आवे न लोहू। न फूटे घाउ, रक्षा करे श्री गोरख राऊ॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल, पर्वकाल या शुभ मुहूर्त में सिद्ध करने के पश्चात् इसका प्रयोग तब करें जब कोई कसाई पशु (बकरा) का वध करने जा रहा हो उस समय इस मंत्र से कुछ उड़द के दानें अभिमंत्रित करके बकरे के मारे जाएं, तो कसाई का हथियार उसका वध नहीं कर पाएगा।

जलन दूर करने हेतु मंत्र

**ॐ नमो आदेश गुरु का। कामरु देश कामाख्या देवी।
जले तेल रेल तेव महा तीरे, "अमुक" लहर पील मल
में कारे। मंत्र पढ़े नरसिंह देव-कुटिया में बैठके।
श्रीरामचन्द्र रहि रहि फूँक के जाय "अमुक" की जलन।
एक एलन में जाय, खाय सागर की नोर नान में।
आज्ञा हड़ि दासी की। फुरो मंत्र चण्डी वाचा॥**

विधि :- इस मंत्र को किसी शुभ मुहूर्त में सिद्ध कर लें फिर यदि कोई जल गया हो, तो सरसों का तेल लेकर इस मंत्र से अभिमंत्रित करके जले हुए स्थान पर लगा दें, तो जलन ठीक हो जाती है।

मोच दर्द नाशक मंत्र

**ॐ नमो आदेश गुरु का। श्री राम को मचक उड़ाई
इसके तन से तुरन्त पीर भागि जाई। न रहे रोग पीड़ा
फूँक से हुई सब पानी "अमुक" की व्यथा छोड़
भाग तूँ मचकानी। न भागे पीड़ा तो महादेव की
दुहाई। आदेश सिया राम-लखन गुँसाई॥**

विधि :- इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद, जब किसी को मोच आ जाय तो सरसों के तेल को इस मंत्र से अभिमंत्रित कर मोच पर मालिश करें तो पीड़ा स्तम्भित होकर मोच ठीक हो जाती है।

ततैया-दंश-स्तम्भन हेतु मंत्र

**चूण चूण चूण विषेरपाणी। हाडेर मितर
भासरे कूडे। मर विष तुई चूणे पूड़े॥**

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल में सिद्ध कर लें। जब किसी को ततैया काट ले, तो इस मंत्र को जपते हुए फूँक मारने से विष स्तम्भित होकर देह निरोग हो जाती है।

सर्प-दंश पर धागा मंत्र

तागा तागा तागा, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर। तिन देव लागा ऐ तागा नड़े चढ़े, ईश्वरी-करतार करें।

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल, पर्व काल आदि में जप कर सिद्ध करें। फिर प्रयोग में सर्प काटे हुए स्थान के पास इस मंत्र से शक्तिकृत कर धागा बाँधने से सर्प विष स्तम्भित हो जाता है।

शस्त्र बन्धन मंत्र

बाँधो तूपक, अवनि वार न धरे। चोट न परे घाऊ। रक्षा करे श्री गोरंज राऊ॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु होली-दीपावली या शुभ योग में पचास माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। इस मंत्र को सात बार जप कर अपनी समूची देह पर हाथ फिरायें और पदार्पण करें, तो कहीं पर भी शस्त्र से घाव या चोट न लगेगी।

गर्भ-रभा हेतु मंत्र

ॐ नमो थाथो मोथो, मेरा कहा कीजिए। ''अमुक'' का गर्भ, जाते राखि-लीजिए। गुरु की शक्ति-मेरी भक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि के पश्चात् कीदृशी नामक राक्षसी के लिए पूजा रखकर काले रंग का धागा लेकर इस मंत्र से शक्तिकृत (अभिमंत्रित) करके गर्भवती की कमर में बाँधने से गिर रहा गर्भ रुक जाता है।

हिंसक जीव-जन्तु स्तम्भक मंत्र

फकीर चले परदेश को, कुत्तक मन में भावे। बाघ बाँधू, बघाईन बाँधू, बाघ के सातों बच्चा बाँधू। सापां चोरां बाँधू दाँत बँधाऊ। बाट बाँध देऊँ। दुहाई लोना चमारी की। शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरे मंत्र ईश्वरोवाचा॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण काल में इक्कीस माला जप करने से सिद्ध हो जाएगा। इसके बाद मंत्रोच्चारण कर चारों ओर फूँक मारने से हिंसक जीव-जंतुओं से रक्षा होती है।

जल के ऊपर चलने हेतु भैरव मंत्र

ॐ नमो काला भैरूँ-कालिका का पूत, पगो खड़ाऊँ हाथ गुरु जी चलो मन प्रभात। आक तू अग्र सूँ भरा तेरो-न्योतो, मैं जहाँ करूँ पूजौ दिनसात। जो तू मन चीता कार्य कर दे मोह कुम-कुम कस्तूरी केशर से पूजा करूँ तुम्हारी। मोर मन चीत्यो मेरा कार्य करहुँ। गुरु गोरख नाथ की वाचा फुरे। शब्द साँचा पिण्ड काँचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की साधना इकतालिस दिनों की है, श्री भैरव विषयक नियमों का पालन करते हुए एक माला नित्य मंत्र जपें व इक्तालिसवें दिन दशांश हवन करें। फिर प्रयोग के समय साधक शुद्ध होकर शनि पुष्प योग में सफेद आक को आमंत्रित कर प्रात: रविवार को घर लें आयें। फिर दूध से, धोकर छाया में सुखा लें। उसका खड़ाऊँ बनाकर पाँव में पहने तो पानी में डूबें नहीं।

नोट :- आक के पेड़ को लोहे से न खोदें। तथा यह सिद्धि सिर्फ पूर्ण ब्रह्मचर्य व्यक्ति ही करें। यह गृहस्थ व्यक्ति को फलीभूत नहीं होगा।

कुश्ती जीतने हेतु हनुमान मंत्र

ॐ महावीर रणधीर बाँके पहलवान। आकाश बाँध-पाताल बाँध अखाड़े के चारों कोने बाँध। दुश्मन का सीना बाँध हाथ बाँध पाँव बांध। निगाह बाँध इतने बाँध के जेर न करे, तो माता अंजनी का दूध हराम करे। राजा राम चन्द्र की दुहाई॥

विधि :- इस मंत्र की साधना इक्कीस दिन की है। इसे किसी भी मंगलवार से शुरु कर श्री हनुमान विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन एक माला मंत्र जप करें। फिर जब अखाड़ा बाँधना हो तो कुश्ती के पहले अखाड़े की मिट्टी एक मुठ्ठी लें और मिट्टी को इक्कीस बार शक्तिकृत कर अपने विरुद्ध पहलवान पर मारें, तो अखाड़ा बंध जाएगा। इससे सामने वाला पहलवान परास्त होगा।

घर बाँधने हेतु काली मंत्र

उत्तरा-खण्ड की काली, उत्तर को बाँध, पूरब को बाँध, पच्छिम को बाँध, दक्खिन को बाँध, आगा बाँध, पीछा बाँध, घर के चारों कोने बाँध। मेरी बाँधी न बँधे, तो काली माई की फिरै दुहाई॥

विधि :- इस मंत्र को ग्रहण आदि में इक्कीस माला जप कर सिद्ध कर लें। फिर प्रयोग के समय एक छोटा मिट्टी का पयाला लेकर उसकी पेंदी में छोटा सा छेद कर लें और उसमें शराब, दूध और गौ-मूत्र भरें तथा मंत्रोच्चार करते हुए घर का चक्कर लगावें। चक्कर-लगाते समय पयाला हाथ में लिए रहें ताकि टपकता रहे उसमें भरा द्रव्य। अब हर कोने में एक नींबू रखकर एक बड़ा कीला ठोंक दें। इस से घर के सारे दुःख तथा अभिचार आदि नष्ट होंगे।

मारण हेतु
मंत्र

इस अध्याय में मारण कर्म से सम्बंधित मंत्र एवं विधि-विधान का वर्णन किया गया है।

शत्रु-मारण हेतु धूमावती मंत्र

धूम-धूम धूमावती! मरघट में रहती, मसान जगाती। सूप छानती, जोगनियों के संग नाचती। डाकनियों के संग मांस खाती। मेरे बैरी (....) का भी तू मांस खायै, कलेजा खायै-लहू पीयै-पियास बुझायै। मेरे बैरी को तड़पा-तड़पा मार ना मारै, तो तोहूँ को माता पारबती के सिंदुर की दुहाई। कनीपा औघड़ की आन॥

विधि :- इस मंत्र की साधना इक्तालिस दिनों की है, श्मशान में नित्य एक माला जप कर इसे सिद्ध करें। पश्चात् एक छोटा तिनकों का सूप (छाज) बनाएं। एक छटाँक शराब व बकरे का थोड़ा कच्चा मांस लें। अमावस्या की रात्रि में श्मशान जाएं, वहीं से एक क़फन का एक टुकड़ा प्राप्त कर, जलती चिता के समीप बैठे। उक्त मंत्र एक हजार आठ बार जपें और जप की समाप्ति पर मंत्रोच्चारण करते हुए चिता की भस्म उठायें, भस्म में थोड़ी शराब मिलाकर, कफन के टुकड़े पर अपनी तर्जनी से उक्त मंत्र को लिखें। (रिक्त स्थान पर शत्रु का नाम लिखें) फिर उस पर मांस का एक टुकड़ा रख कर चार तह बना दें। इसके बाद सूप में शेष मांस का एक टुकड़ा रख कर चार तह बना दें। इसके बाद सूप में शेष मांस रखकर, शराब उड़ेल दें और मंत्र जपते हुए चिता में डाल दें। पुनः कफन का वह टुकड़ा लाकर शत्रु के यहाँ डाल आयें, तो शत्रु का नाश होगा।

शत्रु को परास्त करने हेतु मंत्र

बउनल्लाह अल जलीलों, अल जब्बारों, अल कहारों। सयफ़े सैयदुल काहेरीन व अला आ अदाए रब्बुल आलमीन। मोहम्मद रसुलल्लाह अल रकबे (शत्रु एवं उसकी माँ का नाम) वजुल फिकारे हयदरे करार। अला कलबे (शत्रु एवं उसकी माँ का नाम) या हैदर या हैदर या असद अल्लाह या वली अल्लाह अलगीयाश।

विधि :- इस मंत्र को सिद्ध कर लें। पुनः अपने आस पास से किसी भी कन्टक-वृक्ष की शाखा तोड़े जो हाँथ में रखी जा सके। अब चाँद की चौदह तारीख को प्रयोग शुरु करें। टहनी से शत्रु का नाम जमीन पर लिखें और उक्त शक्तिकृत मंत्र तेरह बार जप कर तेरह बार शत्रु के नाम पर उसी काँटेदार शाखा से प्रहार करें। यह एक क्रम हुआ। ऐसा तेरह बार करें। इस प्रकार तेरह-तेरह बार

मंत्र जप करें और तेरह-तेरह बार शाखा (टहनी) से प्रहार करें। यह क्रम एक दिन का है। इसी तरह चौदह तारीख से छब्बीस तारीख तक, तेरह दिन का पूरा प्रयोग करें, इन्हीं दिनों के भीतर फल प्रदर्शित हो जाएगा। आप को पता चल जाएगा कि शत्रु बीमार है या उसे कष्ट हो रहा है। जब ज्ञात हो जाए की शत्रु को कष्ट मिल रहा है या बीमार पड़ गया है तो "प्रयोग" बंद कर दें। प्रयोग के बारे में किसी को न बतायें। यह प्रयोग स्वार्थ वश या झूठ-मूठ परेशान करने हेतु न करें अन्यथा स्वयं को भी नुकसान होने की संभावना रहती है।

मारण हेतु नींबू वीर मंत्र

खम-खम नींबू-हसला घोड़ा, पाट का डोर। देखों रे नींबू तेरी आन। नौ नाथ चौरासी सिद्ध की आन। फुरे मंत्र ईश्वरी वाचा॥

विधि :- इस मंत्र को विधि से सिद्ध कर लें। पुनः शनिवार की रात्रि में तारों के उज़ाले में मंत्र पढ़कर सेही का काँटा नींबू में छेदे, फिर नींबू पर सिन्दूर चढ़ा लोहबान की धूप देकर कब्र में गड़ा दें तो शत्रु की मृत्यु हो।

मूठ मारने हेतु मंत्र

ॐ नमो वीर तो हनुमन्त वीर, भूरि मूठि चलावै तीर। मैं की रुख नाखी तोड़ि, लोहु सोखि। मेरा वैरी तेरा भक्षिह, तोड़ि कलेजा चाख। सब धर्म की हाथई बजे धर्म की लाल में, बालि तुम्हारे कहाँ गए। भूरे बाल उलटि पछाड़, पछाड़े तो माता अंजनी की आन। शब्द साँचा-पिण्ड काँचा। फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि :- इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधक होली खेलने से पहले वाली रात यानि पूर्णिमा की रात को नग्न होकर किसी निर्जन स्थान में इस मंत्र की दस माला जप करें। पुनः इस मंत्र का शक्तिकृत उड़द जिसे मारेंगे वही पछाड़ खाकर गिर पड़ेगा।

शैतान चढ़ाने हेतु मंत्र

अल्प गुरु अल्प रहमान। ''अमुक'' की छाती ना चढ़ै, तो माँ-बहन की सेज पे पग धरै। अली की दुहाई, अली की दुहाई, अली की दुहाई॥

विधि :- इस मंत्र के अनुष्ठान हेतु शुक्रवार की रात्रि को किसी निर्जन स्थान पर पीली मिट्टी का गोल चौका बनाकर, उस पर तिल तेल का दीपक रखें, दीपक का मुख उत्तर की तरफ रखें स्वयं दक्षिण मुख होकर इस मंत्र का जप करें। सत्तरह हजार जप करने से शत्रु के ऊपर शैतान चढ़ जाएगा। शत्रु ने उचित समय पर उसका प्रबंध न किया तो कुछ ही दिनों में शत्रु की मृत्यु हो जाएगी।

नोट :- इस प्रयोग को सोच समझकर प्रयोग करें, असावधानी होने पर स्वयं को भी खतरा हो सकता है।

सिद्ध सामग्री
मंत्र

इस अध्याय के प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर सिद्ध गोरक्ष सहस्त्रनाम, प्राण संकली, अष्ट मुद्रा, चौबीस सिद्धि, ग्यान तिलक, पंच अग्नि, बत्तीस लछन प्रस्तुत किये गये है।

अथ गोरक्ष - सहस्त्रनाम प्रारम्भ

गोसेवी गोरक्षनाथो गायत्रोधर सम्भवः।
योगीन्द्रः सिद्धिदो गोप्ता योगिनाथो युगेश्वर॥ १॥

गौओं की सेवा करने वाले, या इन्द्रियों की सेवा अर्थात् स्वच्छता रखने वाले, गौओं की रक्षा करने वाले, ब्रह्म से आविर्भूत होने वाले, योगियों के इन्द्र, सब सिद्धियों को देने वाले, संसार के रक्षक, योगियों के नाथ और युगेश्वर॥ १॥

यतिश्च धार्मिको धीरो लङ्कानाथो दिगम्बरः
योगानन्दो योगचरो योगवेत्ता यतिप्रियः॥ २॥

यति, धार्मिक, धैर्यशाली, लङ्का के नाथ, दिगम्बर योग में आनन्दित रहने वाले, योग में सर्वदा विचरण करने वाले, योगाशास्त्र को जानने वाले, यतियों के प्यारे॥ २॥

योगराशिर्योगगम्यो योगिराट् योगवित्तमः।
योगमार्गयुतो याता ब्रह्मचारी वृहत्तपाः॥ ३॥
शङ्करैकस्वरूपश्च शङ्करध्यानतत्पर॥ ४॥

योग के समूह, योगियों के राजा, योग से जानने से योग्य योगियों के सम्राट, योगशास्त्र के विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ, योग मार्ग से युक्त, योगमार्ग से चलने वाले, ब्रह्मचारी और कठिन तपस्या करने वाले॥ ३॥

शङ्कर भगवान के एक स्वरूप, शङ्कर ध्यान में सर्वदा तत्पर॥ ४॥

योगानन्दो योगधारी योगमाया-प्रसेवकः।
योगयुक्तो योगधीरो योगज्ञान-समन्वितः॥ ५॥

योग में ही आनन्द रहने वाले, योग के धारण करने वाले, योगमाया के सेवक, योग संयुक्त, मन की वृत्तियों को रोकने वाले, योगशास्त्र के ज्ञान वाले॥ ५॥

योगचारो योगविद्यो युक्ताहारसमन्वितः।
नागहारो नागरूपो नागमालो नगेश्वरः॥ ६॥

योग के प्रभाव से सब गुप्त हाल जानने वाले, योगविद्या की रचना करने वाले, युक्त आहार करने वाले, सर्पों को परास्त करंने वाले, सर्प का रूप धारण करने वाले, सर्पों की माला पहिनने वाले, कैलाश पर्वत के स्वामी॥ ६॥

नागधारी नागरूपी नानावर्ण-विभूषितः।
नानावेषो नराकारो नानारूपो निरञ्जनः॥ ७॥

नागों को सर्वदा धारण करने वाले, नाग रूप वाले, नाना प्रकार के वर्णों से विभूषित, नाना प्रकार का वेष धारण करने वाले, मनुष्य का आकार धारण करने वाले, नाना रूप धारण करने वाले निर्गुण॥ ७॥

आदिनाथः सोमनाथो सिद्धिनाथो महेश्वरः।
नाथनाथो महानाथो सर्वनाथो नरेश्वरः॥ ८॥

आदिनाथ, सोमनाथ, सिद्धिनाथ, महेश्वर, नाथों के नाथ, महानाथ, सबके नाथ और मनुष्यों के ईश्वर॥ ८॥

क्षेत्रनाथोऽजपानाथो बालनाथो गिरांपतिः।
गङ्गाधरः पत्रधारी भस्म-भूषित-विग्रह॥ ९॥

क्षेत्र के स्वामी, अजपानामक मंत्र के स्वामी, बालकों की रक्षा करने वाले, वाणियों के स्वामी, गङ्गा को धारण करने वाले, कमण्डलु धारण करने वाले और भस्म से भूषित शरीर वाले॥ ९॥

मृगाजिनधरो मृग्यो मृगाक्षो मृगवेषधृक्।
मेघनादो मेघवर्णो महासत्वो महामनाः॥ १०॥

मृगचर्म को धारण करने वाले, योगियों के ध्यान किये जाने वाले, मृग के समान आँखों वाले, मृग का वेष धारण करने वाले, मेघ के समान गम्भीर शब्द करने वाले, मेघ के समान वर्ण वाले, महाबलवान् और मनस्वी॥ १०॥

दिगोश्वरी दयाकारी दिव्याभरणभूषितः।
दिगम्बरो दूरदर्शी दिव्यो दिव्यतमो दमः॥ ११॥

दिशाओं के ईश्वर, दयालु, दिव्य आभूषण धारण करने वाले, दिगम्बर, विद्वान्, योग बल से सूक्ष्म ज्ञान वाले, स्वर्ग में विहार करने वाले, देवताओं में श्रेष्ठ और इन्द्रियों का दमन करने वाले॥ ११॥

जलनाथो जगन्नाथो गङ्गानाथो जनाधिपः।
भूतनाथो विपन्नाथो कुनाथो भुवनेश्वर॥ १२॥

जलों के नाथ, जगत् के नाथ, जनों के स्वामी, लोकों के नाथ, भूतों के नाथ, विपत्ति के नाशक, पृथ्वी के नाथ और चतुर्दश भुवनों के ईश्वर॥ १२॥

ज्ञपतिर्गोपिकाकान्तो गोपी गोपारिमर्दनः।
गुप्तो गुरुर्गिरां नाथो प्राणायामपरायणः॥ १३॥

विद्वानों के स्वामी, गोपियों के प्रेमपात्र, इन्द्रियों का पालन करने वाले, गोपों के शत्रुओं का नाश करने वाले गुप्त, जगत् के गुरु, सरस्वती के स्वामी और प्राणायाम में तत्पर॥ १३॥

यज्ञनाथो यज्ञरूपो नित्यानन्दो महायतिः।
नियतात्मा महावीर्योद्युतिमान् धृतिमान्वशी॥ १४॥

यज्ञों के नाथ, यज्ञ पुरुष। सर्वदा आनन्द-मग्न, महापति, आत्मा को वश में रखने वाले, अत्यन्त पराक्रमी, कांतिवाले, धैर्यवान् और मन को वश में रखने वाले॥ १४॥

सिद्धनाथो वृद्धनाथो वृद्धो वृद्धगतिप्रियः।
खेचरः खेचराध्यक्षो विद्यानन्दो गणाधिपः॥ १५॥

सिद्धो के नाथ, वृद्धों के नाथ, अत्यन्त वृद्ध अत्यन्त वृद्धों के मार्ग के प्रिय आकाश में विहार करने वाले, आकाश में विहार करने वालों के स्वामी, विद्या में आनन्दित रहने वाले और गणों के अध्यक्ष॥ १५॥

विद्यापतिर्मन्त्रनाथो ध्याननाथो धनाधिपः।
सर्वाराध्यः पूर्णनाथो द्युतिनाथो द्युतिप्रियः॥ १६॥

विद्या को देने वाले, मंत्रों के नाथ, ध्यान के नाथ धन देने वाले, सबके आराध्य पूर्णनाथ, तेज के स्वामी, कान्ति और तेज को चाहने वाले॥ १६॥

सृष्टिकर्ता सृष्टिधर्ता जगत्प्रलयकारकः।
भैरवी भैरवाकारो भयहर्ता भवापहा॥ १७॥

सृष्टि के कर्ता, सृष्टि के पालक, जगत् के प्रलय करने वाले, भैरव नाथ भैरवाकार, भय का हरण करने वाले और संसार का दुःख दूर करने वाले॥ १७॥

सृष्टिनाथः स्थितेर्नाथो विश्वाराध्यो महामतिः।
दिव्यनादो दिशानाथो दिव्यभोगसमन्वितः॥ १८॥

सृष्टि के नाथ, स्थिति के नाथ, विश्व के आराध्य, महाबुद्धिमान, दिव्य शब्द करने वाले, दिशाओं के नाथ और दिव्य भोगों से युक्त॥ १८॥

अव्यक्तो वासुदेवश्च शतमूर्तिः सनातनः।
पूर्णनाथः कान्तिनाथो सर्वेषां हृदयस्थितः॥ १९॥

आकाशादिरूप, वासुदेव (कृष्णरूप), असङ्ख्य शरीरधारी, सनातन (जन्ममृत्युरहित), पूर्णनाथ तेज के नाथ सूर्य स्वरूप और हृदयों में रहने वाले॥ १९॥

अङ्गनाथो रङ्गनाथो मङ्गलो मङ्गलेश्वरः।
अम्बासेवी धैर्यनाथो वपुर्गोप्ता गुहाशयः॥ २०॥

अङ्गदेश नाथ, प्रधान नटरूप, मङ्गल स्वरूप मंगल कर्त्ता, शून्य माता के भक्त, धीर, शरीर की रक्षा करने वाले, सर्व प्राणियों के हृदय में रहने वाले॥ २०॥

अकारोऽनिधनोऽमर्त्यो साधुरात्मपरायणः।
इकारस्त्विन्द्रनाथश्च यतिर्धन्यो धनेश्वरः॥ २१॥

विष्णु रूप, अमर, नित्य रहने वाले, दिव्य रूप, परोपकार करने वाले, व्रत में परायण, आत्म दर्शी, सुन्दर रूप, इन्द्र के स्वामी, ब्रह्म तत्त्व के अन्वेषण करने वाले, प्रशंसनीय, धन दाता॥ २१॥

उकार ऊकरो नित्यो मायानाथो महातपाः।
एकारस्त्वेक ऐकार एकमूर्तिस्त्रिलोचनः॥ २२॥

शंकर स्वरूप, रक्षक अमर, माया पति, तपस्वी रूप, विष्णु, एक ही ब्रह्म रूप, महेश्वर, एकमूर्ति, त्रिलोचन, शिव स्वरूप॥ २२॥

ऋकारो लाकृतिर्लोक-नाथो ऋसुतमर्दनः।
लकारो लसुतो लाभो ललोप्ता लकरो ललः॥ २३॥

गायत्री स्वरूप, कृष्णरूप, चतुर्दश भुवनों के स्वामी, असुरों के नाश करने वाले, नादकारी, विष्णु इन्द्ररूप, लाभ स्वरूप, भय हरता प्रलयकारी दीप्तिमान॥ २३॥

खवर्णः खर्वहस्तश्च खखनाथः खगेश्वरः।
गोरीनाथो गिरांनाथो गर्गपूज्यो गणेश्वरः॥ २४॥

कृष्णवर्ण (कालावर्ण) छोटे हाथ वाले, आकाश के खगेश्वर, गौरीनाथ, वाणी के पति, गर्ग पूज्य और गणेश्वर॥ २४॥

गंनाथो गणनाथश्च गंगासेवो गुरुप्रियः।
चकारश्चपतिश्चन्द्रश्चं चं शब्दश्चकृच्चरः॥ २५॥

गानपति, गंगासेवी, गुरुप्रिय, सूर्य चन्द्रशेखर, चन्द्र स्वरूप, चं चं शब्द करने वाले, अज्ञान के नाश करने वाले, सर्वव्यापी॥ २५॥

चोरनाथो दण्डनाथो देवनाथः शिवाकृतिः।
चंपानाथः सोमनाथो वृद्धिनाथो विभावसुः॥ २६॥

दण्ड के देने वाले, चोरनाथ, देवनाथ, शिवाकृति, चम्पा नगर के स्वामी, चन्द्रपति विष्णु वृद्धिनाथ, ब्रह्मरूप, अग्नि स्वरूप॥ २६॥

चिरनाथः चारुरूपः कवीशः कवितापतिः।
ऋद्धिनाथो विभानाथो विश्वव्यापी चराचरः॥ २७॥

आदिनाथ, नित्य सुन्दर स्वरूप, महाकवि, कवितापति, ऋद्धि, सर्वयोग के कर्म को बतलाने वाले, सर्व व्यापी ईश्वर, स्थावर, जङ्गम विराट्रूप॥ २७॥

चारूश्रृङ्गश्चरुनाथ श्चित्रनाथ श्चिरन्तपाः।
शक्तिनाथो वृद्धिनाथश्छेत्ता सर्वगुणाश्रयः॥ २८॥

सुन्दर श्रृङ्गधारी, प्रकाशमान, चित्रनाथ, चिरकाल तक तपस्या करने वाले, बुद्धिदाता, पाप नाशक, सब गुणों के भण्डार॥ २८॥

जगधोशो जयाधारो जयदाता सदाजयः।
जपाधीशो जपाधारो जपदाता सदाजपः॥ २९॥

विजय देने वाले, जय के आधार, जय देने वाले, सदा विजयशील, जपाधीश, जप के आधार, जपदान कर्ता, अजपामंत्र जपने वाले॥ २९॥

शंखनाथः शंखनादः शङ्खरूपो जनेश्वरः।
सोऽहं रूपश्च संसारो सुस्वरूप सदासुखी॥ ३०॥

पाञ्च जन्म के स्वामी, गम्भीर वक्ता, शङ्खस्वरूप, जनेश्वर, आत्म-ज्ञानी, ब्रह्मस्वरूप, जीवन मुक्त, अजन्मा, अविनाशी, माया से जीव का आच्छादन करने वाले, जीवरूप, संसार प्रपञ्चकारी, सुन्दर रूप वाले, शून्य के आधार, योगिराज॥ ३०॥

ओंकर इन्द्रनाथश्च इन्द्ररूपः सुधोः।
जकारो जञ्जपूकश्च झाकारो मृत्युजिन्मुनिः॥ ३१॥

ओंकार स्वरूप, इन्द्रनाथ, इन्द्ररूप, शुभ, बुद्ध, जयरूप, अत्यन्त जपकर्त्ता वायुरूप, मृत्यु को जीतने वाले, मननशील॥ ३१॥

टंकारः टंटनाथश्च टोकारो टोपतिष्टरः।
ठकारो ठंठनाथश्च ठंनाथः ठमयश्च ठः॥ ३२॥

ध्वनिरूप, शब्दकर्ता, पृथिवी के ईश्वर, प्रलय में रुद्ररूप, विजय रूप के स्वामी, आकाश के नाथ, शब्दमय, शून्यमय, शून्यवेष॥ ३२॥

डमयो ढमयो नित्यो डवाद्यो डमरुप्रियः।
वरप्रदाऽभयो भोगो भवो भीमी भयानकः॥ ३३॥

शकर स्वरूप, सदायोग समाधि लगाने वाले, निर्गुण स्वरूप, तीनों काल में रहने वाले, ढक्कावाद्यप्रिय, डमरू को बजाने वाले, सर्वकामना पूर्ण करने वाले, अभय स्वरूप, भोग स्वरूप, सकल जग के उत्पति स्थान, पापियों को भयंकर लगने वाले, अधर्मी पुरुष को दण्ड देने वाले॥ ३३॥

दण्डधारी दण्डरूपो दण्डसिद्धो गुणाश्रयः।
दण्डो दण्डमयो दम्यो दरूपो दमनोदमः॥ ३४॥

यमस्वरूप दण्ड देने वाले, दण्डरूप, पापियों का उद्धार करने वाले, गुणों के आश्रय, दण्डदाता, दुष्टों को दण्ड देने वाले, दमन करने योग्य, मेघ स्वरूप, इन्द्रियों का दमन करने वाले, पापियों को दण्ड देने वाले॥ ३४॥

णकारो नन्दनाथश्च बुधनाथो निरापदः।
नन्दीभक्तो नमस्कारो सर्वलोकप्रियो नरः॥ ३५॥

निर्णय रूप, नन्द के स्वामी, श्री कृष्ण स्वरूप, विद्वानों के नाथ, रोग रहित नन्दीभक्त, नमस्कार प्रिय, लोकप्रिय और नरस्वरूप॥ ३५॥

थकारो थकरः सतुत्यो जेता जिष्णुर्जितो गतिः।
थसेवी थंथशब्दश्च थवासी जित्वरो जयः॥ ३६॥

नीतिरूप, रक्षा करने वाले, स्तुति के योग्य, विजयशाली, भक्तों से वश किये जाने वाले, जीवों के मोक्ष स्थान, हिमालय में विराजमान, शब्द करने वाले, रैवतक (गिरनार) पर्वत में रहने वाले, काम, क्रोध के जीतने वाले, जय स्वरूप॥ ३६॥

दानदो दानसिद्धो दः दयो दीनप्रियोऽदमः।
अदीनो दिव्यरूपश्च दिव्यो दिव्यासनो द्यूतिः॥ ३७॥

दान देने वाले, दान में सिद्ध, अज्ञान का विनाश करने वाले अर्थात् ज्ञान देने वाले, दयाकारी, दीन प्रेमी, दूरदर्शी, उदार, स्वर्गीय सौन्दर्य से युक्त, स्वर्गीय आसन पर विराजमान, तेजरूप॥ ३७॥

दयालुर्दयितो दान्तोऽदूरो दूरेक्षणो दिनम्।
दिव्यमाल्यो दिव्यभोगो दिव्यवस्त्रो दिवापतिः ॥ ३८ ॥

दयावाले, सर्वप्रिय, आँतरिक इन्द्रियों की रक्षा करने वाले सर्वदा समीप रहने वाले, दूर तक देखने वाले, दिन के समान प्रकाश करने वाले दिव्यमाला को धारण करने वाले, दिव्य भोगों को भोगने वाले, दिव्यवस्त्र धारण करने वाले, सूर्य स्वरूप ॥ ३८ ॥

धकारो धनदाता च धनदो धर्मदोऽधनः।
धनी धर्मधरो धीरो धराधीशो धराधरः ॥ ३९ ॥

ब्रह्मस्वरूप, धन देने वाले, धर्म देने वाले, धन से रहित, धनी, धर्म की स्थापना करने वाले, धैर्यवाले, पृथ्वी के स्वामी ॥ ३९ ॥

धीमान् श्रीमान् धरधरो ध्वांतनाथोऽधमोद्धारः।
धर्मिष्ठो धार्मिको धुर्योधीरो धीरोगनाशनः ॥ ४० ॥

बुद्धिमान, लक्ष्मी के स्वामी, पर्वत को धारण करने वाले, अँधेरे का नाश करने वाले, अधमों का उद्धार करने वाले, धर्म में श्रद्धा रखने वाले, धर्माचरण करने वाले, श्रेष्ठ काम, क्रोध आदि का नाश करने वाले ॥ ४० ॥

सिद्धान्तकृतच्छुद्ध मतिः शुद्धः शुद्धिकरः कृतो।
अन्धकार-हरो हर्षो हर्षवान् हर्षित-प्रजः ॥ ४१ ॥

सिद्धान्त करने वाले, शुद्ध बुद्धि वाले, पवित्र, पवित्र करने वाले, प्रयत्नशील, अन्धकार को नाश करने वाले, सदा प्रसन्न, हर्ष वाले और लोगों को हर्ष प्रदान करने वाले ॥ ४१ ॥

पाण्डुनाथः पीतवर्ण पाण्डुहा पन्नगासनः।
प्रसन्नास्य प्रपन्नार्तिहरः परमपावनः ॥ ४२ ॥

पाण्डु देश के राजा, पीले रंग वाले, सर्पासन पर बैठने वाले, प्रसन्न मुख वाले, सर्वदुःखहारी, परम पवित्र, सर्वश्रेष्ठ ॥ ४२ ॥

फंकारः फूकरः पाता फणीन्द्रः फल-संस्थितः।
फणीराजः फलाध्यक्षो फलदाता फली फलः ॥ ४३ ॥

भाषण करने वाले रक्षक, शेष रूप, कृष्णरूप, नागों के राजा, धर्मार्थ काम मोक्ष के अध्यक्ष, तप और धर्म के फल को देने वाले, चतुर्वर्ग फल और जो पुण्य कर्म है उनके फल स्वरूप, निज ज्योति स्वरूप ॥ ४३ ॥

बंबं प्रियो बकारश्च बामनो बारुणो वरः।
वरदस्तु वराधीशो बालो बालप्रियो बलः॥ ४४॥

बम शब्द है प्रिय जिसको, कलशस्वरूप, बलिध्वंसी, जल के अधिष्ठातृ देवता पवित्र, वर को देने वाले घर के मालिक, पाँच वर्ष की अवस्था में सदा रहने वाले, बाल जन के प्रिय और बल स्वरूप॥ ४४॥

वराहो वारुणीनाथो विद्वान् बिद्वत्प्रियो वली।
भवानीपूजको भौमो भद्रकारो भवान्तकः॥ ४५॥

वारहरुप धारण करने वाले, पश्चिम दिशा के स्वामी, पण्डित प्रिय, बलवान, पार्वती की पूजा करने वाले, पृथ्वी पर विहार करने वाले, सौम्यमूर्ति, प्रलय रूप॥ ४५॥

भद्रप्रियोऽर्भकानन्दो भवानीपतिसेवकः।
भवप्रिया भवाधीशो भवो भव्यो भयापहा॥ ४६॥

शिष्टों के प्रिय, बालकों को आनन्द देने वाले, शिव जी के सेवक संसार से प्रेम करने वाले, संसार के स्वामी, सब के उत्पत्तिस्थान, भव्य और त्रिविध ताप को दूर करने वाले॥ ४६॥

महादेवप्रियो मान्यो मननीयो महाशयः।
महायोगी महाधीरो महासिद्धो महाश्रयः॥ ४७॥

महादेव के प्यारे, सम्माननीय, योगियों से मनन किये जाने वाले, गम्भीर हृदय वाले, महायोगी, महाधीर, महासिद्ध और शून्य आश्रय॥ ४७॥

मनोगम्यो मनस्वी च महामोदमयो महः।
मार्गप्रियो मार्गसेवी महात्मा मुदितोऽमलः॥ ४८॥

मन से जाने वाले, मनस्वी, अत्यन्त प्रसन्न, उत्सव स्वरूप, मार्ग प्रेमी, सन्मार्ग का सेवन करने वाले, महात्मा, प्रसन्न स्वरूप और मलीनता पाप आदि से रहित॥ ४८॥

मध्यनाथो महाकारो मकारो मखपूजितः।
मखो मखकरो मोहो मोहनाशो मरुत्प्रियः॥ ४९॥

मध्य के नाथ, महापरिमाण वाले, चन्द्र स्वरूप, यज्ञों में पूजित, यज्ञ स्वरूप, यज्ञ करने वाले, मोहरूप, मोह का नाश करने वाले और महात्माओं के प्यारे॥ ४९॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यकारो यज्ञकर्ता च यमो यागो यमप्रियः।
यशोधरो यशस्वी च यशोदाता यशः प्रियः॥५०॥

त्यागी यज्ञकर्ता यम स्वरूप, योग स्वरूप, यम के प्रिय, यश धारण करने वाले, प्रशस्तयश वाले, यश को देने वाले और यश से प्रेम रखने वाले॥ ५०॥

नमस्कार-प्रियोनाथी नरनाथो निरामयः।
नित्ययोगरतो नित्यो नन्दिनाथो निरात्तमः॥ ५१॥

नमस्कार प्रेमी, नाथ, मनुष्यों के नाथ, निरोग रहने वाले हमेशा योग में लगे रहने वाले, अविनाशी, नन्दी के नाथ और नरों में श्रेष्ठ॥ ५१॥

रमणो रामनाथश्च रामभद्रो रमापतिः।
रांरांखो रामरामो रामराधनतत्परः॥ ५२॥

लोगों को आनन्द देने वाले, रामचन्द्र के स्वामी, राम स्वरूप लक्ष्मी के स्वामी, परब्रह्म बीज का जप करने वाले, राम में रमने वाले और परब्रह्म की उपासना में संलग्न॥ ५२॥

राजीवलोचनो रम्यो रागवेत्ता रतीश्वरः।
राजधर्मप्रियो राज-नीतितत्व-विशारदः॥ ५३॥

कमल के समान नेत्र वाले, सुन्दर स्वरूप, राग शास्त्र के ज्ञाता, काम के समान सुन्दर, राजाओं के धर्म से प्रेम करने वाले, राजनीति के तत्व को जानने वाले॥ ५३॥

रंजको रणमूर्तिश्च राज्यभोगप्रदः प्रभुः।
रमाप्रियो रमादाता रमा-भाग्य-विवर्द्धनः॥ ५४॥

लोक रञ्जक, रण की मूर्ति, राज्य भोग के देने वाले, सब कुछ करने में समर्थ, लक्ष्मी के प्यारे और लक्ष्मी का सौभाग्य बढ़ाने वाले॥ ५४॥

रक्तचन्दन-लिप्ताङ्गो रक्तगन्धानुलेपनः।
रक्तवस्त्रविलासी च रक्तभक्त-फलप्रदः॥ ५५॥

लाल चन्दन लगाने वाले, लाल गन्ध के लेपन करने वाले लाल वस्त्र पहिनने वाले, प्रेमी भक्तों को फल प्रदान करने वाले॥ ५५॥

अतीन्द्रियो विश्वयोनिरमेयात्मा पुनर्वसुः।
सत्यधर्मो बृहद्रूपो नैकरूपो महीधरः॥ ५६॥

इन्द्रियों से अतीत, विश्व को उत्पन्न करने वाले, अज्ञेय आत्मा वाले अर्थात् जिनकी आत्मा का माप नहीं है, पुनः पुनः शरीर में निवास करने वाले, सत्य धर्म वाले, महान व्यापक रूप वाले, अनन्त रूप वाले और पृथ्वी को धारण करने वाले ॥ ५६ ॥

अद्दयोऽव्यक्तरुपश्च विश्वबाहुः प्रतिष्ठितः।
अतुलो वरद स्तार परर्द्धिस्तु शुभेक्षणः॥ ५७॥

अदृश्य रूप वाले, अव्यक्त रूप वाले सहस्त्रों बाहु वाले, अपनी महिमा में स्थित रहने वाले, अतुलनीय, वर देने वाले या गौ देने वाले, संसार के भयों से जन्म मृत्यु के भय से तारने वाले, सर्वोत्तम विभूति वाले और पवित्र दर्शन वाले ॥ ५७ ॥

हिरण्यगर्भः प्रणवो धर्मो धर्म-विदुत्तमः।
वत्सलो वीरहा सिंहः स्ववशो भूरिदक्षिणः॥ ५८॥

सुवर्ण के अण्डे से उत्पन्न होने वाले, ओंकार रूप, उन्नति और मोक्ष देने वाले, श्रुतिस्मृतियों को उत्पन्न करने वाले, भक्तों के प्रेमी, महावीर, सिंह के समान पराक्रम वाले स्वतन्त्र और यज्ञ में बहुत दक्षिणा देने वाले ॥ ५८ ॥

गङ्गाधर गुरुर्गेयो गतरागो गतस्मयः।
सिद्धगीतः सिद्धकथो गुणपात्रो गुणाकरः॥ ५९॥

शिवजी के शिष्य, प्रशंसनीय, राग रहित, द्वेष रहित, सिद्धों से स्तुति किये जाने वाले, प्रसिद्ध चरित्र वाले, गुणों के पात्र और गुणों की खान ॥ ५९ ॥

दृष्टः श्रुती भवद्भूतः समबुद्धिः समप्रभः।
महावायुर्महावीरो महाभूतस्तनुस्थितः॥ ६०॥

देखे गये, सुने गये, वर्तमान, भूत, समान बुद्धि वाले, समान तेज वाले, प्रलयकाल के वायु रूप, प्रलयकाल के जल, महाभूतिस्वरूप और प्राणियों के हृदय में विराजमान ॥ ६० ॥

नक्षत्रेशः सुधानाथो ध्रुवः कल्पान्त भैरवः।
सुधन्वा सर्वदृग् द्रष्टा वाचस्पतिरयोनिजः॥ ६१॥

नक्षत्रों के स्वामी, अमृत के स्वामी निश्चल, प्रलयकाल में भयानक रूप धारण करने वाले, सबके दृष्टि स्वरूप, सब देखने वाले, विद्याओं के पति और माता के गर्भ से न उत्पन्न होने वाले ॥ ६१ ॥

शुभाङ्गः श्रीकरः श्रेयः सत्कीर्तिः शाश्वतः स्थिरः।
विशोकः शोकहा शान्तः कामपाल कलानिधिः॥ ६२॥

मङ्गलमय शरीर के अङ्गों से युक्त, भक्तों को लक्ष्मीवान करने वाले, सर्वदा आनन्दमय, श्रेष्ठ यश वाले, अविनाशी, निश्चल, शोक से रहित, भक्तों की चिन्ता को दूर करने वाले, सौम्य स्वरूप, इच्छा का पालन करने वाले, कलाओं से पूर्ण॥ ६२॥

विशुद्धात्मा महायज्वा ब्रह्मज्ञो ब्रब्राह्मणप्रियः।
पूर्णः पूर्णकरः स्तोता स्तुतिः स्तव्यो मनोजवः॥ ६३॥

निष्कलङ्क आत्मा वाले, लोक शिक्षा के लिये स्वयं यज्ञ करने वाले, स्वरूप ब्रह्म को स्वयं जानने वाले ब्राह्मणों के प्रेमी, सब कामनाओं और शक्तियों से पूर्ण करने वाले, स्वयं अपने आत्मा की स्तुति करने वाले, स्तुति रूप, सबसे स्तुति किये जाने वाले और मन के समान वेग वाले॥ ६३॥

ब्रह्मण्यो ब्राह्मणो ब्रह्म सद्भूतिः सत्पराक्रमः।
प्रकृति पुरुषो भोक्ता सुखदः शिशिरः शमः॥ ६४॥

ब्राह्मण का हित करने वाले, स्वयं वेद का स्मरण करने वाले ब्राह्मण, सत्य आदि लक्षणों से युक्त ब्रह्मस्वरूप, नित्य ऐश्वर्य वाले, तत्त्वज्ञानियों के प्रधान स्थान, प्रकृति स्वरूप और पुरुष स्वरूप, प्रकृति के किये कर्मों का फल भोगने वाले, सुख देने वाले, त्रिविध तापों से तपे हुए लोगों को शान्ति देने वाले और सब प्राणियों के लिये समान॥ ६४॥

सत्वं रजस्तमः सोमो सोमपाः सौम्यदर्शनः।
त्रिगुणस्त्रिगुणातीतो त्रीयरूपस्त्रिलोकपः॥ ६५॥

शुद्धावस्था में केवल सत्वरूप, कर्तृत्वावस्था में रजोरूप, संहार में काल तमस्वरूप, सोम स्वरूप सोमपान करने वाले, मनोहर दर्शन है जिनका, त्रिगुणमय, तीनों के वेदों के स्वरूप और तीनों लोकों की रक्षा करने वाले॥ ६५॥

दक्षिणः पेशलः स्वास्यो दुर्गो दुःस्वप्ननाशनः।
जितमन्युर्गंम्भीरात्मा प्राणभृत् व्यादिशो दिशोः॥ ६६॥

बढ़ी हुई शक्ति वाले, मन से कर्म से वचन से शरीर से और बुद्धि से सुन्दर, सुन्दर और वेदों से पवित्र मुख वाले, दुख से अर्थात् योग तप और समाधि से प्राप्त करने योग्य, दुःस्वप्न का नाश करने वाले, शोक और क्रोध से रहित, गम्भीर आत्मा वाले, प्राणमय, देवताओं को विविध आज्ञा प्रदान करने वाले, सम्पूर्ण कर्मों का फल देने वाले॥ ६६॥

मुकुटी कुण्डलो दण्डी कटकी कनकाङ्गदी।
अहः संवत्सरः कालः ज्ञापको व्यापकः कविः॥ ६७॥

मुकुट धारण करने वाले, कुण्डल धारण करने वाले, दण्ड धारण करने वाले, कड़ा धारण करने वाले, सोने का अङ्गद धारण करने वाले दिन स्वरूप, संवत्सर, समय स्वरूप, ज्ञान करने वाले, व्यापक और कवि॥ ६७॥

भूर्भुवः स्वः स्वरूपश्च आश्रमः श्रमणः क्षमी।
क्षमायुक्तो क्षयः क्षान्तः कृशः स्थूलो निरन्तरः॥ ६८॥

भूलोक स्वरूप, भूलोक स्वरूप और स्वर्ग लोक स्वरूप, संसार के प्राणियों को विश्राम स्वरूप, अविवेकियों को श्रम देने वाले सहनशील क्षमा करने वाले, प्रलयाकार, क्षमा स्वरूप, अतिसूक्ष्म, अतिस्थूल और सर्वत्र विराजमान॥ ६८॥

सर्वगः सर्ववित् सर्वः सुरेशश्व सुरोत्तमः।
समात्मा संमितः सत्यः सुपर्वा शुचिरच्युतः॥ ६९॥

सब में विभक्त, सब को जानने वाले, सर्वमय, देवताओं के ईश्वर, देवताओं में प्रधान, समान रूप में व्याप्त, सबके लिये समान, सत्यमय, सुन्दर पर्व वाले, परम पवित्र और कभी नष्ट न होने वाले॥ ६९॥

सर्वादिः शर्मकृच्छान्तो शरण्यः शरणार्तिहा।
शुभलक्षरणयुक्ताङ्ग शुभाङ्ग शुभदर्शनः॥ ७०॥

सबसे पहले (अनादि), कल्याण करने वाले, शान्त शरण देने वाले शरणागतों की पीड़ा दूर करने वाले, शुभलक्षणों से युक्त अङ्गों वाले, शुभ अङ्गों वाले और शुभदर्शन वाले॥ ७०॥

पावकः पावनो पूतो महाकालो महापहा।
लिङ्गमूर्तिरलिङ्गात्मा लिङ्गालिङ्गात्मविग्रहः॥ ७१॥

अग्नि रूप वायु रूप अर्थात् सबको पवित्र करने वाले, महाकाल स्वरूप, मद (अभिमान) को दूर करने वाले, लिङ्गाकार, (व्यक्त) चिह्नरहित, (अव्यक्त) और व्यक्ताव्यक्त दोनों (उभय रूप)॥ ५१॥

कपालमालाभरणः कपाली विष्णुवल्लभः।
कालीधीशः कालकर्ता दुष्टावग्रहकारकः॥ ७२॥

मुण्डमालाधारी, कपालधारी, विष्णु के प्यारे, मृत्यु के स्वामी, समय के प्रवतक और दुष्टों का सर्वथा अभाव करने वाले॥ ७२॥

नाटयकर्ता नटवरो नाटयशास्त्र-विशारदः।
अतिरागो रागहेतुर्वीतरागो विरागगवित्॥ ७३॥

तृत्य करने वाले नटों में श्रेष्ठ, नृत्यशास्त्र में विद्वान्, अत्यन्त राग वाले, राग के कारण, राग से रहित और वैराग्य को जानने वाले॥ ७३॥

वसन्तकृद् वसन्तात्मा वसन्तेशो वसन्तदः।
जीवाध्यक्षो जीवरूपो जीवो जीवप्रदः सदा॥ ७४॥

वसन्त का उद्भव करने वाले, स्वयं वसन्तरूप, वसन्त के स्वामी, जीवों के स्वामी, जीव का रूप धारण करने वाले, स्वयं जीव और जीव को देने वाले॥ ७४॥

जीवबन्धहरो जीव-जीवनम् जीव संश्रयः।
वज्रात्मा-वज्रहस्तश्च सुपर्णाः सुप्रतापवान्॥ ७५॥

प्राणियों का बन्धन हरण करने वाले, जीवों के जीवन, प्राणियों के आधार, वज्रस्वरूप, वज्र हाथ धारण करने वाले, सुपर्ण और अच्छे पराक्रम वाले॥ ७५॥

रुद्राक्षमाला-भरणो भुजङ्गाभरणप्रियः।
रुद्राक्षवक्षाः रुद्राक्ष-शिरः रुद्राक्षभक्षकः॥ ७६॥

रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले, सर्पों के भूषण से प्रसन्न होने वाले, छाती में रुद्राक्ष धारण करने वाले, सिर में रुद्राक्ष धारण करने वाले और रुद्राक्ष भक्षण करने वाले॥ ७६॥

भुजङ्गेन्द्रलसत्कण्ठो भुजङ्गवलयावृतः।
भुजङ्गेन्द्रलसत्कर्णो भुजङ्कृत-भूषण॥ ७७॥

वासुकी से शोभित कण्ठ वाले, सर्पो का कड़ा धारण करने वाले, वासुकी से शोभित कान वाले और सर्पो का भूषण बनाने वाले॥ ७७॥

उग्रोऽनुग्रो भोमकर्मा भोगो भोम पराक्रमः।
मेध्योऽवध्योऽमोघशक्तिर्निर्द्वन्दोऽमोघविक्रमः॥ ७८॥

भयानक रूप वाले, मोहन रूप वाले, सम्पूर्ण भोगों से युक्त, भयानक पराक्रम वाले, सबसे अधिक पवित्र किसी से भी न मारे जाने वाले, सकल शक्ति वाले, द्वन्द-रहित (अद्वैत) और सफल पराक्रम वाले॥ ७८॥

कल्प्योऽकप्यो निराकल्पो विकल्पः कल्पनाशनः।
कल्पाकृतिः कल्पकर्ता कल्पान्तः कल्परक्षकः॥ ७९॥

योगियों से कल्पना किये जाने वाले, कल्पना से भी अतीत, वेष रहित अर्थात् दिगम्बर, विकल्प रूप, प्रलय का नाश करने वाले, प्रलय के देवता प्रलय करने वाले प्रलय काल-स्वरूप और कल्प की रक्षा करने वाले ॥ ७९ ॥

सुलभोऽसुलभो लभ्योऽलभ्यो लाभप्रवर्द्धकः।
लाभात्मा लाभदो लाभो लोकबन्धुस्त्रयोतनुः ॥ ८० ॥

सुलभ, दुर्लभ, तप और समाधि से प्राप्त किये जाने वाले, साधारण लोगों के लिए अलभ्य, भक्तों के कार्यों को सफल करने वाले, लाभ स्वरूप, लाभ देने वाले, मुमुक्षओं को मिलने वाले, लोक के मित्र और वेद मय शरीर वाले ॥ ८० ॥

भूशयोऽन्नमयो भूकृन्कमनीयो महीतनुः।
विज्ञानमय आनन्दमयः प्राणमयोऽन्नदः ॥ ८१ ॥

पृथ्वी में शयन करने वाले, अन्नमयकोष, पृथ्वी को उत्पन्न करने वाले, अभिलाषा किये जाने वाले, पृथ्वी का रूप धारण करने वाले, विज्ञानमय कोश, आनन्दमय कोश, प्राणमय कोश और अन्नरूपी ब्रह्म को देने वाले ॥ ८१ ॥

दयासुधार्द्रनयनो निराशोरपरिग्रहः।
पदार्थवृत्ति राशास्यो मायावी मूकनाशनः ॥ ८२ ॥

दयारूपी, अमृत से पूर्ण आँखों वालें, भोजन न करने वाले, पुत्र कलत्र-रहित, पदार्थों में रहने वाले, आशा करने के योग्य, माया वाले और मूकता को नाश करने वाले ॥ ८२ ॥

हितैषो हितकृत् युग्यो परार्थैकप्रयोजनः।
कर्पूरगौरः परदो जटा मण्डल-मण्डितः ॥ ८३ ॥

सबका हित चिन्तन करने वाले, सबका हित करने वाले, सब युगों में उत्पन्न होने वाले, सर्वदा पदर्थ ही है प्रयोजन जिनका, कपूर के समान गौरवर्ण वाले, शत्रुओं का नाश करने वाले और जटाजूट से शोभित ॥ ८३ ॥

निष्प्रपञ्चो निराधारो सत्वेशो सत्ववित् सदः।
समस्तजगदाधारो समस्तानन्दकारणः ॥ ८४ ॥

प्रपञ्चरहित, आधार रहित, सत्व के स्वामी, बल को जानने वाले, क्रोध का नाश करने वाले, समस्त जगत के आधार और समस्त आनन्दों के कारण ॥ ८४ ॥

मुनिवन्द्यो वीरभद्रो मुनिवृन्द-निशेवितः।
मुनिहृतूपुण्डरोकस्थो मुनिसङ्घैकजीवनः ॥ ८५ ॥

मुनियों से प्रणाम किये जाने वाले, वीरों में श्रेष्ठ, मुनियों के वृन्द से सेवित, मुनियों के कमल में निवास करने वाले और मुनियों का समूह ही है जीवन जिनका ॥ ८५ ॥

उच्चैर्घोषो घोषरूपः पत्तीशः पापमोचनः।
ओषधोशो गिरिशयः कृत्स्नवोतः शुचिस्मितः ॥ ८६ ॥

ऊंचा शब्द करने वाले, शब्द स्वरूप, सेनाओं के स्वामी, पापों का मोचन करने वाले, औषधियों में स्थित और सुन्दर मुसकान वाले ॥ ८६ ॥

अरण्येशो परिचरो मन्त्रात्मा मन्त्रवित्तमः।
प्रलयानलकृत् पुष्टः सोमसूर्याग्निलोचनः ॥ ८७ ॥

वनों के स्वामी, चारों और विचरण करने वाले, मन्त्रमय, मंत्र जानने वालों में श्रेष्ठ, कालाग्नि को उत्पन्न या नाश करने वाले, पुष्ट और सूर्य चन्द्रमा तथा अग्नि हैं नेत्र जिनके ॥ ८७ ॥

अक्षोभ्यः क्षोभरहितो भस्मोद्धूलितविग्रहः।
शार्दूलचर्मवसनः सामगः सामगप्रियः ॥ ८८ ॥

क्षोभ न किये जाने वाले, क्षोभ से रहित, भस्म से भूषित शरीर वाले, व्याघ्र चर्म धारण करने वाले, साम का गान करने वाले और साम गाने वालों के प्यारे ॥ ८८ ॥

कैलाशशिखरावासो स्वर्णकेशः सुवर्णदृक्।
स्वतन्त्र सर्वतन्त्रात्मा प्रणतार्तिप्रभञ्जनः ॥ ८९ ॥

कैलाश शिखर पर निवास करने वाले, स्वर्ण के समान केश वाले, सुवर्ण दृष्टि वाले, स्वतन्त्र, सर्वशास्त्रमय और प्रणत जनों की पीड़ा हरण करने वाले ॥ ८९ ॥

निकटस्थोऽतिदूरस्थो सहोत्साहो महोदयः।
ब्रह्मचारी दृढाचारी सदाचारी सदातनः ॥ ९० ॥

नजदीक रहने वाले, अत्यन्त दूर रहने वाले, महा उत्साह वाले, महान् उदय वाले, ब्रह्मचारी, सुदृढ़ाचारी, सदाचारी और पुराण पुरुष ॥ ९० ॥

अपघृष्यः पिङ्गलाक्ष्यः सर्व-धर्म-फल-प्रदः।
अविद्या रहितो विद्या-संश्रयः क्षेत्रपालकः ॥ ९१ ॥

किसी से दमन न किये जाने वाले, पीली आँखों वाले, सब धर्म का फल देने वाले, अविद्या से रहित, विद्याओं के आत्रय और क्षेत्रपाल ॥ ९१ ॥

गजारिः करुणासिन्धुः शत्रुघ्नः शत्रुपातनः ।
कमठो भार्गवः कल्कि ऋृषभः कपिलो भवः ॥ ९२ ॥

गज के मारने वाले, दया के सागर, शत्रुओं का नाश करने वाले, शत्रुओं को ताप देने वाले, कूर्म रूप धारण करने वाले कल्कि अवतार धारण करने वाले, ऋषभावतार धारण करने वाले, कपिलावतार धारण करने वाले और उत्पत्तिस्थान ॥ ९२ ॥

शून्य शून्यमयः शून्यजन्मा शून्यलयोऽलयः ।
शून्याकारः शून्यदेवो प्रकाशात्मा निरीश्वरः ॥ ९३ ॥

शून्य, शून्य स्वरूप, शून्य से उत्पन्न होने वाले, शून्य में लीन हो जाने वाले, निराकार शून्य में रहने वाले देवता, प्रकाश के पुञ्ज और स्वामी से रहित ॥ ९३ ॥

कोराजो गोगणोपेतो गो-देवो गोपतिप्रियः ।
गवीश्वरो गवा दाता गोरक्षाकारको गिरिः ॥ ९४ ॥

गौओं के राजा, गौओं के झुण्ड से घिरे हुए, गौओं में प्रकाशमान, नन्दी के प्रेमी या सूर्य के प्रिय, वृषस्वरूप, गौओं को दान करने वाले और गौओं की रक्षा करने वाले ॥ ९४ ॥

चेतनश्चेतनाध्यक्षो महाकाशो निरापदः ।
जड़ो जड़गतो जाड़य-नाशनो जड़तापहा ॥ ९५ ॥

चेतन स्वरूप, चेतन के अध्यक्ष, (साक्षीरूप), महाकाश, उपद्रवों से रहित, जड़रूप, जड़ में रहने वाले, जड़ता का नाश करने वाले और जड़ों का ताप दूर करने वाले ॥ ९५ ॥

रामप्रियो लक्ष्मणेढयो वितस्तानन्ददायकः ।
काशीवास-प्रियो रङ्गो लोकरञ्जन कारकः ॥ ९६ ॥

राम के प्यारे, लक्ष्मण से पूजित, विदस्ता (नदी) को आनन्द देने वाले काशी वास के प्रेमी, नाट्य करने वाले और लोक रञ्जन करने वाले ॥ ९६ ॥

निर्वेदकारी निर्विण्णो महनीयो महाधनः ।
योगिनीवल्लभो भर्त्ता भक्तकल्पतरु र्ग्रही ॥ ९७ ॥

वैराग्य करने वाले विरक्त, पूजनीय, वैराग्य रूपी धन वाले, सबका भरण करने वाले, भक्तों के कल्पवृक्ष और ग्रहणशील॥ ९७॥

ऋषभो गौतमः स्त्रग्वी बुद्धो बुद्धिमतां गुरुः।
नीरूपो निर्ममोऽक्रूरो निरवद्यो निराग्रहः॥ ९८॥

ऋषभदेव, गौतमऋषि मालाधारी, बुद्धिमान, बुद्धि वालों के गुरु नीरूप, ममता से रहित, सदा शान्त रहने वाले, दोष रहित, आग्रह से रहित॥ ९८॥

निर्दम्भो नीरसो नीलो नायको नायकोत्तमः।
निर्वाणनायको नित्य स्थितो निर्णयकारकः॥ ९९॥

दम्भ से रहित, रसों से रहित, नील रूप, नेता, नेताओं में श्रेष्ठ, मुक्ति के नेता, नित्य स्थिति वाले और निर्णय करने वाले॥ ९९॥

भाविको भावुको भावो भवात्मा भवमोचनः।
भव्यदाता भवत्राता भगवान् भूतिमान भवः॥ १००॥

कल्याण युक्त भाव वाले, भाव स्वरूप, संसार के आत्मा या संसार स्वरूप, भवबन्धन का नाश करने वाले, कल्याण देने वाले, भय से रक्षा करने वाले, ऐश्वर्य वाले और शिव स्वरूप या उत्पत्तिशील॥ १००॥

प्रेमी प्रियः प्रेमकरः प्रेमात्माः प्रेमवित्तमः।
फुल्लारविन्दनयनो नयात्मा नीतिमान् नयी॥ १०१॥

प्रेमी, सबके प्रिय, प्रेम करने वाले प्रेम स्वरूप, प्रेमियों में श्रेष्ठ, खिले कमल के समान नेत्र वाले, नीतिरूप, नीति वाले और नीति को उत्पन्न करने वाले॥ १०१॥

परंतेज परंधाम परमेष्ठी पुरातनः।
पुष्करः पुष्कराध्यक्षः पुष्करक्षेत्रसंस्थितः॥ १०२॥

महान् तेज (परंब्रह्म), परम पद वाले, परब्रह्म में लीन, सबसे पुरातन, पुष्कर रूप, पुष्कर के अध्यक्ष और पुष्कर क्षेत्र में रहने वाले॥ १०२॥

प्रत्यगात्माऽप्रतर्क्यस्तु राजमान्यो जगत्पतिः।
पुण्यात्मा पुण्यकृत् पुण्य-प्रियः पुण्यवदाश्रितः॥ १०३॥

अद्वैतात्मा अशङ्कनीय, राजाओं के माननीय, जगत के पोषक पुण्यात्माओं के प्रिय और पुण्यात्माओं के आश्रित॥ १०३॥

वायुदो वायुसेवो च वाताहारो विमत्सरः।
बिल्वप्रियो बिल्वधारी बिल्वमाल्यो लयाश्रयः॥ १०४॥

वायु को देने वाले, वायु का सेवन करने वाले, वायु का आहार करने वाले, मात्सर्य रहित, बिल्व के प्रेमी, बिल्व पत्र को धारण करने वाले, बिल्व माला धारण करने वाले और शून्य के आश्रम में रहने वाले॥ १०४॥

बिल्वभक्तो बिल्वनाथो बिल्वभक्तिप्रियो वशी।
शम्भुमन्त्रधरः शम्भु-योगः शम्भुप्रियो हरः॥ १०५॥

बिल्व वृक्ष के नीचे तप करने वाले, बिल्व वृक्ष के स्वामी बिल्व भक्ति वाले, इन्द्रियों का निग्रह करने वाले, शिव मंत्र को धारण करने वाले, शिव का योग धारण करने वाले, शिवजी के प्रिय और संसार का संहार करने वाले॥ १०५॥

स्कन्दप्रियो निरास्कन्दो सुखयोगः सुखासनः।
क्षमाप्रियः क्षमादाता क्षमाशीलो निरक्षमः॥ १०६॥

स्कन्द (कार्तिकेय) के प्रेमी, आकर्षण करने के योग्य, सरल है योग जिनका, सुख से आसन लगाने वाले, क्षमा के प्रेमी, क्षमा के दाता, क्षमाशील और अक्षमा से रहित अर्थात् क्षमा करने वाले॥ १०६॥

ज्ञानज्ञो ज्ञानदो ज्ञानी ज्ञानगम्यः क्षमापतिः।
क्षमाचारस्तत्वदर्शी तन्त्रज्ञ स्तन्त्रकारकः॥ १०७॥

ज्ञान को जानने वाले, ज्ञान देने वाले, ज्ञान वाले, ज्ञान से अगम्य, क्षमा के स्वामी, पृथ्वी पर विचरण करने वाले या क्षमा ही है आचार जिनका, तत्व को जानने वाले, तंत्र को जानने वाले और तंत्र शास्त्र को करने वाले॥ १०७॥

तन्त्रसाधन तत्त्वज्ञस्तनत्र मार्गप्रवर्तकः।
तन्त्रात्मा बालतम्त्रज्ञो मन्त्रमन्त्रकलप्रदः॥ १०८॥

तंत्र सिद्ध करने के तत्त्व को जानने वाले, तंत्र मार्ग के प्रधान प्रवर्तक, तन्त्रमय, बालतंत्र को जानने वाले यंत्र मंत्र आदि का फल देने वाले॥ १०८॥

गोरसो गोरसाधीशो गोसिद्धा गोमती प्रियः।
गोरक्षाकारको गोमी गोराड् गोपर्पागुरूः॥ १०९॥

गोरक्ष रूप, गोरस के स्वामी, गायों से सिद्ध, गोमती के प्यारे, गोरक्षा करने वाले गौ वाले, गोओं के राजा, गोपों के स्वामी और अज्ञान का नाश करने वाले॥ १०९॥

सम्पूर्ण कामः सर्वेष्ठ दाता सर्वात्मकः शमी।
शुद्धोऽरुद्धोऽविरुद्धश्च प्रबुद्धः सिद्ध-सेवितः॥ ११०॥

सब कामनाओं से परिपूर्ण, सब इष्ट देने वाले, सर्वमय, इन्द्रियों का शमन करने वाले, शुद्ध ज्योतिःस्वरूप, स्वतंत्र, अविरोधी, सदा जागने वाले और सिद्धों से सेवित ॥ ११० ॥

धर्मो धर्मविदां श्रेष्ठो धर्मज्ञो धर्मधारकः।
धर्मसेतुर्धर्मराजो धर्ममार्ग-प्रवर्तकः॥ १११ ॥

धर्म स्वरूप, धर्मशास्त्रकर्ताओं में श्रेष्ठ, धर्म को जानने वाले, धर्म को धारण करने वाले, धर्म के सेतु, धर्म के राजा और धर्म मार्ग को चलाने वाले ॥ १११ ॥

धर्माचार्यो धर्मकर्ता धर्म्यो धर्मविदग्रणीः।
धर्मात्मा धर्ममर्मज्ञो धर्मशास्त्रविशारदः॥ ११२ ॥

धर्म के प्रधान आचार्य, धर्माचरण करने वाले, धर्म से युक्त, धर्म जानने वालों में सर्व प्रथम, धर्मात्मा, धर्म के मर्म को जानने वाले और धर्मशास्त्र में पारगामी ॥ ११२ ॥

कर्ता धर्ता जगद्धर्ताऽपहर्तासुर रक्षसाम्।
वेत्ता छेत्ता भवापत्तेर्भेत्ता पापस्य पुण्यकृत॥ ११३ ॥

संसार के करने वाले, लोकों को धारण करने वाले, संसार का पालन पोषण करने वाले, असुरों और राक्षसों का नाश करने वाले, सब कुछ जानने वाले, संसार की आपत्तियों को काटने वाले, पाप को दूर करने वाले, और पुण्य करने वाले ॥ ११३ ॥

गुणवान् गुणसम्पन्नो गुण्यो गण्यो गुणप्रियः।
गुणज्ञो गुणसम्पूज्यो गुणानन्दितमानसः॥ ११४ ॥

गुण वाले गुणों से युक्त, गुणों के योग्य, गिने जाने वाले, गुणों के प्रेमी, गुणों को जानने वाले, पूजनीय गुण वाले और गुणों से लोगों के मन को आनन्दित क़रने वाले ॥ ११४ ॥

गुणाधारो गुणाधीशो गुणिगीतो गुणिप्रियः।
गुणाकारो गुणाश्रेष्ठो गुणदाता गुणोज्वलः॥ ११५ ॥

गुणों के आधार, गुणों के स्वामी, गुणियों से प्रशंसित, गुणियों के प्यारे गुणों के उत्पत्तिस्थान, गुणों से ही सर्वश्रेष्ठ, गुणों को देने वाले और गुणों से शोभित ॥ ११५ ॥

गर्गप्रियो गर्गदेवो गर्गदेव-नमस्कृतः।
गर्गानन्दकरो गर्ग गीतो-गर्गवरप्रदः॥ ११६ ॥

गर्ग मुनि के प्यारे, गर्ग के इष्ट देव, गर्ग से प्रणाम किये गये (पूजित) गर्ग को आनन्द देने वाले, गर्ग से प्रशंसित और गर्ग को वरदान देने वाले ॥ ११६ ॥

वेदवेद्यो वेदविदो वेदवन्द्यो विदांपतिः।
वेदान्तवेद्यो वेदान्तकर्ता वेदान्तपारनः॥ ११७॥

वेद से जानने कोम वेद विद्या वाले, वेदों से वन्दनीय, वेद जानने वालों के आचार्य, वेदान्त से प्रणेता और वेदान्त के भी पार जाने वाले॥ ११७॥

हिरण्यरेता हुतभुक् हिमवर्णो हिमालयः।
हयग्रीवो हिरण्यस्त्रक् हयनाथो हिरण्यमयः॥ ११८॥

सुवर्ण वीर्य वाले, हवन किये गये को खाने वाले, श्वेत वर्ण वाले हिमालय पर्वत के स्वरूप, हयग्रीव का अवतार धारण करने वाले, सोने की माला पहिरने वाले, घोड़ों के स्वामी (उच्च:श्रवा) सुवर्णमय शरीर धारण करने वाले॥ ११८॥

शक्तिमान् शक्तिदाता च शक्तिनाथः सुशक्तिकः।
शक्तिऽशक्तः शक्तिसाध्यः शक्तिहृत् शक्तिकारणम्॥ ११८॥

शक्तिवाले, शक्तिदान करने वाले, शक्ति के नाथ, अत्यन्त शक्ति सम्पन्न, सामर्थ्य वाले, माया से रहित शुद्ध, शक्ति से सिद्ध किये जाने वाले, शक्ति का हरण करने वाले और शक्ति के कारण॥ ११९॥

सर्वाशास्यगुणोपेतः सर्वसौभाग्यदायकः।
त्रियुण्डाधारी सन्यासी गजचर्मपरिवृतः॥ १२०॥

सब गुणों से युक्त, सर्व प्रकार के ऐश्वर्यदाता, त्रिपुण्ड चन्दनधारी वैराग्यवान, सन्यासी रूप, हस्ती के चर्म को धारण करने वाले और शिव स्वरूप॥ १२०॥

गजासुरविमर्दी च भूतवैतालशोभितः।
श्मशानारण्यसंवासी कर्परालङ्कृतः शिवः॥ १२१॥

गजासुर का नाश करने वाले, भूत वेताल से शोभित, शमशान में रहने वाले जंगलों में विचरण करने वाले, खप्पर धारण करने वाले॥ १२१॥

कर्म्मसाक्षी कर्म्मकर्त्ता कर्म्मा कर्मफलप्रदः।
कर्मण्यः कर्मदः कर्मी कर्महा कर्म कृद् गुरुः॥ १२२॥

कर्मों के साक्षी, कर्म करने वाले, कर्म और अकर्म का फल देने वाले, कर्म से सामर्थ्य रखने वाले, शुभ कर्मों को देने वाले, शुभ कर्मों को करने वाले, कर्म बन्धन को दूर करने वाले और शुभ कर्म करने वालों के गुरु॥ १२२॥

गोसंकष्टसंत्राता गोसन्ताप निवर्तकः।
गोवर्द्धनो गवांदाता गो सौभाग्य-विवर्द्धनः॥ १२३॥

गौओं की कष्ट से रक्षा करने वाले, गौओं के सन्याप को दूर करने वाले, गौओं की वृद्धि करने वाले, गौओं का दान करने वाले और गौओं का सौभाग्य बड़ाने वाले।

गर्ग उवाच

इदं गोरक्षनाथस्य स्तोत्रमुक्तम् ममय प्रभो।
नाम्नां सहस्त्र मेतद्धि गुह्याद् गुह्यतम परम्॥ १२४॥

गर्ग जी कहते हैं कि हे प्रभू श्री कृष्ण! यह गोरक्षनाथ जी का सहस्त्रनाम स्त्रोत जो मैंने तुमसे कहा है यह अत्यन्त गुप्त से महत्व पूर्ण है॥ १२४॥

एतस्य पठनं नित्यं सर्वाभीष्टप्रदं नृणाम्।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्॥ १२५॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी मुक्तिमाप्नुयात्।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्॥ ११६॥

इसका नित्य पाठ करना मनुष्यों की सब कामनाओं को पूर्ण करता है। विद्यार्थी विद्या प्राप्त करता है, धन चाहने वाला धन प्राप्त करता है, पुत्रार्थी पुत्र प्राप्त करता है, मोक्ष चाहने वाला मुक्ति पाता है। जिस जिस कामना को जो चाहता है उसको वह सब प्राप्त होता है॥ १२६॥

राज्यार्थी लभते राज्यं योगार्थी योगवान् भवेत्।
भोगार्थी लभते भोगान् गोरक्षस्य प्रसादतः॥ १२७॥
अरण्ये विषमे घोरे शत्रुभिः परि वेष्टितः।
सहस्त्रनाम पठनान्-नरो मुच्येतू तत्क्षणम्॥ १२८॥

गोरक्षनाथ जी की कृपा से राज्यार्थी राज्य प्राप्त करता, योगार्थी योग को पाता है भोगार्थी भोगों को प्राप्त करता है॥ १२७॥

भयंकर जंगल में आपत्ति में और शत्रुओं से घिरने पर, गोरक्ष सहस्त्रनाम का पाठ करने् से मनुष्य उसी समय छूट जाता है॥ १२८॥

राजद्वारे महामारी रोगे च भयदे नृणाम्।
सर्वेष्त्रपि च रोगेषु गोरक्ष स्मरणां हितम्॥ १२८॥

राजद्वार में, महामारी आदि मनुष्यों को भय देने वाले, समस्त रोगों में गोरक्षनाथ जी का स्मरण मनुष्यों को हितैषी है॥ १२९ ॥

नाम्नां सहस्ं यत्रस्याद्गृहे गृहवतां शुभम्।
धनधान्यादिकं तत्र पुत्र-पौत्रादिकं तथा॥ १३०॥
आरोग्यं पशुवृद्धिश्च शुभकर्माणि भूरिशः।
न भयं तत्र रोगाणां सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥ १३१॥

जिस गृहस्थ के घर में सहस्त्रनाम की पुस्तक रहती है वहां कल्याण धन, धान्य, पुत्र, पौत्र॥ १३०॥ आरोग्य, पशुवृद्धि और अनेक शुभ कर्म होते हैं। उस घर में रोगों का भय तनिक भी नहीं होता है मैं सत्य 2 कहता हूँ॥ १३१॥

सहस्नाम श्रवणात् पठनाच्च भवेदुध्रुवम्।
कन्यादान सहस्स्य वाजपेय शतस्यच॥ १३२॥
गवां कोटि प्रदानस्य ज्योतिष्टोमस्य यत् फलम्।
दशश्वमेघ यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः॥ १३३॥

सहस्त्रनाम के पढ़ने और सुनने से हजार कन्यादान का, सौ वाजपेय का फल मिलता है॥ १३२॥ करोड़ योगदान का और दश अश्वमेघ यज्ञ का फल मनुष्यों को अवश्य मिलता है॥ १३३॥

सहस्नामस्तोत्रस्य पुस्तकानि ददाति तः।
ब्राह्मणेभ्यस्तु सम्पूज्य तस्य लक्ष्मो स्थिरो भवेत्॥ १३४॥
लभते राजसम्मानं व्यापारस्य फलं लभेत्।
प्राप्तुयाच्च गतां लक्ष्मी सर्वज्ञविजयो भवेत्॥ १३५॥

जो मनुष्य ब्राह्मणों को पूजन करके गोरक्ष सहस्नाम की पुस्तक दान करता है, उसके घर में लक्ष्मी स्थिर होकर रहती है॥ १३४॥ और राज्य में सम्मान तथा व्यापार का फल प्राप्त होता है, गई लक्ष्मी लौट आती है और सर्वत्र विजय प्राप्त होती है॥ १३५॥

चतुर्दश्यां प्रदोषे च शिवं गोरक्ष संज्ञितम्।
पूजये द्विविधा चारै गन्ध पूष्पादिभिर नरः॥ १३६॥
संस्थाप्य पार्थिवं लिङ्गं गोरक्ष जगद्गुरोः।
भक्तया समर्चयेन् नित्यं साधकः शुद्ध मानसः॥ १३७॥

चतुर्दशी को या प्रति दिन प्रदोष काल में, गोरक्ष नाथ नामक शिवजी की गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से विविध प्रकार की पूजा करे॥ १३६॥ भगवान् गोरक्षनाथ के पार्थिव लिङ्ग की स्थापना करके, भक्ति और श्रद्धा से पूजन करे और उनके सामने साधक शुद्ध मन से॥ १३७॥

स्तोत्र पाठं प्रकुर्वीत कारयेद्ब्राह्मणैस्तथा।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥ १३८॥

सहस्नाम स्तोत्र का पाठ करे या ब्राह्मणों से करवाये। उसे सब प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती है, इसमें जरा भी विचार न करना चाहिए॥ १३८॥

ध्यायेदन्ते महेशानं पूजयित्वा यथाविधि।
ब्राह्मणान् पूजयेतत्र धनवस्त्रादिभिः शुभैः॥ १३९॥

अंत में विधि पूर्वक पूजन करके महेश्वर गोरक्ष नाथ का ध्यान करे और भोजन, धन, वस्त्र आदि से ब्रह्मणों की पूजा करे॥ १३९॥

ध्यानम्

यस्मादुद्भवती दमद्भ त तमं येनैव तत्पाल्यते,
यस्मिन् विश्वमिदं चराचरमयं संलोयते सर्वथा,
ब्रह्माविष्णुशिवादयोऽपि न पर पारं मता यस्य ते,
गोरक्षप्रभवं परात्परतरं शून्यं परमधीमहि॥ १४०॥

इति श्री – कल्पद्रुमतन्त्रे महासिद्धिसारे महर्षि गर्गप्रोक्त

निरंजनात्मकगोरक्ष सहस्त्रनाम स्तोत्रम्

प्रांण संकली

प्रथमे प्रणऊं गुरु के पाया। जिन मोहि आत्म ब्रह्म लषाया।
सत गुरु सबद कह्यां तै बूझया। तृहूँ लोक दीपक मनि सूझया॥ १॥
पाप पुंन करम का बासा। मोष मुक्ति चेतहु हरि पासा।
जोग जुक्त जब पाओ ग्याना। काया षोजौ पद नृबाना॥ २॥
सप्त दीप नव षंड ब्रह्मण्डा। धरती आकाश देवा रविचंदा।
तजिबा तिहूँ लोक निवासा। तहाँ निरञ्जन जोति प्रकासा॥ ३॥
दिवस न रातृ बरषे न मासा। गरजै मेघ गगन कविलासा।
अगम सुगम गढ़ रच्या बिनांणीं। अगनि पवन षेह[१] जल सांणीं॥ ४॥
तीस पौलि तेरह प्रबांणी। तीति गुप्त दस प्रकट जांणीं।
नौ नाटिका कोटड़ी बहतरि। चोर पचास पचीस पंच घरि॥ ५॥

तृहूँ ... सूझया = ज्ञान रूप मणि-दीप के प्राप्त होने से तीनों लोकों का ज्ञान होने लगता है॥ १॥

निर्वाण पद की खोज शरीर ही में करनी चाहिए। बाहर का रहना छोड़ो, बहिर्मुख वृत्ति को बाहरी वस्तुओं से समेटकर अंतर्मुख कर लो। (अपने भीतर निवास करो) वहाँ निरंजन ब्रह्मा की ज्योति प्रकाशमान है। काल उसको छू नहीं सकता॥ ३॥

वहाँ दिन, रात, वर्ष, मास आदि काल के परिणाम नहीं पहुंचते। अग्नि, पवन, मेह और जल एक साथ मिलाकर विज्ञान ने इसे अगम्य सुगम दुर्ग (शरीर) का निर्माण किया है। सामान्यतया यह दुर्ग दुरारोह है किन्तु योग की युक्तियों से सुगम है। यह कैलास के तुल्य ऊँचा है। इससे ऊपर आकाश में मेघ गरजते हैं॥ ४॥

उसके (तीस = तस्थ) तेरह प्रामाणिक फाटक हैं जिनमें दस प्रकट और तीन गुप्त हैं (प्रकट दस द्वार तो ब्रह्मरंध्र - सहित नवरंध्र हैं। तीन गुप्त द्वारों का वर्णन गोपनीय समझकर योगियों ने अफनी वाणियों में नहीं किया है) उसमें नौ नाड़ियाँ और बहत्तर कोठे हैं। नाड़ियाँ बहत्तर हजार मानी जाती हैं, उनमें से बहत्तर श्रेष्ठ मानी जाती हैं और उनमें से भी दस प्रधान। 'गोरक्ष शतक', 'गोरक्ष पद्धति' 1, २६। ये बहत्तर कोठे बहत्तर नाड़ियाँ की है। यहाँ दस नाड़ियों में से सुषुम्ना को छोड़कर शेष नौ कही हैं। सुषुम्ना ही में सब मिलती हैं। नौ नाड़ियों के नाम हैं - इड़ा, पिंगला, गांधारी, हस्तिजिह्वा, पूषा यशस्विनी, अलम्बुषा, कुहू और शंखिनी। इस घर में अर्थात् किले में पचास (अर्थात् षट्चक्र जिनमें सब मिलाकर ५० दल माने जाते हैं), पचीस (२५ प्रकृति देखिये आगे 'गोरख गणेश गोष्ठी' और पाँच

तत्व चोर हैं। जब तक षट्चक्र का बेधन नहीं होता, पचीस प्रकृतियाँ वश में नहीं होती, पञ्च तत्त्वों से ऊपर नहीं उठा जाता तब तक अध्यात्म-योग में सिद्धि नहीं हो सकती ॥ ५ ॥

चीरा लगा तीनिसै साठी। नौसै षाई नाटिक गांठी। नदी अठारह गंडिक बहई। मगर मच्छ जल पैरत रहई॥ ६॥ अहूठ कोटि बनासपती माला। सहज कमल दल पदमनी नाला। भेदि षट चक्र बसै नांगणीं। कोटणीं सत मोहि फणीं॥ ७॥ सबद एक जै प्रगट कहूँ सतगुर होई लषावै। गृहज्य नाम[1] अमींरस मीठा जो षोजै सो पावै॥ ८॥ गंगा जमुना तृबेणीं संधी। अजपा जपौ गावत्री बन्धी। पदया नीर उरध अस्थांनां। हिरदा पंकज मैं रहै समांनां॥ ९॥ नाद बिंद गांठि प्रवांनां। कवण घटि जोति कवण अस्थांनां। कहाँ निरंजन बासा करहीं। कहाँ काली नागनीं मीड़क धरहीं॥ १०॥ कहाँ जलधर पवनां मेला। उद्र कहाँ बिलइया घेरा। सींगी नाद कहाँ जोगी पूरा। जीत्या संग्राम पुरिष भया सूरा॥ ११॥

शरीर की ३६० हड्डियाँ पत्थर हैं जिनसे गढ़ बना है। शरीर में प्रधान नव नाड़ियाँ खाई हैं। नदी ... बहई-अठारह गंडा नदी अर्थात् १८×४=७२ नदियाँ। अर्थात् नाड़ियाँ। शरीर में ७२ करोड़ नाड़ियाँ मानी जाती है। जैसे चौरासी लाख योनि को कभी-कभी केवल ८४ कह देते हैं उसी प्रकार यहाँ ७२ कहा है। मगर मच्छ मकर, मत्स्य, भौतिकता का प्रतीक अहंकार ॥ ६ ॥

असंख्य नाड़ियों का अन्त रोमकूपों में हुआ है। उनसे उठने वाले रोम वनस्पति माला हैं। इन्हीं नाड़ियों का एक दूसरे से ग्रथित हो जाना ऊपर कोठड़ी कहा गया है। इनमें से प्रधान ग्रंथियाँ रूपक के आसरे नालदल युक्त कमल भी कहीं गयीं है। यहीं षट्चक्र है, कुंडलिनीशक्ति इनसे परे बसती है। (उसे जागरित करने के लिए इनका इसीलिए भेदन आवश्यक है) वह कोड़नी (माया, शक्ति, कुंडलिनी) अपने मोह रूप फणों से वहाँ सत्य की रक्षा करती है, सत्य के पास किसी को पहुँचने नहीं देती ॥ ७ ॥

जिस एक शब्द को मैं प्रकट रूप से कह रहा हूँ उसे सद्गुरु ही दिखा सकते हैं। अमृत रस मीठा है परन्तु उसकी विशेषता यह कि वह गुह्य (गुप्त) है। उसे वही प्राप्त कर सकता है, जो उसकी सच्ची खोज में लगता है ॥ ८ ॥

प्रांण संकली

प्रथमे प्रणऊं गुरु के पाया। जिन मोहि आत्म ब्रह्म लषाया।
सत गुरु सबद कह्यां तै बूझया। तृहूँ लोक दीपक मनि सूझया॥ १॥
पाप पुंन करम का बासा। मोष मुक्ति चेतहु हरि पासा।
जोग जुक्त जब पाओ ग्याना। काया षोजौ पद नृबाना॥ २॥
सप्त दीप नव षंड ब्रह्मण्डा। धरती आकाश देवा रविचंदा।
तजिबा तिहूँ लोक निवासा। तहाँ निरञ्जन जोति प्रकासा॥ ३॥
दिवस न रातृ बरषे न मासा। गरजै मेघ गगन कविलासा।
अगम सुगम गढ़ रच्या बिनांणीं। अगनि पवन षेह[१] जल सांणीं॥ ४॥
तीस पौलि तेरह प्रबांणी। तीति गुप्त दस प्रकट जांणीं।
नौ नाटिका कोटड़ी बहतरि। चोर पचास पचीस पंच घरि॥ ५॥

तृहूँ ... सूझया = ज्ञान रूप मणि-दीप के प्राप्त होने से तीनों लोकों का ज्ञान होने लगता है॥ १॥

निर्वाण पद की खोज शरीर ही में करनी चाहिए। बाहर का रहना छोड़ो, बहिर्मुख वृत्ति को बाहरी वस्तुओं से समेटकर अंतर्मुख कर लो। (अपने भीतर निवास करो) वहाँ निरंजन ब्रह्मा की ज्योति प्रकाशमान है। काल उसको छू नहीं सकता॥ ३॥

वहाँ दिन, रात, वर्ष, मास आदि काल के परिणाम नहीं पहुंचते। अग्नि, पवन, मेह और जल एक साथ मिलाकर विज्ञान ने इसे अगम्य सुगम दुर्ग (शरीर) का निर्माण किया है। सामान्यतया यह दुर्ग दुरारोह है किन्तु योग की युक्तियों से सुगम है। यह कैलास के तुल्य ऊँचा है। इससे ऊपर आकाश में मेघ गरजते हैं॥ ४॥

उसके (तीस = तस्थ) तेरह प्रामाणिक फाटक हैं जिनमें दस प्रकट और तीन गुप्त हैं (प्रकट दस द्वार तो ब्रह्मरंध्र - सहित नवरंध्र हैं। तीन गुप्त द्वारों का वर्णन गोपनीय समझकर योगियों ने अफनी वाणियों में नहीं किया है) उसमें नौ नाड़ियाँ और बहत्तर कोठे हैं। नाड़ियाँ बहत्तर हजार मानी जाती हैं, उनमें से बहत्तर श्रेष्ठ मानी जाती हैं और उनमें से भी दस प्रधान। 'गोरक्ष शतक', 'गोरक्ष पद्धति' 1, २६। ये बहत्तर कोठे बहत्तर नाड़ियाँ की है। यहाँ दस नाड़ियों में से सुषुम्ना को छोड़कर शेष नौ कही हैं। सुषुम्ना ही में सब मिलती हैं। नौ नाड़ियों के नाम हैं - इड़ा, पिंगला, गांधारी, हस्तिजिह्वा, पूषा यशस्विनी, अलम्बुषा, कुहू और शंखिनी। इस घर में अर्थात् किले में पचास (अर्थात् षट्चक्र जिनमें सब मिलाकर ५० दल माने जाते हैं), पचीस (२५ प्रकृति देखिये आगे 'गोरख गणेश गोष्ठी' और पाँच

तत्व चोर हैं। जब तक षट्चक्र का बेधन नहीं होता, पचीस प्रकृतियाँ वश में नहीं होती, पञ्च तत्त्वों से ऊपर नहीं उठा जाता तब तक अध्यात्म-योग में सिद्धि नहीं हो सकती॥ ५॥

चीरा लगा तीनिसै साठी। नौसै षाई नाटिक गांठी। नदी अठारह गंडिक बहई। मगर मच्छ जल पैरत रहई॥ ६॥ अहूठ कोटि बनासपती माला। सहज कमल दल पदमनी नाला। भेदि षट चक्र बसै नांगणीं। कोटणीं सत मोहि फणीं॥ ७॥ सबद एक जै प्रगट कहूँ सतगुर होई लषावै। गृहज्य नाम[१] अमींरस मीठा जो षोजै सो पावै॥ ८॥ गंगा जमुना तृबेणीं संधी। अजपा जपौ गावत्री बन्धी। पदया नीर उरध अस्थांनां। हिरदा पंकज मैं रहै समांनां॥ ९॥ नाद बिंद गांठि प्रवांनां। कवण घटि जोति कवण अस्थांनां। कहाँ निरंजन बासा करहीं। कहाँ काली नागनीं मीड़क धरहीं॥ १०॥ कहाँ जलधर पवनां मेला। उद्र कहाँ बिलइया घेरा। सींगी नाद कहाँ जोगी पूरा। जीत्या संग्राम पुरिष भया सूरा॥ ११॥

शरीर की ३६० हड्डियाँ पत्थर हैं जिनसे गढ़ बना है। शरीर में प्रधान नव नाड़ियाँ खाई हैं। नदी ... बहई-अठारह गंडा नदी अर्थात् १८×४=७२ नदियाँ। अर्थात् नाड़ियाँ। शरीर में ७२ करोड़ नाड़ियाँ मानी जाती है। जैसे चौरासी लाख योनि को कभी-कभी केवल ८४ कह देते हैं उसी प्रकार यहाँ ७२ कहा है। मगर मच्छ मकर, मत्स्य, भौतिकता का प्रतीक अहंकार॥ ६॥

असंख्य नाड़ियों का अन्त रोमकूपों में हुआ है। उनसे उठने वाले रोम वनस्पति माला हैं। इन्हीं नाड़ियों का एक दूसरे से ग्रथित हो जाना ऊपर कोठड़ी कहा गया है। इनमें से प्रधान ग्रंथियाँ रूपक के आसरे नालदल युक्त कमल भी कहीं गयीं है। यहीं षट्चक्र है, कुंडलिनीशक्ति इनसे परे बसती है। (उसे जागरित करने के लिए इनका इसीलिए भेदन आवश्यक है) वह कोड़नी (माया, शक्ति, कुंडलिनी) अपने मोह रूप फणों से वहाँ सत्य की रक्षा करती है, सत्य के पास किसी को पहुँचने नहीं देती॥ ७॥

जिस एक शब्द को मैं प्रकट रूप से कह रहा हूँ उसे सद्गुरु ही दिखा सकते हैं। अमृत रस मीठा है परन्तु उसकी विशेषता यह कि वह गुह्य (गुप्त) है। उसे वही प्राप्त कर सकता है, जो उसकी सच्ची खोज में लगता है॥ ८॥

बन्धी, बँधकर, लगकर, तल्लीन होकर, संयत होकर। पदया नीर = (अ) में इसका अनुवाद 'पद्गम्य नीर' किया गया है। नीर तो बिंदु है किन्तु 'पदया' का अर्थ संदिग्ध है। पाँवों से इसका सम्बन्ध लगाने से इसे गमनार्थक मानना चाहिए जिससे सारे चरण का अर्थ होगा, शुक्र को ऊर्ध्व स्थान में पहुँचाकर अर्थात् ऊर्ध्वरेता होकर॥ ९॥

नाद और बिंदु को प्रामाणिक रूप से ग्रथित करें। ज्योति किस घट में है ? उसका स्थान कहाँ है ? निरंजन का निवास कहाँ है ? काली सर्पिणीरूप माया जीवात्मा रूप मेढकों को कहाँ पकड़-पकड़कर खाया करती है॥ १०॥

ऊर्ध्वरेत (जलंधर) का पवन से मेल कहाँ होता है ? चूहे (उंद्र) को अर्थात् जीव को कहाँ बिल्ली (अर्थात् माया) घेरती है ? जोगी सिंगी नाद (अनाहद नाद) कहाँ बजाता है ? जहाँ संग्राम को जीतकर शूर (साधक) पुरुष (सिद्ध) हो जाता है॥ ११॥

पूनम चंदा कैसैं छीनां। रवि ससि फेरि पवन घरि कीनां।
सुषिनै इंद्री कांम न गहई। ता करणि जोगेश्वर परलै ढहई॥ १२॥
सप्त गांठि सरीर की नारी। अरध उरध मैं लाइलै ताली।
बिच बिच लागी नौ नौ कली। अष्ट कवल बतीस पांषुड़ी॥ १३॥
नाद रह्या सरवत्र पूरि। गगन मंडल मैं षोजौ अवधू वस्त अगोधर मूर।
नगर कोटि की बहुविधि गली। सुन्दिर एक राजंदरि खड़ी॥ १४॥
पंच महा रिषि तहाँ कुटवाल। तिनकी तृया महा झूझारि।
इनहि मारि जें लागै पंथा। सुन्दरि जीतै लोक सौ कंथा॥ १५॥
इला प्यंगुला सुषमनां नाड़ी। छुटै भ्रंम मिलै बनवारी।
पंच तत्त विष अंमृत बसई। गुरुवचने अंमृत भया अंचई॥ १६॥

इति श्री गोरषनाथ विरंचते प्रांण संकली सरीर विचारण, एवं प्रांण संकली जन्य विचारंत, पापे न लिपंते पुंने न हरंते, मृतलोके भये अस्थित अमर लोकेषु गछिते। ॐ नमो सिवाई, ॐ नमो सिवाई, गुरु मछींद्रनाथ पादुका नमस्तते इती प्रांण संकली ग्रन्थ ग्रन्थ जोग सास्त्र संपूरण।

अमृत स्त्रावक पूर्णिमा का चंद्र कैसे क्षीण हुआ ? क्योंकि सूर्य ने चंद्रमा को लौटाकर स्वयं पवन पर अधिकार कर लिया है। स्वप्न में भी इंद्रियाँ कामना को ग्रहण न करें अर्थात् मनसा इच्छा से प्रेरित न हों, इसलिए, योगीश्वर प्रलय अर्थात् मनोविलय करना निश्चित करते हैं॥ १२॥

शरीर की नाड़ियों में सात गाँठें हैं। (संभवत: षट्चक्र और सातवाँ सहस्त्रार) अध: और ऊर्ध्वगामी जो श्वास क्रिया है, उसमें ध्यान लगाओ। बीच-बीच में नौ-नौ कलियाँ (नवरंध्र) लगी हुई हैं, अष्ट कवल (योगियों में आठ कमल भी माने जाते हैं। सातवाँ ज्ञान चक्र में सहस्त्रदल कमल और आठवाँ विज्ञान में 21 सहस्त्रदल कमल। देखो आगे ग्रंथ 'अष्ट चक्र' और बत्तीस पंषुड़ियाँ (संभवत: बत्तीस लक्षण) हैं। संस्कृत अनुवाद भी इसमें सहायक नहीं है। उसमें बत्तीस पंखुड़ियाँ और नौ कलियों का उल्लेख नहीं है और अष्ट कवल का अर्थ 'पत्राण्यष्टो' लिया गया है॥ १३॥

अनाहत नाद सर्वत्र भरा हुआ है। हे अवधूत, अगोचर मूल, तत्व (शिव को) आकाशमंडल, ब्रह्मरंध्र में ढूँढो। शरीर रूप जो नगर कोट अथवा प्राचीर से रक्षित नगर है उसमें कई मार्ग हैं। किंतु एक स्त्री (कुंडलिनी माया) राजद्वार पर मार्ग को रोके खड़ी है, मूल वस्तु तक़ नहीं पहुँचने देती॥ १४॥

इस नगर में पाँच महर्षि (पाँच कर्मेन्द्रियाँ) कोतवाल हैं किसी को अंदर जातक राजा का परिचय (आत्मज्ञान) नहीं होने देते। उनकी स्त्री (मनसा) बड़ी बलवती और युद्ध कुशल है। इनको (पंचेन्द्रियों को) मारकर जो मार्ग पर चलने लगे वह उस सुन्दरी (माया) को भी जीत लेता है, और साथ ही जगत् (लोक) और शरीर (कंथा) को भी॥ १५॥

इड़ा, पिंगला और सुषुम्णा ये तीन मुख्य प्राणवाहिनी नाड़ियाँ हैं, जिनके साधन से भ्रम छूटता है और ब्रह्म साक्षात्कार होता है। पंच तत्व के संसर्ग में अमृत ही विष होकर रहता है। वह गुरु के वचनों से जब अमृत हो जाता है, तब (शिष्य उसका) पान करता है॥ १६॥

अष्ट मुद्रा

स्वामीजी अष्ट मुद्रा बोलिए घट भींतरि, ते कौंण कौंण।
अवधू यंद्री मध्ये मूलनी मुद्रा, कांम त्रिष्णा ले उतपनी कांम।
कांम त्रिष्णा समो कृतवा, मुद्रा तौ भई मूलनी॥
नाभी मधे जलश्री मुद्रा, काल क्रोध ले उतपनी॥
काल क्रोध समो कृतवा, मुद्रा तौ भई जलश्री॥
हृदा मधे षीरनी मुद्रा, ग्यांन दीप ले उतपनी॥
ग्यांन दीप समो कृतवा, मुद्रा तौ भई षीरनी॥
मुष मध्ये षेचरी मुद्रा, स्वाद विस्वाद ले उतपनी॥
स्वाद विस्वाद समो कृतवा, मुद्रा तौ भई षेचरी॥
नासिका मध्ये भूचरी मुद्रा, गंध विगंध ले उतपनी॥
गन्ध विगन्ध समो कृतवा, मुद्रा तौ भई भूचरी॥
चषि मध्ये चाचरी मुद्रा, दिष्टि विदिष्ट ले उतपनी॥
दिष्टि विदिष्ट समो कृतवा, मुद्रा तौ भई चाचरी॥
करण मध्ये अगोचरी मुद्रा, सबद कुसबद ले उतपनी॥
सबद कुसबद समो कृतवा, मुद्रा तौ भई अगोचरी॥
ब्रह्मांड असयांनि उनमनी मुद्रा, परम जोति लै उतपनी॥
परम जोति समो कृतवा, मुद्रा तौ भई उनमनी॥
यती अष्ट मुद्रा का जाणै भेव। सो आपै करता आपै देव॥
इतौ अष्ट मुद्रा कथंत श्री गोरषनाथ जती संपूर्ण समापत सिवाय॥

चौबीस सिद्धि

चौबीस सिद्धि बोलिये, प्रिथी कै विषै ते कौंण कौंण।

प्रथम अनूमां सिधि तांकौं लछिन, माया सुनि सूझै। महिमां सिधि ताकौ लछिन, लघु दीरध हौय दिखावै। गरीमां सिधि ताकौ लछिन, ब्रह्म कौ रूप दिषावै। लघुमां सिधि ताकौ लछिन, अनेक रूप धरै। प्रापति सिधि ताकौ लछिन, यंछै सो करै। प्रकासक सिधि ताकौ लछिन सरब सूझै। असत्या सिधि ताकौ लछिन, उपावै षपावै। आवस्या सिधि ताकौ लछिन, ब्रह्मादिक अग्या में रहै। एती अष्ट भूतांन सिद्धि मनोजा मनोजा सिधि ताकौं लछिन, सरब कांमनांकी जांण। छुछुमुक्ता सिधि ताकौ लछिन, मन मानै वहां सरीर छाडै। अनूरा सिधि ताकौ लछिन, सीत उसन तैं रहित[1] होय। परकाया प्रवेश सिधि ताकौ लछिन ौर काया प्रवेस करै। सूरज बसि सिधि ताकौ लछिन, सूरज आग्या में रहै। जल बसि सिधि जाकौ लछिन, जल आग्या मैं रहै। दूरि श्रवण सिधि ताकौ लछिन, दूरि की सुणैं। दूरि दरसण सिधि ताकौ लछिन, दूर की दरसै। कांस कांमोद सिधि ताकौ लछिन, कांमनां यंछै सो करै। अप्रहता सिधि ताकौ लछिन, मन मांनैं तहां जाय। देवता सैंल सिधि ताकौ लछिन, सर्व देवतां सूं केला करि आवै। रूपसेल देवता सिधि ताकौ लछिन, सरब देवता का रूप धरै। हारै नाहीं सिधि ताकौ लछिन, कहूँ प्रकार हारै नाहीं। त्रिकाल सिधि ताकौ लछिन, छमास की आगली कहै छमांस की पाछिली सूझै। अगनि बसि सिधि ताकौ लछिन, अगनि मै जलै नहीं। सबद बसि सिधि ताकौ लछिन सबद फरै।

यती चौबीस सिधि ब्रह्म ग्यांनी कै आड़ी आवै। यती चौबीस सचि सिचि आई होय ते सतगमु प्रसाद तै त्यागैः सोई जोगेश्वर सोई ब्रह्म ग्यांनी। बल अपार जती गोरषनाथ समझावै। यती चौबीस सिधि त्यागै। सोई परम ज्योति कूं पावै।

ग्यांन तिलक

ॐ सबदहि[1] ताला सबदहि[1] कूची सबदहि[1] सबद भया उजियाला।
कांटा सेटी कांटा षूटै कूंची सेती ताला।
सिध मिलै तो साधिक निपजै, जब घटि होय उजाला॥ १॥

शब्द ही ताला है जो ब्रह्म को बन्द किये हुए है, और शब्द ही वह कुंजी है, जिससे वह ताला खोला जाता है और परमात्मा के साक्षात् दर्शन होते हैं। प्रणव शब्द ब्रह्म का पहला विवर्त है। इसीलिए वह उसको बन्द किये हुए है परन्तु प्रणव की ही उपासना से, परब्रह्म का दर्शन भी हो सकता है, जो वाङ्मन से गोचर नहीं है, इसीलिए वह कुंजी है। गुरु का शब्द भी ब्रह्म को अपने में छिपाये रहता है। ब्रह्मज्ञान और ब्रह्म अलग-अलग वस्तु नहीं है और, गुरु के ही शब्द से वह भेद खुलदा भी है। जैसे काँटे से काँटा निकाला जाता है और कुंजी से ताली खोली जाती है, वैसे ही शब्द से शब्द भी खोला जाता है। इस प्रकार शब्द से उजाला हो गया। सिद्ध के मिलने से साधक की उत्पत्ति होती है, तभी अन्दर उजाला होता हैं। कुंची = कुंजी। षूटै = नष्ट होता है॥ १॥

अलष पुरुष मेरी दिष्टि समाना, सोसा गया अपूठा।
जब जल पुरुषा तन मन नहीं निपजै, कथै बदै सब झूठा॥ २॥

पुरुष के दर्शन से मेरी दृष्टि में अलख पुरुष परब्रह्म समा गया, जिसका फल यह हुआ कि उलटे मैं स्वयं ही परब्रह्म में सोख लिया गया। मेरी दृष्टि में परब्रह्म समाया और मैं परब्रह्म में समा गया। जब तक पुरुष परब्रह्म तन में उत्पन्न नहीं हो जाता, व्याप्त नहीं हो जाता, हम अपने सारे अस्तित्व में उसका अनुभव नहीं करने लगते, तब तक अध्यात्म-कथन झूठा है॥ २॥

सहज सुभाव[२] मेरी तृष्ना फीटी, सीगी नाद संगि मेला।
यंम्रत पीया विषै रस टार्‌या गुर गारड़ौं अकेला॥ ३॥

जो तृष्णा सहज स्वभाव से नष्ट हो गयी है, और अनाहतनाद के द्वारा जिसके उपलक्षण स्वरूप सिंगीनाद नाथ पंथ में ग्रहण किया गया है, मेरा मेल परब्रह्म से हो गया है। इस प्रकार मेरे कैवल्य प्राप्त (अकेले) गुरु-रूप गारुड़ी ने विषय-रस (रूप विष) का निवारण कर मुझे अमृतपान कराया है॥ ३॥

सरप[१] मरै बांबी उठि नाचै, कर बिनु डैरूं बाजै।
कहै नाथ जौ यहि विधि जीतै, पिंड पड़ै तो सतगुर लाजै॥ ४॥

जिसकी कुण्डलिनी या शक्ति शिव में समा गयी हो, माया मर गयी हो, उसका शरीर (बांबी) योगामृत के पान से संजीवित होकर आनंद में नाच उठता है। उसके भीतर हाथ के बिना बजनेवाला डमरू (अनाहतनाद) बज उठता है। नाथ कहता है कि जो साधक इस प्रकार माया के ऊपर विजय प्राप्त कर लेता है (वह अमर हो जाता है) ऐसे सिद्धि-प्राप्त चेले का यदि शरीरपात हो जाय तो सद्गुरु के लिए लज्जा की बात हो जाय, सद्गुरु को भी लज्जित होना पड़े। क्योंकि इससे पता चलता है कि स्वयं गुरु अधूरा है, चेले को क्या सिखाता॥ ४॥

दरपन[२] माहीं दरसन देष्या, नीर निरंतरि झांई।
आपा मांही आपा प्रगटया, लषै तौं दूर न जाई॥ ५॥

जिसने दर्पण में दर्शन देखा हो, अर्थात् अपने आप परब्रह्म निरंजन का साक्षात्कार किया हो वैसे ही जैसे जल में किसी वस्तु का निरंतर प्रतिबिंब पड़ा रहता है, और अपने ही में जिसका आत्मा प्रकट हुआ हो, उसे उधर-उधर कहीं दूर भटकने की आवश्यकता नहीं रहती। वह तो स्थिरता प्राप्त कर लेता है॥ ५॥

चकमक ठरकैं अगनि झरै यूं, दध मथि घृत करि लीया।
आपा मांहीं आपा प्रगटया, तब गुरू सन्देसा दीया॥ ६॥

जैसे चकमक पत्थर पर रगड़ करने से अग्नि झरती है, वैसे अथवा जैसे दही को मथकर घी निकाला जाता है, वैसे जब अपने आप में आत्मा प्रकट हो जाय, तो समझना चाहिए कि गुरु ने शिक्षा दी है, गुरु-शिक्षा का प्रभाव हुआ है॥ ६॥

सुरति गहौ संसै जिनि लागौ, पूंजी हांन न[१] होई।
एक तत सूं एता निपजै, टार्या टरै न सोई॥ ७॥

आत्मा की विंस्मृति में न पड़े रहो। आत्मी हानि स्मृति को पकड़ो, संशय में न लगो। आत्मा ऐसी पूँजी है, जिसकी कभी हानि नहीं होती, एक आत्मतत्व ही से इतना धन अर्थात् सन्तोष-धन उत्पन्न होता है कि हटाने से नहीं हटता, कभी नहीं होता॥ ७॥

निहिचा ह्वै तौ नेरा निपजै, भया भरोसा नेरा।
परचा ह्वै तौ ततजिन निपजै, नहीं तर सहज न बेरा॥ ८॥

अध्यात्म में निश्चय रखने से तथा उसका विश्वास (आसरा) रखने से वह धन जल्दी ही उत्पन्न हो जाता है और आत्म-परिचय होने से तो वह तत्क्षण ही उत्पन्न हो जाता है। यदि इनमें से कोई बात नहीं है, तो समझ लो कि तुम्हारा

स्वाभाविक रूप से निपटारा हो गया, अर्थात् वह अक्षय धन नहीं प्राप्त हो सकता॥ ८॥

जे लूटया जिनि षवरि न पाई, कसि करि यंद्री डांडी।
तन मन की कछु षवरि न पाई, सुरति बिगोया रांडी॥ ९॥

जो माया के द्वारा लूटे जा रहे हैं और जिन्हें इस बात की खबर नहीं, वे कसकर इन्द्रियों को दंड देते हैं। उन्हें तन-मन की कोई खबर नहीं। वे तो माया (रांडी) के पीछे अपनी आध्यात्मिकता को नष्ट कर देते हैं॥ ९॥

बिंद और भग बाघणि औरैं, बिन दांतां जग षाया।
प्रांण पुरुष का मर्म न पाया, छोड़ि बिगूतें माया॥ १०॥

विन्दु और है, भग और। लोग समझते हैं कि कामुकता ही विन्दु का साफल्य अथवा उसका पूर्णोपभोग या आनन्द है, किन्तु वस्तुतः बात यह नहीं है। क्योंकि विन्दु का साफल्य और उसका वास्तविक उपभोग इसे ऊर्ध्वगामी बनाकर अचंचल बनाना है, जिससे वह ब्रह्मानन्द की प्राप्ति में सहायक हो और अमरत्व प्रदान करे। बाघिन तो दाँतों से चबाकर खाती है, किन्तु भग बिना दाँतों के दुनिया को खाया करती है। कामुकता में पड़कर जो अपने पुरुषत्व को नष्ट करते हैं, उन्हें प्राण-पुरुष (अन्तर्यामी ब्रह्म) का रहस्य नहीं मिला। उसे छोड़कर वे माया में पड़कर नष्ट हो गये॥ १०॥

सौंटयै लाकड़ि ज्यूं घुण लागै, लोहै लागै काई।
बिन परतीति कहा गुरु कीजै, काल ज ग्रास्यां जाई॥ ११॥

सूखी लकड़ी पर जैसे घुन लगता है, लोहे पर जैसे जंग लगता है, उसी प्रकार यदि बिना विश्वासवाले साधक को कालग्रस ले जाय तो गुरु क्या कर सकता है॥ ११॥

रांडी तज्यां न षसिया जीवै, पुरुष तज्यां नहीं नारी।
कहै नाथ ये दोनयूं बिनसे, धोषा की असवारी॥ १२॥

स्त्री को छोड़कर पुरुष नहीं जी सकता। (पुरुष को खस्सी इसलिए कहा है, कि कवि की दृष्टि में ऐसे लोग वस्तुतः अध्यात्मतः नपुंसक हैं) और पुरुष को छोड़कर स्त्री नहीं जीती। इस प्रकार धोखे की सवारी पर सवार होकर दोनों नष्ट हो जाते हैं॥ १२॥

वैसन्दर मुषि ब्रह्म[१] जो होते, सुद्र पढ़ाऊँ बांनी।
असंभेद विधि ब्रह्म-जग निपजां, नै जुगति जमाया पांनी॥ १३॥

बैसन्दर (वैश्वानर = योगाग्नि) में जो भ्रम का होम कर दे, ऐसे शूद्र को भी मैं बानी पढ़ाता हूँ, शिष्य बनाता हूँ। इस प्रकार (भ्रम विनाशन द्वारा) वास्तविक अश्वमेघ (महत्वपूर्ण यज्ञ) की विधि संपन्न हुई, ब्रह्म-यज्ञ निष्पन्न हुआ (निपजा), पूर्ण हुआ और युक्ति से पानी जम गया (क्षरणशील अधोगामी चंचल शुक्र ब्रह्मरंध्र में स्थिर हो गया॥ १३॥

तौ युग रांडया जोगेश्वर व्याह्या, सिव सक्ती सूं फेरा।
जा पद मिंदर पुरुष बिलंव्या, वहि मिंदर घर मेरा॥ १४॥

जब योगेश्वर शिव ही विवाहित हैं, क्योंकि शिव ने शक्ति (उमा, सती) के साथ भाँवरी ली है, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है, क्योंकि सारा जग स्त्रियों वाला है, किन्तु जिस पद रूप मन्दिर में (पूर्ण) पुरुष (परब्रह्म) विलय रहे हैं, वही मन्दिर मेरा घर है, अर्थात् स्त्री के पंजे से बाहर निकलकर मैं ब्रह्म पद में समा गया हूँ॥ १४॥

या रहनी मैं घर घर बासा, जोग जुगति कर पाया।
सिध समाधि पंच घर मेला, गोरष तहाँ समाया॥ १५॥

इस प्रकार की अर्थात् स्त्री (माया) रहित रहनी से मैंने योग की युक्ति के द्वारा अपने वास्तविक घर (ब्रह्म पद) में घर-वास (निवास) पाया है, और पूर्ण समाधि के द्वारा पंच ज्ञानेन्द्रियों को घर (परब्रह्म पद में ला ढाला है, अर्थात् उसे अंतर्मुख कर दिया है, जिससे कोई यह नहीं जान सकता कि गोरख कहाँ समा गया है॥ १५॥

हाली भींतरी षेंत निदांणैं, बगु मैं ताल समाई।
बरषै मोर कहूकै सावण, नदी अपूठी आई॥ १६॥

हाली (हलवाला, किसान, उद्धारकामी जीव, साधक) सामान्य अवस्था में खेत निराया करता है, (विवेक के द्वारा आत्म-बुद्धि की रक्षा करता है, अनात्मबुद्धि को दूर कर देता है) मन रूप बगले की ताल रूप बाह्म आनन्द क्रीड़ा की सामग्री उसके अन्दर समा गयी है। उसकी वृत्तियाँ अन्तर्मुख हो गयी हैं और अब उसे बाहर आनन्द मिलने की जगह भीतर आनन्द मिलने लगा है। सामान्य अवस्थाओं में माया रूप सावन की वर्षा होती है और मनमयूर उसमें आनन्द ध्वनि करता था, किन्तु अब मनमयूर बरस रहा है, अपनी बहिर्मुख वृत्तियाँ की वर्षा अर्थात् त्याग कर रहा है और माया रूप सावन भी अपनी बन्धन वृत्ति को छोड़कर मुक्तिदायिनी विद्या स्वरूपा होकर अपने जगत् के रूपों की ओर बहती चली जा रही थी निरूद्ध होकर वापस (पृष्ठ = पुट्ठ = (अ+) पूठा+ई) अपने में (आत्मा में) लौट आयी॥ १६॥

गऊ पद मांहीं पहौकर फकदै, दादर भर्र्य झिलारै।
चात्रिग मैं चौमासौ बोलैं, ऐसा समा हमारै॥ १७॥

पहौकर (पुष्कर = तालाब) गो पद में फदकता (स्पंदित = तरंगित होता) है, अर्थात् साधक का स्थूल अस्तित्व सूक्ष्म आत्मिक जीवन में समा जाता है। उस सूक्ष्म जीवन में भी सूक्ष्म मन (दादुर, मेढक और भर्र्य = वर्हि मोर) आनन्द मनाता है। वह परिस्थिति (चौमासा) जिसमें आत्मा (चातक) अपने प्रिय (बादल अर्थात् परमात्मा के) अभिमुख होती है अब स्वयं आत्मा (चातक) के अन्दर ही उपस्थित है, साधक को ऐसी सुन्दर ऋतु (समा) उपलब्ध है॥ १७॥

आसा तृष्णां थिर ह्वै बैठी, पद परचै सुष पाया।
सूकै तरवर कूंपल मेल्ही, यहि बिधि निपजी काया॥ १८॥

आशा और तृष्णा जब अपने चंचल स्वभाव को छोड़कर स्थिर होकर बैठ जाती है, अर्थात् अपनी आशा और तृष्णा में जब थक जाती है, तब पद अर्थात् ब्रह्म साक्षात्कार का सुख मिलता है, इस प्रकार माया का बड़े प्रसार वाला वृक्ष सूख जाता है, और आध्यात्मिकता की नवीन कोपलें निकल पड़ती हैं और इस प्रकार काया निष्पन्न होती है, अर्थात् उसका वास्तविक साफल्य होता है॥ १८॥

पूरब देश पछांहीं घाटी, (जनम) लिष्या हमारा जोगं।
गुरू हमारा नांवगर कहीए, मेटै भरम बिरोगं॥ २९॥

प्राण (पूर्व) हमारा देश है, और सुषुम्णा (पछाहीं घाटी) आने-जाने का मार्ग। जन्म ही से हमारे भाग्य में योग लिखा है। हमारे गुरु हमारे (भवसागर से तारने वाले) नाविक के समान हैं, वे हमारे भ्रमादि रोगों को मिटाते हैं॥ १९॥

नवग्रह मारि अगनि मुषि झौंक्या, दुदरहि लग्या डोरी।
परम पुरुष पिंजरि बिलंव्या, भई अगम गति मोरी॥ २०॥

नवग्रहों को मारकर मैंने आग में झोंक लिया है, ज्ञानोदय से अब ग्रह योगों के भले-बुरे परिणाम से मैं छूट गया हूँ। माया (दुदरहि) के बीच में भी ध्यान लग गया है। परम पुरुष (ब्रह्म) इस शरीर रूप पञ्जर में बिलमा हुआ है, इस प्रकार मेरी अगम्य गति अर्थात् मुक्ति हो गयी है॥ २०॥

अकथ कथ्या अनअष्षिर बांच्या, अगम गवन करि लीया।
हंस बिलंव्या बूंद न ढलकै, वहि सरसव बंध दीया॥ २१॥

जो कही नहीं जा सकती ऐसी ब्रह्मवार्ता को मैंने बिना अक्षरों के ही बाँच लिया है, और अगम्य पद तक पहुँच गया हूँ। उस कथा अर्थात् परब्रह्म पद में आत्मा (हंस) ऐसा बिलम गया है कि शुक्र के सरोवर में बाँध हो गया है, जिससे एक बूँद की ढलकने नहीं पाता है, पूर्ण ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठित हो गया है॥ २१॥

बोलै नाथ गगन घर वासा, अंतरि बसीया जाई।
परम पुरस मैरै कागद मांडया, दिन दिन कला सवाई॥ २२॥

नाथ कहता है कि गगन-रूप घर अर्थात् त्रिकुटी या ब्रह्मरन्ध्र में हमारा निवास है। इस प्रकार हम अपने भीतर जातक बस गये हैं। हमारा परम पुरुष रूप कागज (लेखा) तैयार (मंडित) हुआ है, और उसकी कला दिन-दिन बढ़ती जाती है अर्थात् आध्यात्मिक अनुभूति बढ़ती जाती है॥ २२॥

ऐसे रमहुँ जैसे नष सिष भेदै, संक्या सरीर न लूटै।
चलत फिरत पद माहि समावैं, जामण मरण भै छूटै॥ २३॥

इस अनुभूति में इस प्रकार रम जाओ कि वह नख से शिख तक सारे शरीर में भिद जाय और शंका को लूटने न पावे (माया का प्रभाव न रहे)। ऐसे समाधि लग जाय कि (केवल ध्यानावस्था में नहीं) चलते-फिरते (हर घड़ी) ब्रह्मपद में समाये रहो, जिससे जन्म-मरण का भय छूट जाय॥ २३॥

मरि मरि जाय सुसंसा मांहीं, तन का मरम न पाया।
समझ्या होय तो पद पंथ औरैं, धोषै जनम गमाया॥ २४॥

जो संशय ही में मर-मर जाते हैं, उन्होंने शरीर का मर्म नहीं पाया। समझे का (ज्ञान का) स्थान और मार्ग ही दूसरा है। संशयात्मा तो धोखे में अपने जन्म को गँवाते रहते हैं॥ २४॥

या पद की कठिन है करनी, केवल-मता पुरुष की रहनी (सोई)
या रहनी तै पारस निपजै, लोहा कंचन पद भेटयां पद होई॥ २५॥

इस पद (ब्रह्मपद) की करनी, जो कैवल्य में मति रखने वाले (कैवल्य मतवाले) पुरुष की रहनी है, कठिन है। इस रहनी से पारस मणि पैदा होता है, जिसके कारण लोहे को कंचन पद प्राप्त होता है, जो उसका वास्तविक पद है। अर्थात् इसी रहनी से सामान्य नर ब्रह्मत्व को प्राप्त होता है, जो उसकी वास्तविकता है॥ २५॥

नींझर नीर अगनि मुषि बरषै, सींचै बाग हमारा।
या रहनी तैं पैकंबर निपजै, तिसिया मरै संसार॥ २६॥

जल (अमृत) का झरना ब्रह्मग्नि के ऊपर बरसता है और हमारे उद्यान को सींचता है, अर्थात् ब्रह्माग्नि (हमारी ब्रह्मनुभूति) की और भी बढ़ाती है। इस रहनी से पैगंबर (अध्यात्म के ज्ञानी और प्रसारक) उत्पन्न होते हैं और संसार (मायिक वृत्तियाँ) पोषण के अभाव के कारण (तृषार्त होकर) मर जाता है॥ २६॥

यंद्र मिल्यां तैं धरती निपजै, यंदी बरचै देही।
गुरू हमारा बांनी बोली, मांणिक चुगि चुगि लेही॥ २७॥

इन्द्र के मिलने से (इन्द्र जल का देवता है, इसलिए जल से) धरती में अन्न आदि उत्पन्न होता है, इसी प्रकार इन्द्रियाँ जब अनुकूल वर्षा करती हैं (अंतर्मुख हो जाती हैं) तब देह में ज्ञान उत्पन्न होता है और साधक को ज्ञानमुक्ता चुगने को मिल जाती है। हमारे गुरु ने यह वाणी कही है, यह गुरु की शिक्षा है॥ २७॥

पाथर मैं पारस अबिनासी, ज्यूं असट धात मैं सोनां।
यूं सब जुग मांहिं समझि अबिनासी, ता घटि पाप न पूनां॥ २८॥

जैसे पत्थर में अविनश्वर स्पर्श मणि का निवास है, जैसे आठों धातुओं में सोने का निवास है, ऐसे सारे संसार में अविनाशी परब्रह्म को व्याप्त समझो। (जिसने ब्रह्मपद पा लिया है) उसके घट (शरीर) में पाप और पुण्य नहीं है॥ २८॥

बहती नदी भाव भरि थांमी, सूरजि देषि पछांहीं।
दुलभ देवल मन अगोचह, ता बेल्यां फल वांही॥ १९॥

सूरज को पछाहीं (अस्त होता हुआ) देखकर अर्थात् मूलाधारस्थ सूर्य के सुषुम्णा मार्ग से (पछाहीं) सहस्त्रारस्थ चन्द्र से योग के लिए जाता हुआ देखर भाव से भरी हुई (अर्थात् बहिर्मुख मनोवृत्ति रूप) नदी स्तंभित अर्थात् निरूद्ध हो गयी। इससे यही शरीर दुर्लभत्व को प्राप्त हो गया, सिद्धकाया हो गयी, और यही मन अगोचर परब्रह्म हो गया। इस प्रकार योगी इस माया रूप बेली के तत्व रूप वास्तविक फल को खाते हैं॥ १९॥

नव लख्र किरणि अपूठी प्रकटी, कोटि किरणि मुषि आगै।
कहै नाथ धरम का पेंडा, संसे बूंद न लागै॥ ३०॥

नाथ कहते हैं कि धर्म (योग) के मार्ग पर चलने से विन्दु मात्र भी संशय (सन्देह) साधक को नहीं छू पाता और आगे-पीछे सर्वत्र ही ज्योतिस्वरूप के

दर्शन होते हैं। (अपूठी = दृष्ठ, पुट्ठ, पूठी। आरम्भ में 'अ' का निरर्थक आगम) नौ लाख किरणों के पीठ पीछे और करोड़ किरणों के मुँह आगे प्रकट होने से यही अभिप्राय है ॥ ३० ॥

गिरही कै घरि जनम हमारा, संगति सुरति दिढांसी।
कहै नाथ जीव ब्रह्म एकै, जब सिच घरि सक्ति समांणी ॥ ३१ ॥

गृहस्थ के घर हमने जन्म लिया है, विरक्त साधु, योगी और महात्माओं की संगति में हमने आध्यात्मिक मनोवृत्ति (सुरति) को दृढ़ किया है। कुछ कहते हैं कि इस प्रकार जब अकल स्वरूप शिव में सकल स्वरूपा शक्ति समा जाती है, तब जीव और ब्रह्म एक हो जाते हैं ॥ ३१ ॥

अनहद धुनि मैं रहिन हमारी, तत्त देखि मन लागा।
आपा माहीं आपा प्रकटया, जब जाय धोषा भागा ॥ ३२ ॥

अनाहत नाद में हमारी रहनि (निवास) है। तत्व का हमें साक्षात्कार हो गया है और उसी पर मन लग गया है, इस प्रकार जब अपने मायाविष्ट अस्तित्व (आत्मा) के भीतर ही वास्तविक स्वरूप (आत्मा) के दर्शन हो गये, तब जाकर धोखा भागा ॥ ३२ ॥

जे नर जोनि अजोनी सिंभू, सिध पुरुष सूं मेला।
जा रहनी मैं थान हमारा, ता घटि पुरिष अकेला ॥ ३३ ॥

नर योनि ही में जिसे सिद्ध पुरुष अयोनि शम्भु का साक्षात्कार हो गया है, और जो उस 'रहनी' को रहता है जिसमें हमारी स्थिति है, उसके शरीर में केवल-पुरुष प्रकट होता है।

इस पद्य का यह भी अर्थ हो सकता है कि जो नर-योनि हैं, उन्हीं में अयोनि शम्भु भी है। इसलिए जिन लोगों ने अन्दर के अयोनि शम्भु का साक्षात्कार कर लिया है उन सिद्ध पुरुषों से मेल (सत्संग) करना चाहिए, इस प्रकार जो उस रहनी को अपना लेता है, जिसमें हमारी (सिद्ध योगी की) स्थिति है, उसके शरीर में केवल-पुरुष प्रकट होता है ॥ ३३ ॥

उरधै भरे सो थिरि ह्वै पीवै, सूधै घटि संवारी।
अंधै लोचन सब जग सूझे, सालिम सब अंधियारी ॥ ३४ ॥

जो नीचे से उठाने वाली धारा को ऊपर से अर्थात् औंधे घड़े में भरता है; अर्थात् जो कुण्डलिनी शक्ति को ब्रह्मांड में स्थिर करता है, वह स्थिर होकर अमृत

पान करता है। जो घड़े को सीधा रखता है, वह उसका संवारण कर देता है, अमृत नहीं पी सकता। जो बाहरी आँखों से नहीं देखता (अंधै लोचन) उसको ज्ञान नेत्रों से जगत की सारी वास्तविकता प्रकट हो जाती है और जिसकी बाहरी आँखें सम्पूर्ण हैं, बहिर्दृष्टि है, उसको कहीं भी आध्यात्मिक प्रकार नहीं दिखायी देता॥ ३४॥

तूंबी मैं रिलोक समाणा, तिरबेणी रिव चंदा।
बूझौ हौ कोई ब्रह्म गियांनी, अनहद नाद अभंगा॥ ३५॥

तूंबी यह शरीर है, इसी में त्रैलोक्य समाया हुआ है, इसी पिंड में यह ब्रह्मांड है। त्रिवेणी (त्रिकुटी) सूर्य और चन्द्र सब इसी में है। इसी में अजस्त्र रूप से अनाहत नाद भी हो रहा है। कोई ब्रह्मज्ञानी इसे समझे॥ ३५॥

आवा गवण भरम का मारग, पुरषां पंथ बताया।
सबद अतीत अनाहद बोलै, अंतरि गीत समाया॥ ३६॥

आवागमन भ्रम का मार्ग है। असली पंथ तो उन पुरुषों (सिद्धों) का बताया हुआ पंथ है, जिन्होंने पहुँच के बारह वाले (अतीत(अनाहतनाद को जागरित किया है, और अंतर्लीन हो गये हैं॥ ३६॥

बिमल पंथ बीजल ज्यूं चमकै, घरहरती घन गाजै।
तारहनी मैं जोगी का घर, अनहद बाजा बाजै॥ ३७॥

यह विमल मार्ग बिजली की तरह चमकता है, घनघटा की तरह गरजता है। उस पर चलने से ज्योति का दर्शन होता है और अनाहतनाद सुनायी देता है। इस रहनी में योगी का निवास है॥ ३७॥

जा पद मिंदर धजा फरहरै, मढी संवारे चेला॥
कोटि कला जहाँ अनहद बांणी, गावै पुरिष अकेला॥ ३८॥

जो कैवल्य पद फहराती हुई ध्वजा वाले मन्दिर (अर्थात् राजप्रसाद) अथवा देव मन्दिर (के तुल्य उत्तम है, उस पद को हे चेला! अपनी मढ़ी बनावो) उसमें निवास करो। वहाँ केवल-पुरुष कोटि कलाओं के सहित अनाहत नाद का गान करता है॥ ३८॥

नौ लष पातरि आगैं नाचैं, पीछैं सहज अषाड़ा।
ऐसैं मन लै जोगी षेलै, तब अंतरि बसे भँडारा॥ ३९॥

योगी की रहनी मध्यम मार्ग की होनी चाहिए। उसे भोग और त्याग में समत्व रखना चाहिए भोग्य पदार्थों के सम्मुख रहते हुए भी उसे उनमें आसक्त नहीं होना चाहिए। इसीलिए कहा है कि नौ लाख पतुरियाँ उसके आगे नाचती हों, और सहज ज्ञान-वैराग्य का अखाड़ा उसके पीछे हो। अर्थात् इन दोनों के बीच उसकी स्थिति हो। इस प्रकार की स्थिति में भी जब जोगी रमे अर्थात् साधना में रत रहे, तब उसका भीतरी भंडार भरपूर हो सकता है॥ ३९॥

ग्यान कहै तौ त्रिस्ना हारै, सूरज देषि पछांहीं।
सतगुरु मिलै तो सांसा भागै, मूल विषारया मांहीं॥ ४०॥

मूलाधारस्थ सूर्य को सहस्त्रारस्थ चन्द्र को मिलने के लिए पछांहीं अर्थात् सुषुम्णा-मार्ग-गामी देखकर अर्थात् योगाभ्यास के द्वारा ज्ञान ग्रहण करने से तृष्णा नष्ट होती है। यदि सद्गुरु मिले, तो मूल तत्त्व का अपने हृदय में (माहीं = भीतर) विचार करने से संशय भाग जाय॥ ४०॥

अंजन मांहि निरंजन भेटया, तिल मुव भेटया तेलं।
मूरति माहिं अमूरति परस्या, भरा निरंतरि षेलं॥ ४१॥

जैसे तिलों में तेल व्याप्त है, वैसे ही अंजन में निरञ्जन। इसलिए जैसे तिल में से तेल ले लिया जाता है, इसी प्रकार मैंने (सिद्ध योगी ने) अंजन में, माया में निरंजन ब्रह्म को भेंटा है, और मूर्ति में अमूर्त का स्पर्श किया है, और इस प्रकार निरंतर (अवाध्य) आध्यात्मिक आनन्द (खेल) प्राप्त किया है॥ ४१॥

जहाँ नहीं तहाँ सब कुछ देष्या, कह्यां न को पतिआई।
दुबिधा भाव तबै ही गइया, बिरलां पदां समाई॥ ४२॥

जहाँ 'नहीं' (शून्य) है, वहाँ मैंने सब-कुछ देखा है (ब्रह्म ही से सारा विश्व प्रकट होता है, और वही विश्व में सार तत्व और तथ्य है, इसलिए यहाँ ब्रह्म को सब-कुछ कहा है) कहने से इस बात का कोई विश्वास नहीं करेगा। उसी समय, शून्य का साक्षात्कार होते ही, बिरल कैवल्य पद में समाकर मेरा द्वैत भाव मिट गया, मुझे शून्य के, ब्रह्म के साथ तादात्म्य का अनुभव हो गया॥ ४२॥

दिषणि हमारी डीबी पाकै, अगनि वलै मुलतानं।
ऐसे हम जोगेस्वर निपनां, प्रगटया पद निर्वानं॥ ४३॥

दक्खिन (मूलाधार चक्र) में हमारी डीबी अर्थात् पात्रगत खाद्य सामग्री पक रही है, प्रयोग सामग्री कुण्डलिनी तैयार हो रही है और आग (योगाग्नि) जल रही

है मुलतान अर्थात् उत्तर मूल-स्थान, ब्रह्मरन्ध्र, शून्य में। इस प्रकार हम योगेश्वर बने और हमारा निर्वाण पद प्रकट हुआ॥ ४३॥

बाफ न निकसे बूंद न ढलकै, सहजि अंगीठी भरि रि रांधै॥
सिध समाधि योग अभ्यासी, तब गुरु परचै सांधै॥ ४४॥

सहज की अँगीठी के द्वारा जब कोई इस प्रकार भर-भर करके भोजन पकावे कि न तो उसमें से भाप निकले और न एक बूँद जल का गिरे अर्थात् जब साधक इस प्रकार साधना करने में समर्थ होता है कि न तो मद, मोह, लोभ, काम आदि भावनाएँ सिर उठा सकती हैं, और न विन्दुपात होता है, तब योगाभ्यासी की समाधि सिद्ध होती है, और तब गुरु अर्थात् ब्रह्म परिचय के लिए शर-संधान करता है। (परिचय के लक्ष्य की ओर अभिमुख होता है, अर्थात् अपना परिचय कराता है)॥ ४४॥

धीरजि थंम जडोरि धुनि समानां असमानं।
अटल दुलीचा अषै पद, जहाँ गोरष का दीवानं॥ ४५॥

अक्षय पद धैर्य के खम्भे (स्तंभ, थंम) और तल्लीनता या धुन की डोरी के सहारे आसमान (शून्य) समाया हुआ (अर्थात् निरालम्ब) अटल आसन (दुलीचा) हैं। वहीं गोरख का दरबार लगता है, गोरख का दीवान है॥ ४५॥

पंच अग्नि

ॐ मूल अगनि का रेचक नांव। शोषि लेह रक्त पीत अर आंव।
पेट पूठ दोऊ सम रहै। तौ मूल अगनि जती गोरष कहै।
भुयंगम अगनि का भुयंगम नांम। तजिबा भिछया भोजन ग्रांम।
मूल की मूस अमीरस थीर। तिसकूं कहिए हो सिधो पवन का सरीर।
ब्रह्म अगनि ब्रह्म नाली धरि लेउ जांण।
उलटंत पवनां रवि ससि गिगन समांन।
ब्रह्म अगिन मधे सीझिबा कपूरं। तिस कूं देषि मन जायबा दूरं।
सिव धरि सकति अहैनिस रहै। ब्रह्म अगनि जती गोरष कहै।
काल अगनि तीनि भवन प्रवांनी। उलटंत पवनां मोषंत पांनी।
षाया पीया षाष होय रहै। काल अगनि जती गोरष कहै।
रुद्र अगनि का त्राटिका नांम। सोषि लेव होठ कंठ पेठ पूठि नव ठांम।
उलटत केस पलटंत चांम। तिसकूं कहियै हो सिधो त्राटिका नाम।
रुद्र रेवंती संजमे षिवंती। जोग जुगति करि साधंत जोगी।
पंच अगनि भरि पूर रहै। सिध संकेत श्री गोरष कहै।
पूरिको पीवत वायु कुंभको काया सोधनं।
रेचको तजंत विकार त्राटिको आवागवण बिबरजतं।
सिध का मारग कोई साधू जांणै। पंच अगनि श्री गोरषनाथ बषांणैं।
पांचौ अगनि संपूरण भई। अनंत सिधां मधे मजी गोरष कही।
इति श्री पंच अगनि पठंते सुणंते कथंते करंते पापे नह लिपंते।
पुंने न हारंते। ॐ नमो सिवाय ॐ नमो सिवाय।
गुरु मछंद्रनाथ के पादुका नमस्तुते।

बत्तीस लछन

ग्यांन पारछ्या-निरलोभी, निहचल, निरबासीक, निहिसबद।
विचार पारछया-निरमोही, निरबंध, निसंक, निरबांन।
बमेक पारछया-सरबंगी, सावधांन सति, सारग्रही।
संतोष पारछया-अजाचीक, अवांछीक, अमांनीक, अस्थिर।
निरबल पारछया-निहितरंग, निहपरपंच, निरदुंदी, निरलोप।
सहज पारछया-सुमती, सुहृदी, सीतल, सुषदाई।
सील पारछया-सुचि, संजम, सति, श्रोता।
सुंनि पारछया-ल्यौ, लषि, ध्यांन, समाधि।
एति अष्टांग जोग पारछया, भगति का लछिन।
सिधां पाई साधिका पाई, जे जन उतरे पारं॥

पाठकों के पत्र अटवाल जी के प्रति

मेरी पुस्तकों की सशक्त लेखनी के लिए देश-विदेश के प्रत्येक कोने से पाठकों, साधकों के अनेकों पत्र प्राप्त हो रहे हैं। यहाँ पर मैं प्रिय पाठकों के कुछ पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। प्रथम पत्र

हे प्रभु वास्तव में यह परिस्थिति की विडम्बना है कि मुझे जीविकानुसार लोगो की असहनीय कष्टों का सामना करते हुये उन्हें देखना पड़ता है। लेकिन फिर भी यह मेरा सौभाग्य है कि आपने मुझे उनके कष्टों का निवारण करने का उत्तम अवसर प्रदान किया है।

आपने मुझे यह जिम्मेदारी पूरी करने की योगयता प्रदान की है। हे प्रभु आप मुझे इतनी शक्ति प्रदान करे कि मै उस उद्देश्य को पूरी निष्ठा के साथ पूर्ण कर सकूं। सच वास्तव में जनमानस के कष्टों का निवारण तो सिर्फ आप करते है तथा सबके सुखों का स्त्रोत भी आप है। मैं तो केवल आपका बनाया माध्यम मात्र हूँ।

हे प्रभु मेरे लोगों पर आप अपनी दृष्टि बनाये रखें।

ज्योति धीर वीजापुर

सेवा में,

अटवाल जी आपकी पुस्तकें पढ़कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मैंने बहुत पुस्तकें पढ़ी, मगर मुझे इतना सही विवरण नहीं मिला जितना कि आपकी पुस्तकों में आपने सरल लिखा और समझाया है।

आपका

मुखिया ग्राम पंचायक गाँव-बगडोली

जगदलपुर (बस्तर) म.प्र.

*****

श्री अटवाल जी,

मेरी तरफ से आपको चरण स्पर्श। मैंने आपके द्वारा लिखित पुस्तकों को पढ़ा। आपका काम बेहद प्रसन्द आया। मैं आपकी पुस्तकों को पढ़ता हूँ तथा प्रयोग भी करता हूँ इसलिए मैं आपका शिष्य हूँ।

आपका

शैलेन्द्र कुमार, गोरखपुर (उ.प्र.)

*****

पूजनीय अटवाल जी,

सादर चरण स्पर्श, निवेदन है कि प्रार्थी आपकी मंत्र की पुस्तक पढ़ चुका है। मुझे वह बहुत अधिक पसन्द आई। सिद्ध मंत्र जो आपने अपनी पुस्तक में लिखे हैं। मैंने आपकी कृपा से दो मंत्र सिद्ध करने का जप पूरा कर लिया है। अब आपसे अन्य मंत्रों की आवश्यकता है।

आपका

नवल किशोर वर्मा, झांसी (उ.प्र.)

*****

आदरणीय अवतार सिंह अटवाल जी,

आपकी एक पुस्तक तंत्र महायोग (मेरी भक्ति गुरु की शक्ति) पढ़ी। बहुत से चमत्कारिक लेख व मंत्र पढ़े, यह हकीकत है, प्रमाणिक भी है। मैं बहुत जानने का इच्छुक हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा आपसे मिलने की है तथा कुछ समय आपके पास रहकर कुछ सीखने की है।

आपका शुभचिंतक

मुकेश कुमार (भारतीय नौसेना)

*****

आदरणीय तांत्रिक महोदय

जय जगदम्बे,

मैंने आप के बारे में अपने शिष्यों से सुना कि आप बहुत-सा तंत्र प्रयोग करने के पश्चात् आपने कुछ पुस्तकों का लेखन कार्य प्रारम्भ किया।

धन्यवाद,

श्री वीरु अघौरी, भोजपुर (आरा)

*****

माननीय श्री अटवाल जी के

श्री चरणों में अनंतश प्रणाम स्वीकार हो।

आपके पुस्तक तंत्र महायोग को पढ़ा। अत्यंत हर्ष हुआ कि आज भी इस भौतिकवादी युग में तंत्र शास्त्र पर आप अपना अमूल्य समय दे रहे हैं।

आपका

बलराम प्रसाद शुक्ल, बेतुल (म.प्र.)

*****

आदरणीय श्री अटवाल जी,
सादर प्रणाम,
आपकी पुस्तक तंत्र महायोग पढ़ी बहुत ही ज्ञान मिला। मैं भी इस क्षेत्र में नया-नया उतरा हूँ। आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे यथोचित आशीर्वाद व मार्गदर्शन देने की कृपा करें, बिना आपके आशीर्वाद के मंत्र-तंत्र ज्ञान सम्भव नहीं। आप जैसे गुरुओं का आशीर्वाद रहेगा तो मैं बहुत कुछ कर सकता हूँ।

आपका
आनन्द कुमार पौराणिक, इलाहाबाद (उ.प्र.)

*****

श्रीमान परमपूज्य अवतार सिंह जी,
सादर प्रणाम, आपकी लिखी पुस्तक तांत्रिक जड़ी-बूटी दर्शन पढ़कर मैं बहुत खुश हूँ। यह ज्ञान सर्व सामान्य तक पहुँचाने का आपका प्रयास बहुत अच्छा लगा।

आपका
संजय नायडू, पूना (महाराष्ट्र)

*****

परम सम्मानीय गुरुदेव,
सादर शतशात नमन, मैंने आपके द्वारा रचित तांत्रिक जड़ी-बूटी दर्शन को पढ़ा वास्तव में यह पुस्तक बहुत अच्छी सिद्ध होगी। मैंने बहुत-सी पुस्तकें पढ़ी हैं। परन्तु यह पुस्तक अपने आप में सम्पूर्णता लिये हुए है। आपके द्वारा रचित पुस्तक वास्तव में बहुत अच्छी है एवं उसमें जो मार्गदर्शन दिया है। इस तरह मैंने कहीं भी नहीं पढ़ा। इससे उत्साह बढ़ा है। साधक इससे बहुत कुछ कर सकता है।

आपका सेवक ....
नरेन्द्र भार्गव, गुना (म.प्र.)

*****

पूज्यनीय महोदय,
सादर प्रणाम,
पत्र लिखने का कारण कि आपके द्वारा लिखित तांत्रिक जड़ी-बूटी दर्शन यह पुस्तक पढ़ने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपके द्वारा लिखित यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है।

भवदीप
के.के. राव, रीवा (म.प्र.)

*****

श्री अटवाल जी सादर प्रणाम,

आपके द्वारा लिखित तांत्रित जड़ी बूटी दर्शन पुस्तक देखी, आपके द्वारा किया गया यह प्रयास अच्छा है किन्तु आज तक किसी भी लेखक ने इस तरह की सम्पूर्ण जानकारी शायद ही दी हो। आपने गागर में सागर भर दिया है।

आपका

जगदीश मोहन, पन्ना (म.प्र.)

*****

आदरणीय अटवाल जी,

समाचार इस प्रकार है कि हमने आपके द्वारा लिखे ग्रन्थों के बारे में बहुत सुना। जिस कारण हम आपके ग्रन्थ अपने यहाँ पर स्थानीय पुस्तकालय के संघ के लिए मंगवाना चाहते हैं जिससे हम आपके अद्‌भुत प्रयोगों के ग्रन्थों से लाभ उठा सकें।

शीघ्र उत्तर दें।

आपका अपना

पं. मंगलचन्द जोशी, बीकानेर

*****

श्री योगीराज अटवाल जी को,

मौनी बाबा का प्रणाम,

आपकी तंत्र महायोग में लिखी तीन साधनाएँ करना चाहता हूँ। आपकी शरण में आया हूँ। मुझ पर कृपा करने का कष्ट करें।

क्षमा प्रार्थी

मौनी बाबा (शिरडी के साई बाबा का सेवक) वाराणसी

*****

आदरणीय अटवाल साहिब,

मैं एक कॉलेज का अंग्रेजी का प्रोफेसर हूँ। मैंने बहुत-सी पुस्तकें बढ़ी। परन्तु आपकी पुस्तक तंत्र महायोग एक अनुभव तथा कल्याण पर आधारित दुर्लभ ग्रन्थ है। इस पुस्तक में लिखित मंत्र तथा उपाय शेष सभी पुस्तकों से भिन्न तफा मौलिक है। आपको दीपावली की शुभ कामनाएँ। भगवान आपकी शक्तियों में वृद्धि करें ताकि आप जनता की भलाई हेतु और अधिक कार्य कर सकें।

आपका

प्रोफेसर डॉ. राम अवतार शर्मा, भिवानी (हरियाणा)

*****

परम पूज्य श्री यो. अवतार सिंह जी,

सादर प्रणाम, आपकी पुस्तकें पढ़ीं, मेरी परम पिता परमेश्वर से यही कामना है। कुछ अनमोल शब्द आपको सप्रेम भेंट कर रहा हूँ। चन्द शब्द याद आ रहे हैं, लिख रहा हूँ

कर तू हर आलम से याराना।
मिलेगा तुझ को तरब का तराना
हर मुश्किल जिन्दगी की हमनर्शी ए पाठक
अदावत-ए-मोहब्बत बनती जिन्दगी का फसाना।
इलतजा तुझ से यही तेरी वफा का ऐतबार रहे।
तेरी तालिमे तासीर का हर शख्स तरफदार रहे।
रहे तू रहनुमा बनकर हर दिल में ए पाठक।
खिलते हुए चमन को उजड़ने के न आसार रहें।

मुझे योग्य सेवा का अवसर प्रदान करें। मैं अपने को पाठक ही मानता हूँ। आपको अपनी नई पुस्तकों का जनहित में प्रकाश करने का निवेदन के साथ हार्दिक शुभकामना देता हूँ।

आपका
महेन्द्र कुमार पाठक कवि (उदयपुर)

*****

परम पूज्य योगीराज,
दंडवत प्रणाम,

पूज्य श्री आज संसार में आप रहस्यवाद तंत्र-मंत्र-यंत्र ज्योतिष योगादि शास्त्रों में पूर्णज्ञानी सूर्यसम कीर्तिमान प्रस्थापित कर चुके हैं। मैं श्रद्धा प्रेम और सादर दंडवत प्रणाम कर आप श्री को यह पत्र लिख रहा हूँ। आपके चरणों में रहना न मिला तो मैं डूब जाऊँगा। मुझे न ठुकराना, नवजीवन देना, बचाना आपके सामर्थ्य में है। कृपा चाहता हूँ।

आपका ....
वी.जे. ब्रह्मभट्ट (बी.ए., एल.एल.बी.)
एडवोकेट हाई कोर्ट, बाम्बे।

*****

आपको एवं परिवार के सभी सदस्यों को होली की शुभकामनाएँ। आपको अखिल भारतीय स्तर की संस्था की सदस्यता हेतु आमंत्रित करते है।

भवनदीप-
राम प्रकाशा रम्म्-उप चैयरमेन मानवता क्लब कानपुर

*****

आदरणीय अटवाल साहब,

सादर अभिवादन

आप द्वारा तंत्र-मंत्र से सम्बन्धित पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला। आपकी योगयता के सम्बन्ध में काफी जानकारी उपलब्ध हुई। वस्तुत आप निश्चित धन्यवाद के पात्र हैं। यही सोचकर मैं आपको व्यक्तिगत पत्र लिखने का इच्छुक हुआ।

हम चाहते हैं कि आप जैसे विद्वान के बारे में समाचार माध्यमों के जरिये आपके सम्बन्ध में जनता को अवगत करवाया जा सके ताकि आप जैसे योग्य व्यक्ति के अनुभव का लाभ समुचित ढंग से आम जनता को मिल सके। इसके साथ आपसे अनुरोध है कि लौटती डाक से आपका एक पासपोर्ट साईज का फोटो एवं आपने जीवन परिचय सहित आपके सन्देश के साथ आप द्वारा लिखित पुस्तकों की सूची एवं दो-चार ऐसे प्रमाणिक प्रयोगों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे जनता के समक्ष प्रमाणित किया जा सके, आपके परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ धन्यवाद सहित।

भवदीप-

ओम प्रकाश मंडोरा

प्रधान सम्पादक सुमन (पाली) राज.